@haryanavatika www.haryanavatika.in @haryanavatika @haryanavatika

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

हरियाणा वाटिका

लोहारू से प्रकाशित सोच बिल्कुल निष्पक्ष

RNI No-HARHIN/2019/79021 वर्ष : 06, अंक: 114 पृष्ठ: 08, मूल्य: रू. 1.00 शनिवार, 22 फरवरी 2025 haryanavatika@gmail.com +91-9255149495

प्रेरणास्त्रोत: स्व. डॉ. एलसी वालिया

एसओयूएल भारत के सामाजिक जीवन की आत्मा होगी: पीएम

स्कूल ऑफ अल्टीमेट लीडरशिप विकसित भारत की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण कदम: प्रधानमंत्री

नई दिल्ली/हरियाणा वाटिका/एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को गुजरात का उदाहरण देते हुए कहा कि किसी देश की प्रगति में केवल प्राकृतिक संसाधन ही नहीं बल्कि मानव संसाधन भी अहम भूमिका निभाते हैं। गुजरात के पास कोई प्राकृतिक संसाधन नहीं है, फिर भी आज नेतृत्व की शक्ति को देखें- गुजरात में सबकुछ है। प्रधानमंत्री मोदी ने आज नई दिल्ली के भारत मंडपम में स्कूल ऑफ अल्टीमेट लीडरशिप (एसओयूएल) लीडरशिप कॉन्क्लेव 2025 का उद्घाटन किया। इस अवसर पर सभी बड़े नेताओं और उभरते युवा नेताओं का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्र निर्माण के लिए प्रत्येक क्षेत्र में अच्छे नेताओं को तैयार करना आवश्यक है और यह समय की मांग है। उन्होंने कहा कि स्कूल ऑफ अल्टीमेट लीडरशिप विकसित भारत की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण कार्यक्रम है।

उन्होंने कहा कि एसओयूएल सिर्फ संगठन का नाम नहीं है, बल्कि एसओयूएल भारत के सामाजिक जीवन की आत्मा होगी। दूसरे अर्थों में, एसओयूएल आध्यात्मिक अनुभव के सार को भी खूबसूरती से दशार्ता है। एसओयूएल के सभी हितधारकों को शुभकामनाएं देते हुए मोदी ने घोषणा की कि निकट भविष्य में गुजरात की गिफ्ट सिटी के निकट एसओयूएल का एक नया, विशाल परिसर बनकर तैयार हो जाएगा। प्रधानमंत्री ने किसी भी राष्ट्र की प्रगति में मानव और प्राकृतिक संसाधन की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला। स्वामी विवेकानंद का उदाहरण देते हुए कहा कि दूरदर्शी नेता हमेशा भारत को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करना चाहते थे।

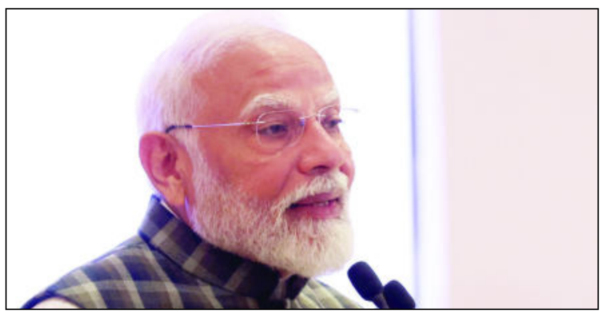

पीएम ने मराठी साहित्य सम्मेलन का उद्घाटन किया

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तालकटोरा स्टेडियम में शुक्रवार को 98वें अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि आज दिल्ली की धरती पर मराठी भाषा का ये प्रतिष्ठित आयोजन हो रहा है। अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन सिर्फ एक भाषा या एक राज्य तक सीमित नहीं है। मराठी साहित्य सम्मेलन में आजादी की लड़ाई का सार है। 1878 में अपने पहले आयोजन से लेकर अब तक अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन देश की 147 साल की यात्रा का साक्षी रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि आज शरद पवार के निमंत्रण पर मुझे इस गौरवशाली परंपरा में शामिल होने का अवसर मिल रहा है। मराठी भाषा अमृत से भी मीठी है। इसलिए आप मराठी भाषा और मराठी संस्कृति के प्रति मेरे प्रेम से भली-भांति परिचित हैं। मैं आप विद्वानों जितना मराठी में पारंगत नहीं हूं, लेकिन मैंने मराठी बोलने, मराठी के नए शब्द सीखने का निरंतर प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि कुछ महीने पहले, मराठी भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया।

एक्शन मोड में सीएम रेखा गुप्ता

नई दिल्ली/हरियाणा वाटिका/एजेंसी

27 साल बाद दिल्ली में भाजपा की सरकार बनी है। गुरुवार को रामलीला मैदान में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में शालीमार बाग विधानसभा की विधायक रेखा गुप्ता ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। इनके साथ ही दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने पार्टी नेता प्रवेश वर्मा और आशीष सूद को भी कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ दिलवाया। इनके अलावा भाजपा नेता मनजिंदर सिंह सिरसा ने भी दिल्ली सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ ली। सिरसा ने पंजाबी में शपथ लिया। भाजपा विधायक रविन्द्र इंद्राज सिंह, कपिल मिश्रा और पंकज कुमार सिंह ने भी दिल्ली सरकार में कैबिनेट मंत्री के तौर पर शपथ ली। सीएम बनते ही रेखा गुप्ता एक्शन मोड में आ गई हैं। भाजपा ने दिल्ली में खराब सड़कों से लेकर स्वास्थ्य, यमुना की सफाई तक अपने वादों पर काम करना शुरू कर दिया है। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शुक्रवार को समर्थकों से मुलाकात के दौरान आभार व्यक्त किया और कहा कि दिल्ली सरकार ने पहली कैबिनेट बैठक में ही आयुष्मान भारत योजना को मंजूरी दे दी गई, जिसे आम आदमी पार्टी सरकार ने रोक दिया था। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने लोगों से बातचीत भी की। आज सुबह शालीमार बाग स्थित उनके आवास के बाहर बड़ी संख्या में लोग उन्हें बधाई देने के लिए एकत्र हुए। लोग उन्हें बधाई देने के लिए माला और फूलों के गुलदस्ते लेकर आए। मीडिया से बात करते हुए दिल्ली के नए सीएम ने कहा, "कल कैबिनेट की बैठक में हमने आयुष्मान भारत योजना को मंजूरी दी, जिसे आप ने रोक दिया था। यह योजना जल्द ही सार्वजनिक होगी।

कांग्रेस-राहुल का भारत विरोधी रुख बेहद चिंताजनक: भाजपा

नई दिल्ली/हरियाणा वाटिका/एजेंसी

यूएसएड मामले पर भाजपा ने लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी पर पलटवार करते हुए उनपर देश के खिलाफ काम करने का आरोप लगाया। भाजपा ने कहा कि राहुल गांधी संविधान की शपथ लेकर भी ऐसा काम कर रहे हैं। कांग्रेस और राहुल का भारत विरोधी रुख बेहद चिंताजनक है। भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने शुक्रवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस में भारतीय चुनावों को प्रभावित करने को लेकर अमेरिकी सहायता के बारे में डोनाल्ड ट्रम्प के दावों का हवाला देते हुए कांग्रेस को कटघरे में खड़ा किया। भाटिया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने मजबूत निर्णायक शासन देखा है। राहुल गांधी इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। वे भारत, इसके संविधान और इसके नागरिकों को धोखा दे रहे हैं। भाटिया ने कहा कि राहुल और कांग्रेस का भारत विरोधी रुख बेहद चिंताजनक हो गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने एक बयान दिया था जिसमें बताया गया था कि कैसे यूएसएड फंडिंग का इस्तेमाल भारत की चुनावी प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने के लिए किया जा रहा था। लोकसभा चुनाव से पहले प्रधानमंत्री मोदी ने कई देशभक्त पत्रकारों और संगठनों से चिंता जताई थी कि विदेशी ताकतें भारत के चुनावों में हस्तक्षेप करना चाह रही हैं।

विदेश मंत्रालय ने अमेरिका से हो रही फंडिंग की रिपोर्टों पर जताई चिंता

नई दिल्ली/हरियाणा वाटिका/एजेंसी

विदेश मंत्रालय ने अमेरिकी सरकार की ओर से भारतीय संस्थाओं और व्यक्तियों को धन मुहैया कराए जाने संबंधी रिपोर्टों पर गहरी चिंता व्यक्त की है। इस मामले में संबंधित विभाग और एजेंसियां गौर कर रही हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को कहा कि भारतीय संस्थाओं को धन मुहैया कराए जाने संबंधी रिपोर्टों से भारत के आंतरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप की चिंता उपजती है। उन्होंने कहा कि संबंधित विभाग और एजेंसियां मामले पर गौर कर रही हैं। इस संबंध में अभी कोई सार्वजनिक टिप्पणी करना जल्दबाजी होगी। आने वाले दिनों में इस संबंध में और जानकारी उपलब्ध करायी जाएगी। उल्लेखनीय है कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने एलन मस्क और दक्षता विभाग की विदेशों में की गई फंडिंग कार्रवाई की प्रशंसा की थी। उन्होंने कहा था कि भारत के मतदान में लोगों की भागीदारी बढ़ाने से अमेरिका का क्या लेना-देना है। उन्होंने संभावना व्यक्त की थी कि तत्कालीन प्रशासन भारत में किसी और (नरेन्द्र मोदी के अलावा) का चुनाव चाहता था। ट्रम्प के इस बयान के बाद से ही भाजपा और कांग्रेस के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया है। भाजपा का आरोप है कि वर्ष 2024 के आम चुनाव में विपक्ष और तात्कालीन अमेरिकी सरकार और जॉर्ज सोरोस के बीच सांठगांठ थी। दूसरी ओर कांग्रेस ने ट्रम्प के बयान को वाहियात बताते हुए सरकार से इस मुद्दे पर श्वेत पत्र जारी करने की मांग की है। इस बीच कुछ मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया है कि यूएसएड की ओर से भारत के लिए कोई धन आवंटित नहीं किया गया था।

अमृत जल से स्नान कर पुण्य के भागीदार बने कैदी

महाकुम्भ नगर/हरियाणा वाटिका/एजेंसी

प्रयागराज महाकुम्भ में पुण्य की डुबकी लगाने के लिए संगम आने वालों का आंकड़ा 59 करोड़ पहुंच गया है। इस अमृत काल में पुण्य की डुबकी से कोई छूट न जाए, सभी की आस्था और धार्मिक भावनाओं का सम्मान करते हुए योगी सरकार ने प्रदेश की जेल में बंद कैदियों के लिए भी बड़ी पहल की है। प्रयागराज की सेंट्रल नैनी जेल और जिला जेल के हजारों कैदियों को भी इसका अवसर मिला। यह पावन अवसर पाकर कैदी भाव विभोर हो गए। प्रयागराज महाकुम्भ में पुण्य की डुबकी लगाने को उमड़ रहे आस्था के जन सैलाब ने अब तक के सभी पिछले रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया है।

राज्य सरकार भी प्रदेश के किसानों की उत्थान व समृद्धि के लिए संकल्पित: सीएम धामी

देहरादून/उधमसिंह नगर/हरियाणा वाटिका/एजेंसी

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में उत्तराखंड को कुशल एवं समृद्ध बनाने के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य सरकार भी प्रदेश के किसानों की उत्थान व समृद्धि के लिए संकल्पित होकर निरंतर कार्य कर रही है।वे गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में आयोजित 17वें कृषि विज्ञान सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह गर्व का विषय है कि कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण और कृषकों का उत्थान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से इस प्रतिष्ठित सम्मेलन को देवभूमि उत्तराखंड की पुण्य धरा पर आयोजित किया जा रहा है। ऐसे सम्मेलनों से जहां एक ओर किसान भाइयों को कृषि से जुड़ी नवीनतम तकनीकों, शोध परिणामों व उत्तम बीज-खाद आदि के विषय में जानने का अवसर प्राप्त होता है, वहीं दूसरी ओर यहां पर लगे विभिन्न स्टॉलों के माध्यम से उन्हें औद्यानिकी, पशुपालन व जैविक खेती जैसी कृषि की अन्य विधाओं के बारे में भी विषय विशेषज्ञों से महत्वपूर्ण मार्गदर्शन भी मिलता है। उन्होंने कृषि जगत के इतने महत्वपूर्ण एवं प्रतिष्ठित सम्मेलन को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए गोविन्द बल्लभ पंत कृषि व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय को बधाई दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज मोदी सरकार की ओर से एक ओर देश में विभिन्न योजनाओं और अभियान के माध्यम से कृषि उपज बढ़ाने के साथ ही किसानों की आय में बढ़ाने की दिशा में निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। ऋण बिना ब्याज के देने के साथ ही फार्म मशीनरी बैंक योजना के अंतर्गत कृषि उपकरण खरीदने एवं एप्पल मिशन के अंतर्गत सेब के बागान लगाने पर 80 फीसदी की सब्सिडी दी जा रही है।

अरविंदर सिंह लवली सदन के प्रोटेम स्पीकर होंगे

नई दिल्ली/हरियाणा वाटिका/एजेंसी

भाजपा विधायक और पूर्व दिल्ली विधानसभा नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने शुक्रवार को कहा कि अरविंदर सिंह लवली सदन के प्रोटेम स्पीकर होंगे। गुप्ता ने हुई कैबिनेट बैठक के बारे में कहा कि मुख्यमंत्री के साथ बैठक में इस बात पर चर्चा हुई है कि आगे की कार्यवाही कैसे आगे बढ़ाई जाए।

कौन होता है प्रोटेम स्पीकर?

प्रोटेम स्पीकर सदन का एक अस्थायी अध्यक्ष होता है जो सीमित अवधि के लिए और पूर्णकालिक अध्यक्ष के चुनाव होने तक सदन की कार्यवाही का संचालन करता है। गुप्ता ने बता करते हुए आगे कहा कि नई सरकार नए उत्साह और नए जुनून के साथ सत्ता में आई है। बता दें कि वीजेंद्र गुप्ता को नई सरकार में विधानसभा स्पीकर चुना जाएगा।

24 फरवरी से विधानसभा सत्र

सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक 24 फरवरी को दिल्ली विधानसभा सत्र की शुरूआत होगी और 25 फरवरी को लंबित 14 सीएजी की रिपोर्ट को सदन के पटल पर रखा जाएगा। सदन का पहला सत्र तीन दिन तक (27 फरवरी) चलेगा। सत्र के पहले दिन नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिलाई जाएगी।

रेखा की टीम में कौन-कौन?

गुरुवार को रामलीला मैदान में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में शालीमार बाग विधानसभा की विधायक रेखा गुप्ता ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। इनके साथ ही दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने पार्टी नेता प्रवेश वर्मा और आशीष सूद को भी कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ दिलवाया। इनके अलावा भाजपा नेता मनजिंदर सिंह सिरसा ने भी दिल्ली सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ ली। सिरसा ने पंजाबी में शपथ लिया। भाजपा विधायक रविन्द्र इंद्राज सिंह, कपिल मिश्रा और पंकज कुमार सिंह ने भी दिल्ली सरकार में कैबिनेट मंत्री के तौर पर शपथ ली।दिल्ली सरकार ने गुरुवार रात आयुष्मान योजना को मंजूरी दे दी। साथ ही, विधानसभा सत्र की पहली बैठक में आप सरकार के कार्यकाल में आई सीएजी की 14 रिपोर्टों को सदन के पटल पर रखा जाएगा। कैबिनेट के फैसले की जानकारी देते हुए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बताया कि दिल्ली में केंद्र सरकार की लोकप्रिय और जनकल्याणकारी आयुष्मान योजना को लागू किया जाएगा।

जिसे आप सरकार ने रोक रखा था।

स्वच्छता के नए प्रतिमान स्थापित कर रही योगी सरकार

महाकुम्भ नगर/हरियाणा वाटिका/एजेंसी

महाकुम्भ में स्वच्छता के नए प्रतिमान स्थापित कर रही योगी सरकार के कुशल प्रबंधन में अब तक 14 हजार मीट्रिक टन सॉलिड वेस्ट को सकुशल निस्तारित किया जा चुका है। सीएम योगी के स्वच्छ महाकुम्भ के विजन को धरातल पर उतारते हुए मेला प्रशासन स्वच्छता प्रबंधन में कोई कसर नहीं छोड़ रहा। महाकुम्भ मेला क्षेत्र की स्वच्छता प्रमुख ने जानकारी देते हुए बताया कि जब से मेला प्रारंभ हुआ है तबसे लाखों की संख्या में श्रद्धालुगण निवासरत हैं, जबकि प्रतिदिन करोड़ों की संख्या में देश-दुनिया से आने वाले श्रद्धालु त्रिवेणी संगम में डुबकी लगा रहे हैं। ऐसे में, स्वच्छता के उच्च प्रतिमानों को स्थापित करते हुए प्रतिदिन के आधार पर इसे पूरा करने पर मेला प्रशासन का फोकस है। स्वच्छता प्रमुख (विशेष कार्याधिकारी) अकांक्षा राणा के अनुसार, यहां जितने भी लोग स्नान करते हैं उनकी धारणा है कि स्नान करने के बाद कपड़ों को घाट पर ही छोड़कर नए वस्त्र धारण करके जाते हैं। इसके साथ ही साथ यहां पर बड़े स्तर पर भंडारे चलते हैं।चलते हैं तो कचरा काफी रहता है। ऐसे में, इस कचरे का निस्तारण रोजमर्रा की एक बड़ी चुनौती है। उल्लेखनीय है कि इस कार्य को पूरा करने के लिए मेला जब प्रारंभ हुआ था।

उसी समय एक सैनिटेशन प्लान बनाया था उसमें सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट के परिदृश्य को देखते हुए कुछ बिंदू रखे थे। सबसे पहले 120 टिप्पर्स व कॉम्पैक्टर्स क्रय किए गए थे। 25 हजार डस्टबिन भी क्रय किए गए थे जिसके जरिए प्रत्येक 50 मीटर पर डस्टबिन को रखा गया। इसमें लाइनर बैग लगाए जाते हैं जिसे प्रत्येक दिन 3 बार बदला जाता है।

तेजी से बढ़ रही उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था- सीएम योगी

लखनऊ/हरियाणा वाटिका/एजेंसी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विधानसभा के बजट सत्र के चौथे दिन प्रश्नकाल के दौरान कहा कि उत्तर प्रदेश देश की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर है। उन्होंने कहा कि जब उनकी सरकार आई थी, तब राज्य की अर्थव्यवस्था 12 लाख करोड़ रुपये थी, जो इस वित्तीय वर्ष के अंत तक 27.5 लाख करोड़ रुपये हो जाएगी। सीएम योगी ने कहा कि प्रदेश सरकार 2029 तक उत्तर प्रदेश को 1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने विपक्ष पर तंज कसते हुए कहा कि जो लोग भारत को विकसित राष्ट्र नहीं मानते, वे उत्तर प्रदेश की आर्थिक वृद्धि पर भी सवाल उठाते हैं, भारत आज दुनिया की एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में आगे बढ़ रहा है। हो सकता है कि कुछ लोगों को अच्छा नहीं लग रहा हो क्योंकि जिनका अपना पर्सनल एजेंडा होता है, वह देश के विकास को अच्छा नहीं मानेंगे, लेकिन सच्चाई यह है कि देश की अर्थव्यवस्था आज विश्व में पांचवें स्थान पर पहुंच चुकी है और 2027 तक भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा। उन्होंने कहा कि मैं आश्वस्त करना चाहता हूं कि वर्ष 2029 में उत्तर प्रदेश वन ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी भी बनेगा और देश की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी बनेगा।

तेजी से बढ़ रही उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था- सीएम योगी

सीएम योगी ने कहा कि उनकी सरकार ने अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए 10 प्रमुख क्षेत्रों को चिह्नित किया है। इन क्षेत्रों में औद्योगिक विकास, कृषि, सामाजिक सुरक्षा, नगरीय विकास, राजस्व संग्रह, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन और सेवा क्षेत्र शामिल हैं। प्रत्येक सेक्टर की मासिक समीक्षा की जाती है और मुख्यमंत्री स्वयं तिमाही समीक्षा करते हैं।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने रावी और ब्यास जल न्यायाधिकरण के समक्ष उठाया हरियाणा के पानी का मुद्दा

रावी और ब्यास जल न्यायाधिकरण 30 जनवरी 1987 को दी गई अपनी रिपोर्ट पर अंतिम निर्णय जल्द ले, ताकि हरियाणा को मिले उसके हिस्से का पानी: मुख्यमंत्री

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने रावी और ब्यास जल न्यायाधिकरण के समक्ष हरियाणा के हितों की बात करते हुए कहा कि 30 जनवरी 1987 को रावी और ब्यास जल न्यायाधिकरण द्वारा दी गई अपनी रिपोर्ट पर अंतिम निर्णय जल्द से जल्द लिया जाए, ताकि हमारे न्यायोचित हिस्से का पानी हमें शीघ्र मिल सके।

मुख्यमंत्री ने यह बात रावी और ब्यास जल न्यायाधिकरण के दौरे के दौरान हुई बैठक में कही।

नायब सिंह सैनी ने रावी और ब्यास जल न्यायाधिकरण के अध्यक्ष न्यायमूर्ति विनीत सरन, सदस्य न्यायमूर्ति पी. नवीन राव और सुमन श्याम का हरियाणा की 2 करोड़ 80 लाख जनता की और से स्वागत किया। उन्होंने कहा कि 30 जनवरी 1987 को रावी और ब्यास जल न्यायाधिकरण ने अपनी रिपोर्ट दी थी। उस दिन से आज तक हरियाणा का हर बच्चा, नवयुवक और बुजुर्ग इस विषय में अंतिम निर्णय आने का बेसब्री से इंतजार कर रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्हें आशा है कि न्यायाधिकरण इस सम्बंध में अवश्य ही विवेकपूर्ण निर्णय लेगा, जिसकी पूरे भारतवर्ष में प्रशंसा होगी। उन्होंने कहा कि भावी पीढ़ी के लिए जल संरक्षण न केवल भारत की चिंता है, बल्कि वैश्विक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए जल संरक्षण की योजनाएं बनानी होंगी। पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने नदियों को जोड़ने की योजनाएं बनाई थी, जिसे आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी आगे बढ़ा रहे हैं। हरियाणा सरकार ने भी नदियों को जोड़ने के लिए रूपरेखा बनाने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं।

नायब सिंह सैनी ने कहा कि हरियाणा के लिए एसवाईएल भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है और माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा हरियाणा के हक में फैसला भी दिया गया है, लेकिन फिर भी अभी तक पंजाब की ओर से हरियाणा को उसके हिस्से का पानी नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि हम लगातार कई मंचों से कह चुके हैं कि हरियाणा को उसके हिस्से का पानी मिलना चाहिए, लेकिन पंजाब सरकार द्वारा इस दिशा में कोई कार्य नहीं किया जा रहा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि जल्द ही एसवाईएल के विषय का समाधान होगा। इस अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री के मुख्य प्रधान सचिव राजेश खुल्लर, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अनुराग अग्रवाल, हरियाणा व पंजाब के महाधिवक्ता भी मौजूद रहे।

कुलदीप गुप्ता पुन: बने माता रुकमणि राय आर्य स्कूल के प्रधान

हरियाणा वाटिका/एकजोत
शाहाबाद मारकंडा, 21 फरवरी। माता रुकमणि राय आर्य सीनियर सेकेंडरी स्कूल शाहाबाद की प्रबंधन समिति के चुनाव हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण बैठक स्कूल परिसर में आयोजित की गई। वर्ष 2025 से वर्ष 2028 तक 3 वर्षों के लिए प्रबंधन समिति की कार्यकारिणी के गठन हेतु आर्य कन्या महाविद्यालय की प्रिंसिपल डा. आरती त्रेहन को चुनाव का पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया। डा. आरती त्रेहन की देखरेख में संपन्न हुए चुनाव में कुलदीप गुप्ता को एक बार पुनः सर्व सम्मति से माता रुकमणि राय आर्य सीनियर सेकेंडरी स्कूल की प्रबंधन समिति का प्रधान चुन लिया गया। नई कार्यकारिणी के गठन के समय बैठक में उपस्थित स्कूल की प्रिंसिपल डा. दिव्या कौशिक एवं हेड क्लर्क राजीव मित्तल ने बताया कि नई कार्यकारिणी में लाला राम लाल बंसल भी एक बार पुनः प्रबंधन समिति के मैनेजर का कार्यभार देखेंगे। उन्होंने कहा कि जहां एक ओर रमन कांत शर्मा को स्कूल की प्रबंधन समिति का उप-प्रधान बनाया गया है, वहीं विष्णु भगवान गुप्ता भी पहले की तरह कोषाध्यक्ष के रूप में स्कूल को अपनी सेवाएं प्रदान करेंगे। इस अवसर पर प्रबंधन समिति के अन्य सदस्यों में शुमार अंशुल बंसल, मनोज बंसल, मोहिंद्र प्रकाश कंसल एवं प्रवीण बंसल भी मौजूद थे।

वोको ने पेश किया प्रीमियम वर्कस्पेस

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
गुरुग्राम, 21 फरवरी। बुटीक वर्कस्पेस डेवलपमेंट कंपनी, वोको (वर्ल्ड ऑफ कूल ऑफिसेस) ने प्रीमियम कमर्शियल स्पेस लॉन्च कर ऑफिस लीजिंग में नए मानक स्थापित किए हैं। इस लॉन्च के साथ कंपनी ने रियल एस्टेट सेक्टर में कदम रखा है, जहाँ यह व्यवसायों के लिए एक प्रतिष्ठित और ऑफिसेस में उच्च स्तर का माहौल उपलब्ध कराने की दिशा में काम करेगा।
'स्मार्ट, स्टाइलिश और सस्टेनेबल' डिजाइन के अपने मुख्य दृष्टिकोण के तहत वोको अत्याधुनिक तकनीक, बेहतरीन आर्किटेक्चर और पर्यावरण अनुकूलता का समावेश कर वर्कस्पेस को नया रूप देता है। इसका नवीनतम प्रोजेक्ट 'वोको वन' इसी दृष्टिकोण पर आधारित है। यह एक आइकॉनिक ग्रेड ए कमर्शियल बिल्डिंग है, जो विश्वस्तरीय सुविधाओं को सस्टेनेबल सॉल्यूशंस के साथ बेहतरीन रूप से जोड़ती है। शानदार उत्पादकता और कार्य के बेहतर अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य लिए डिजाइन की गई यह बिल्डिंग आराम, सुविधा और कुशलता पर विशेष जोर देती है, जिससे ऑफिस में आधुनिक माहौल के नए मानक स्थापित होते हैं। प्रधान एनएच-8 चौराहे पर स्थित, वोको वन गुरुग्राम के प्रमुख होटलों, ट्रांजिट हब और कमर्शियल सेंटर्स से बेहतरीन कनेक्टिविटी रखता है, जिससे यह व्यवसायों के लिए एक रणनीतिक स्थान बन जाता है। इस अवसर पर वोको के फाउंडर, अंगद सिंह पसरीचा ने कहा, "नई बिल्डिंग का उद्घाटन वोको के लिए एक नई शुरूआत है। लक्जरी वर्कस्पेस को अगले स्तर तक ले जाने के उद्देश्य से, हम ऐसे स्थान विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जहाँ भव्यता, नवीनता, कार्यक्षमता और सस्टेनेबिलिटी सब कुछ एक ही छत के नीचे उपलब्ध हो। हमारा उद्देश्य है कि हम वास्तुकला में एक विशिष्ट पहचान बनाएँ और यह नया प्रोजेक्ट उसी प्रतिबद्धता का प्रतीक है।"

मणिपाल हॉस्पिटल, गुरुग्राम द्वारा झज्झर में हृदय व न्यूरो मरीजों के लिए विशेष ओपीडी का आयोजन

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
झज्जर, 21 फरवरी। मणिपाल हॉस्पिटल, गुरुग्राम द्वारा झज्झर के निवासियों को सर्वश्रेष्ठ स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए 28 फरवरी, 2025 को विशेष कार्डियो एवं न्यूरो ओपीडी का आयोजन किया जा रहा है। इस ओपीडी में डॉ. दीक्षित गर्ग और डॉ. पुनीत कांत अरोड़ा मरीजों को परामर्श देंगे। यह ओपीडी मेडिकेयर सुपर स्पेशियल्टी हॉस्पिटल एंड ट्रॉमा सेंटर, झज्झर, हरियाणा में सुबह 10:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे के बीच लगाया जाएगा। इस अभियान द्वारा हॉस्पिटल का उद्देश्य स्थानीय लोगों को हृदय और न्यूरो बीमारियों के निदान, इलाज और नियंत्रण के लिए विशेषज्ञ सेवाएं प्रदान करना है।डॉ. दीक्षित गर्ग, कंसल्टैंट एवं इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट, मणिपाल हॉस्पिटल, गुरुग्राम ने कहा, भारत में हृदयाघात के मामले चिंताजनक रूप से बढ़ रहे हैं। युवाओं में बढ़ते इन मामलों ने जनस्वास्थ्य को एक बड़ी चुनौती पेश कर दी है। इसलिए हृदय को स्वस्थ रखने और किसी भी गंभीर बीमारी से बचने के लिए नियमित रूप से स्वास्थ्य जाँच कराते रहना बहुत आवश्यक है। अगर उच्च कोलेस्ट्रॉल, हृदय रोग, और हाईपरटेंशन का निदान समय पर हो जाता है, तो स्थिति गंभीर होने से पहले ही उन्हें नियंत्रित किया जा सकता है। अगर बीमारी बढ़ जाए, तो कोरोनरी एंजियोप्लास्टी या बायपास सर्जरी जैसे इलाजों की जरूरत पड़ सकती है। हालाँकि बीमारी को समय पर नियंत्रित करके और जीवनशैली में परिवर्तन लाकर लंबे समय तक स्वस्थ रहा जा सकता है।डॉ. पुनीत कांत अरोड़ा, कंसल्टैंट - न्यूरोसर्जन, मणिपाल हॉस्पिटल, गुरुग्राम ने कहा, मरीजों में ब्रेन ट्यूमर गंभीर रूप लेता जा रहा है, जो चिंताजनक है। यह अनेक कारणों से हो सकता है, जिनमें क्रोनिक तनाव, खराब जीवनशैली, स्क्रीन पर ज्यादा समय बिताना, और डॉक्टर को दिखाने में विलंब करना शामिल है। इसलिए ऐसे जटिल मामले बढ़ते जा रहे हैं, जिनके लिए आधुनिक इलाज और सर्जरी की जरूरत पड़ती है। ट्यूमर का निदान समय पर हो जाने से एंडोस्कोपिक ब्रेन सर्जरी जैसी आधुनिक तकनीकों द्वारा न केवल सर्जरी में परिणामों में सुधार किया जा सकता है, बल्कि मरीज को जल्दी स्वस्थ बनाकर उन्हें एक बेहतर जीवन प्रदान किया जा सकता है।झज्झर में नियमित ओपीडी के साथ मणिपाल हॉस्पिटल गुरुग्राम का उद्देश्य लोगों को उच्च गुणवत्ता की मेडिकल सेवाएं उनके नजदीक ही प्रदान करना है ताकि उन्हें इलाज के लिए दूर न जाना पड़े। मणिपाल हॉस्पिटल में हैल्थकेयर के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेंस है, जहाँ अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और विभिन्न विभागों के विशेषज्ञों द्वारा विस्तृत केयर प्रदान की जाती है।

बंद पड़े मकान से एक लाख नकदी व लाखों के आभूषण चोरी

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 21 फरवरी। शहर के चोपड़ा वाली गली में एक बंद पड़े मकान से चोर 1 लाख रुपए की नकदी सहित करीब 20 लाख रुपए के आभूषण चोरी कर ले गए।
पुलिस को दी शिकायत में बालकृष्ण ने बताया कि बीती 16 फरवरी को वह परिवार सहित फतेहाबाद शादी समारोह में गया हुआ था। इसी का फायदा उठाकर चोर रात को घर में घुसे और एक सैट डायमंड, ब्रैसलेट, 2 अंगूठी डायमंड, 1 चेन सोने की, 3 कड़े सोने के, एक अंगूठी सोना लावर, 6 अंगूठी सोने की, तीन सोने की चेन, 2 अंगूठी डायमंड जैंटस, चांदी की पायल 16 तोले, 40 चांदी के सिक्के, 2 जगह पर रखी 50-50 हजार रुपए की नकदी चोरी कर ले गए। सुबह जब वे घर आए तो उन्हें इस घटना का पता चला। अंदर जाकर देखा तो सामान बिखरा पड़ा था। सामान संभाला तो उपरोक्त सामान गायब था। उन्होंने अपने स्तर पर आस पड़ोस में सामान की काफी तलाश की लेकिन सामान का कोई सुराग नहीं लगा। इसके बाद उन्होंने पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्जकर आगामी कार्रवाई शुरू की है।

शहर के विकास कार्यों के लिए नगरपालिका के पास पैसे की कोई कमी नहीं : गुलशन कवात्रा

पार्षदों ने अलग-अलग वार्ड के विकास कार्यों हेतु लगवाए टेंडर

हरियाणा वाटिका/एकजोत
शाहाबाद मारकंडा, 21 फरवरी। पिछले कई वर्षों से वार्ड-8 के कम्युनिटी सेंटर के जीर्णोद्धार का लटके कार्य को गत दिनों नगरपालिका प्रधान गुलशन कवातरा द्वारा शुरू करवाया गया। ऐसे में न केवल 2 करोड़ 42 लाख की लागत से कम्युनिटी सेंटर के जीर्णोद्धार काम प्रगति पर है अपितु शहर में करोड़ों रुपए की लागत से होने वाले अन्य विकास कार्यो ने भी रफ्तार पकड़ी है। नगरपालिका कार्यालय में जानकारी देते हुए प्रधान गुलशन कवातरा ने बताया कि वार्ड-8 के कम्युनिटी सेंटर के जीर्णोद्धार के काम के साथ वार्ड-9 में शुभम पैलेस के पीछे की 32 लाख रुपए की लागत से बनने वाली सड़क का काम भी शुरू करवा दिया गया है। उन्होंने बताया कि इधर जहां एक ओर 75 लाख रुपए की लागत से न्यू मॉडल टाउन की सड़क का निर्माण कार्य चल रहा है, वहीं 1.5 करोड़ की लागत से रणजीत नगर की सड़क का कार्य भी जोरों-शोरों से किया जा रहा है। प्रधान ने बताया कि शहर के सभी सार्वजनिक एवं सामुदायिक शौचायलयों की मुरम्मत के 57 लाख 26 हजार रुपए के टेंडर लगा दिए गए हैं। उधर स्वच्छता एवं देश भक्ति के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने हेतु भी 14 लाख 70 हजार रुपए की पेंटिंग कार्य के वर्क ऑर्डर जारी हो चुके हैं। नगरपालिका कार्यालय में प्रधान गुलशन कवातरा के साथ उपस्थित सचिव सुरेंद्र मलिक ने बताया कि हुडा पार्ट-2 में मदन लाल ढींगरा पार्क एवं अमर पार्क के जीर्णोद्धार के अनुमानित 48 लाख 25 हजार रुपए के टेंडर भी लगा दिए गए हैं और 20 लाख 18 हजार की लागत से जगदीश कालड़ा पार्क के जीर्णोद्धार का टेंडर भी हो चुका है। इसके अलावा आमजन की सुविधा को देखते हुए 34 लाख की लागत से नगर में बैंचों की व्यवस्था के वर्क आर्डर जारी कर दिए गए हैं तथा 11 लाख की लागत से 2 मोबाइल शौचालय भी नगरपालिका में उपलब्ध करवाए जा चुके हैं। प्रधान गुलशन कवातरा ने कहा कि शहर के विकास कार्यों के लिए नगरपालिका के पास पैसे की कोई कमी नहीं है। इस अवसर पर पार्षद राजेश उप्पल, जगतार सिंह तारा, भरत साहनी, जे.ई. राकेश रंगा एवं मोहन सिंह मोनू भी उपस्थित थे।

कृषि दर्शन: ईस्टमैन ऑटो एंड पावर लिमिटेड सौर ऊर्जा समाधान देकर भारतीय कृषि को सशक्त बना रहा है

खेती के उज्ज्वल भविष्य के लिए नई टेक्नोलॉजी का प्रदर्शन

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
हिसार, 21 फरवरी। ईस्टमैन ऑटो एंड पावर लिमिटेड, जो बिजली समाधान देने वाली जानीमानी कंपनी है, उसने कृषि दर्शन वर्ष 2025 के 13 वें संस्करण में भारतीय कृषि क्षेत्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दिखाया। यह कार्यक्रम हरियाणा के हिसार में राष्ट्रीय अनुसंधान एवं कृषि मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थान (एनआरएफएमटीटीआई) में आयोजित किया गया। यह ईस्टमैन के लिए किसानों, कृषि विशेषज्ञों और इस उद्योग के लोगों से जुड़ने का एक बड़ा मंच बना, जहां कंपनी ने दिखाया कि उसके समाधान कैसे उत्पादकता बढ़ा सकते है और कार्यक्षमता बेहतर कर सकते हैं, साथ ही ग्रामीण समुदायों में ऊर्जा स्वतंत्रता को बरकरार रख सकते हैं।
ईस्टमैन ऑटो एंड पावर ने कृषि क्षेत्र की खास जरूरतों को ध्यान में रखते हुए सौर ऊर्जा समाधान का प्रदर्शन किया। कंपनी ने भरोसेमंद, किफायती और पर्यावरण के हितेषी ऊर्जा विकल्प देने की अपनी प्रतिबद्धता को दिखाया, जो उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करती है। ईस्टमैन ने दिखाया कि उनकी टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर कैसे खेती के तरीकों को बेहतर किया जा सकता है और संचालन लागत को भी कम किया जा सकता है। इसकी सबसे खास बात यह है कि ये समाधान एक ही जगह पर सोलर पैनल, बैटरी, इनवर्टर और सोलर चार्ज कंट्रोलर जैसी सभी जरूरतों को पूरा करते हैं।
कृषि दर्शन 2025 में ईस्टमैन ऑटो एंड पावर की मौजूदगी ने किसानों को स्वच्छ और भरोसेमंद ऊर्जा देने की उनकी प्रतिबद्धता को दिखाया। कंपनी ने उन्नत सौर समाधानों की एक श्रृंखला पेश की, जिसमें 3 किलोवाट से 110 किलोवाट तक के हाई-एफिशिएंसी ग्रिड टाई इनवर्टर, जो सिंगल फेज और थ्री फेज के थे, वह शामिल थे। ये इनवर्टर सौर ऊर्जा को उपयोगी बिजली में बदलने के लिए बनाए गए हैं, जिससे खेती के कामों में ग्रिड पर निर्भरता तो कम होती है साथ ही ऊर्जा लागत भी घटती है। इतना ही नहीं इसमें 1.4 केवीए से 10 केवीए तक के भरोसेमंद बैकअप पावर समाधान भी प्रदर्शित किए गए, जो बिजली कटौती या ऑफ-ग्रिड क्षेत्रों में कृषि कार्यों के लिए बिना रुकावट बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं। इसके अलावा, नए बाइफेशियल सोलर पैनल (नॉन डीसीआर और डीसीआर) भी आकर्षण का केंद्र रहे, जो दोनों तरफ से सूर्य की रोशनी लेकर ऊर्जा उत्पादन और दक्षता को बढ़ाते हैं।
सिस्टम को पूरा करने के लिए, ईस्टमैन ने अपने उच्च-प्रदर्शन ऊर्जा भंडारण समाधान भी प्रदर्शित किए, जिनमें 150एएच से 260एएच तक की सोलर टीटी बैटरियां शामिल थी। ये बैटरियां सौर ऊर्जा से चलने वाली कृषि प्रणालियों के लिए बिना रुकावट और भरोसेमंद बिजली आपूर्ति का वादा करती हैं। ये समाधान सिंचाई सिस्टम, कोल्ड स्टोरेज, कृषि मशीनरी और अन्य जरूरी कृषि उपकरणों को बिजली देने के लिए एक दम सही विकल्प हैं। इससे किसान अपनी उत्पादकता बढ़ा सकते हैं, संचालन लागत कम कर सकते हैं और साथ ही पर्यावरण पर पढ़ने वाले प्रभाव को घटा सकते हैं।

मातृभाषा दिवस कार्यक्रम का आयोजन

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 21 फरवरी। राजकीय महिला महविद्यालय, सिरसा में प्राचार्य रामकुमार जांगड़ा की अध्यक्षता तथा डॉ. प्रीत कौर के संयोजन में पंजाबी विषय परिषद की ओर से विश्व मातृभाषा दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।
महाविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी डॉ. विक्रमजीत सिंह ने बताया कि इस कार्यक्रम में महाविद्यालय की पंजाबी विषय की छात्राओं ने मातृ भाषा दिवस के अवसर पर विचार प्रस्तुत किए। डॉ. प्रीत कौर ने कहा कि मातृभाषा व्यक्ति की पहली भाषा होती है जो उसे जन्म से ही परिवार और समाज से सीखने को मिलती है। यह व्यक्ति की पहचान, संस्कृति, और भावनाओं का अभिन्न हिस्सा होती है। मातृभाषा का महत्व अनेक दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। जैसे मातृभाषा सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को सहज और प्राकृतिक बनाती है। मातृभाषा सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को सहज और प्राकृतिक बनाती है। मातृभाषा में शिक्षित होने से बच्चों की मानसिक और बौद्धिक विकास में भी सहायक होती है। मातृभाषा संस्कृति और परंपराओं का वाहक होती है। मातृभाषा के संरक्षण से सांस्कृतिक धरोहर भी संरक्षित रहती है, जो हमारी सामूहिक पहचान का हिस्सा है। कार्यक्रम के अंत में डॉ. प्रीत कौर द्वारा सभी छात्राओं व स्टाफ सदस्यों का धन्यवाद किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक स्टाफ सदस्यों के साथ-साथ काफी संख्या में छात्राएं भी मौजूद थी।

लक्ष्य निर्धारित कर दृढ़ निश्चय से की गई मेहनत से सफलता अवश्य मिलती है: एसडीएम मनोज दलाल

एसडीएम मनोज दलाल ने शनिवार को पीएम श्री राजकीय कन्या वमा विद्यालय के वार्षिक उत्सव में की शिरकत

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
लोहारू, 21 फरवरी। एसडीएम मनोज दलाल ने कहा कि अपनी रुचि के अनुसार लक्ष्य निर्धारित कर दृढ़ निश्चय से की गई मेहनत से सफलता अवश्य मिलती है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है इसलिए विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित कर-के मेहनत करनी चाहिए जिससे उन्हें सफलता मिल सके और राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश और प्रदेश का नाम रोशन कर सकें। एसडीएम मनोज दलाल शनिवार को पीएम श्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में वार्षिक उत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह में अपना संदेश दे रहे थे। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा और मेहनत के बल पर शिक्षा, खेल, व्यापार आदि क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान बनाई है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में सुविधा की कोई कमी मायने नहीं रखती बल्कि अभावग्रस्त क्षेत्रों से भी विश्व की प्रसिद्ध हस्तियां निकली है। उन्होंने कहा कि हम सबको मिलकर अपनी संतान को अच्छे शिक्षा व संस्कार देकर नेक इंसान बनना है। एसडीएम ने कहा कि शिक्षा से बड़ा कोई धन नही है। शिक्षा के बल पर ही हम कोई मुकाम हासिल कर सकते हैं। शिक्षा से ही देश व समाज की तरक्की होती है। उन्होंने कहा कि भारत युवाओं का देश है और वर्तमान में पूरी दुनिया भारत का लोहा मानती है। एसडीएम मनोज दलाल ने विद्यार्थियों से आह्वान करते हुए कहा कि वे कड़ी मेहनत करें। आज मेहनत करने वालों के लिए हर तरफ दरवाजे खुले हैं। वे किसी व्यापार, उद्योग, नौकरी, राजनीति सहित किसी भी क्षेत्र में अपना भाग्य आजमा सकते हैं। प्राचार्य विष्णु शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया और विद्यालय की शैक्षणिक, खेल, सांस्कृतिक आदि उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस दौरान विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का शुभारंभ एसडीएम दलाल ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया। विद्यालय के प्राचार्य ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सरपंच साधु राम, बजरंग खन्ना, बीडीसी योगेश शर्मा सहित समस्त विद्यालय स्टाफ, अनेक गणमान्य नागरिक तथा छात्राएं उपस्थित रही।

भाषण प्रतियोगिता में सेजल रही अव्वल

हरियाणा वाटिका/एकजोत
शाहाबाद मारकंडा, 21 फरवरी। आर्य कन्या महाविद्यालय में संस्कृत विभाग एवं आध्यात्मिक सभा द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती के उपलक्ष्य में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती विषय पर भाषण प्रतियोगिता कराई गई। मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. आरती त्रेहन ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा के तहत इस भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उन्होंने कहा कि स्त्री शिक्षा के उत्थान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को दूर कर वैदिक ज्ञान का डंका सम्पूर्ण देश में बजाया। कार्यक्रम की संयोजिका संस्कृत विभागाध्यक्ष कैप्टन डॉ. ज्योति शर्मा ने 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत वाक्य को स्पष्ट करते हुए सभी को महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया एवं 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इस वैदिक वाक्य का उद्घोष किया। आध्यात्मिक सभा की संयोजिका डॉ. स्वरित शर्मा ने सभी को महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की कुछ घटनाओं को सभी के साथ साझा किया। इस प्रतियोगिता में भिन्न-भिन्न संकायो की कुल 16 छात्राओं ने निर्धारित विषय पर संस्कृत एवं हिन्दी भाषा मे अपने विचार व्यक्त किए। इस प्रतियोगिता में बीए तृतीय वर्ष की सेजल ने प्रथम स्थान, बीए तृतीय वर्ष की हरप्रीत ने द्वितीय स्थान एवं बीए तृतीय वर्ष की प्रीति ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका का बखूबी निर्वहन वाणिज्य विभाग की रजनी धवन एवं हिन्दी विभाग की अमीता ने किया। इस कार्यक्रम में कुल 59 छात्राएं उपस्थित रही। भौतिकी शास्त्र विभागाध्यक्षा संजुल गुप्ता ने विजयी छात्राओं को पुरस्कृत किया। मंच संचालन का कार्य आध्यात्मिक सभा की सदस्या अंकिता हंस द्वारा निभाया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में अनुराधा, नवनीत का विशेष योगदान रहा।

रक्तदान विषय पर पोस्टर एवं स्लोगन लेखन प्रतियोगिता आयोजित

हरियाणा वाटिका/एकजोत
शाहाबाद मारकंडा, 21 फरवरी। मारकंडा नेशनल कॉलेज में एनएसएस एवं यूथ रेड क्रॉस क्लब के संयुक्त तत्वावधान में पोस्टर एवं स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 60 से अधिक विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिता का शुभारंभ विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. अशोक कुमार के प्रेरणादायक उद्बोधन से हुआ। उन्होंने कहा कि रक्तदान महादान है और यह मानवता की सर्वोच्च सेवा है। हमारे युवाओं को इस पुनीत कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। तत्पश्चात डॉ. जवाहर लाल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि रचनात्मकता और जन जागरूकता का संगम समाज में सकारात्मक परिवर्तन की नींव रखता है। यह प्रतियोगिता रक्तदान विषय पर आधारित थी, जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को श्री राम लुभाया गुलियानी की स्मृति में आज दिन शनिवार को आयोजित होने वाले रक्तदान शिविर के लिए प्रेरित करना था। प्रतियोगिता का मूल्यांकन डॉ. दिव्या एवं डॉ. अजय कुमार अरोड़ा द्वारा 10 अंकों के आधार पर किया गया। विजेताओं को रक्तदान शिविर के अवसर पर सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगिता के सफल आयोजन में डॉ. भाविनी तेजपाल एवं डॉ. अजय कुमार अरोड़ा का विशेष योगदान रहा।

15 जरूरतमंद विद्यार्थियों को किए जूते वितरित

हरियाणा वाटिका/एकजोत
शाहाबाद मारकंडा, 21 फरवरी। आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में स्कूल की प्रबंधन समिति के प्रधान लाला राम लाल बंसल ने विद्यालय के 15 जरूरतमंद विद्यार्थियों को जूते वितरित किए। उन्होंने कहा कि स्कूल में पढ़ने वाले उन बच्चों की हर संभव सहायता हमारी प्रबंधन समिति के सदस्यों द्वारा की जाती है जो आर्थिक रूप से कमजोर है और पढ़ने के लिए जरूरी किताबें, स्कूल बैग, वर्दियां नहीं खरीद पाते। प्रधान ने कहा कि हमारे प्रत्येक शिक्षण संस्थान में बच्चों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है लेकिन यह बच्चे पढ़ाई से संबंधित सुविधाओं से वंचित रहने के कारण पढ़ नहीं पाते। इसलिए हमारी प्रबंधन समिति के सदस्य समय-समय पर जरूरतमंद बच्चों को स्टेशनरी, जूते आदि देती है ताकि यह बच्चे पढ़-लिखकर अपना भविष्य बना सके। विद्यालय की प्राचार्या रेखा सेतिया ने प्रधान राम लाल बंसल तथा प्रबंधन समिति के तमाम सदस्यों का आभार प्रकट किया।
इस अवसर पर प्रबंधन समिति के मैनेजर कुलदीप गुप्ता, सदस्य मोहिन्द्र कंसल एवं रमन कान्ता शर्मा सहित स्कूल स्टाफ सदस्य तथा बच्चे उपस्थित रहे।

हेयर सैलून की छत से चुराया एसी का कंप्रेशर

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 21 फरवरी। गांव भड़ोल्यांवाली में चोरों ने एक सैलून की दुकान पर लगे एसी का कंप्रेशर चोरी कर लिया।
पुलिस को दी शिकायत में लवप्रीत ने बताया कि वह बालासर रोड पर रैमो हेयर सैलून के नाम से दुकान चलाता है। उसने बताया कि बीती 19 फरवरी की शाम को वह दुकान मंगल कर घर चला गया। देर रात को चोरों ने उसकी दुकान की छत पर लगे एसी का कंप्रेशर चोरी कर लिया। सुबह जब वह दुकान पर गया तो उसे इस घटना का पता चला। उसने अपने स्तर पर आस पड़ोस के लोगों से भी पूछताछ की लेकिन कंप्रेशर का कोई सुराग नहीं लगा। इसके बाद पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्जकर आगामी कार्रवाई शुरू की है।

देश की बेटियां शिक्षित होंगी तो देश की तरक्की को कोई नहीं रोक सकता: जेपी दलाल

पूर्व मंत्री ने बहल के राजकीय महिला महाविद्यालय के मरू तरंग सांस्कृतिक प्रतियोगिता एवं स्कूटी वितरण समारोह को किया संबोधित

हरियाणा वाटिका/अमित वालिया

लोहारू, 21 फरवरी। पूर्व वित्त एवं कृषि मंत्री जेपी दलाल ने कहा कि युवाओं को बड़ा लक्ष्य लेकर दृढ़ संकल्प से मेहनत करनी चाहिए ताकि वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के साथ न केवल स्वयं बल्कि अपने क्षेत्र और देश का भी नाम रोशन कर सकें। उन्होंने कहा कि युवाओं को अपने माता-पिता तथा गुरुओ का सम्मान कर उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए ताकि वह जीवन में अच्छे नागरिक बन सके। उन्होंने कहा कि जिस देश की बेटियां शिक्षित होंगी उस देश की तरक्की को कोई नहीं रोक सकता इसलिए सरकार बेटियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रही है।

पूर्व वित्त एवं कृषि मंत्री जेपी दलाल शुक्रवार को बहल के राजकीय महिला महाविद्यालय में मारु तरंग सांस्कृतिक प्रतियोगिता एवं स्कूटी वितरण समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने दूर दराज से आने वाली बेटियों को अपने निजी कोष से 10 इलैक्ट्रिक स्कूटी वितरित की ताकि बेटियों को महाविद्यालय पहुंचने में दिक्कतों का सामना न करना पड़े। पूर्व मंत्री जेपी दलाल ने राजकीय कन्या महाविद्यालय में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग रूम, इंग्लिश स्पीकिंग रूम तथा स्मार्ट क्लास रूम का शुभारंभ भी किया।

उन्होंने कहा कि भारत एक युवा देश है। विश्व की निगाहें भारत के युवाओं पर टिकी हुई हैं। भारत के युवाओं के लिए विश्व में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। कृषि मंत्री ने कहा कि हमारे युवाओं में भी प्रतिभा की कमीं नहीं है। विश्व मे बड़ी से बड़ी कंपनी के सीईओ से लेकर इंजीनियर, डॉक्टर, उद्यमी आदि पदों पर भारत के युवाओं का कब्जा है। व्यक्ति बुद्धि के बल पर ऊंचे से ऊंचा पद ग्रहण कर सकता है। आज बुद्धि की पूजा होती है। इसलिए युवाओं को बुद्धि से काम लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि युवाओं को समाज हित में कार्य करना चाहिए और देश की प्रगति में अपना योगदान देना चाहिए। पूर्व कृषि मंत्री ने कहा कि यह बहुत सौभाग्य की बात है कि हरियाणा की बेटी रेखा गुप्ता दिल्ली की मुख्यमंत्री बनी है। इससे दिल्ली के विकास को और अधिक गति मिलेगी और इससे हरियाणा को भी लाभ मिलेगा। पूर्व कृषि मंत्री जेपी दलाल ने कहा कि बहल के कॉलेज में सुविधा की कोई कमीं नहीं रहने दी जाएगी। इस दौरान महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.सतपाल सिंह ने पूर्व कृषि मंत्री एवं अतिथियों का स्वागत किया और महाविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस अवसर पर महंत विकास गिरी, सरपंच साधुराम पनिहार सहित समस्त महाविद्यालय स्टाफ व छात्राएं मौजूद रही।

युवक 15 ग्राम कोकीन सहित काबू

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 21 फरवरी। सीआईए डबवाली पुलिस ने गश्त व चैकिंग के दौरान तहसील कार्यालय क्षेत्र से एक युवक को 15 ग्राम कोकीन सहित काबू किया है।

सीआईए डबवाली प्रभारी उप निरीक्षक राजपाल ने बताया कि एएसआई बलवान सिंह पुलिस पार्टी के साथ गश्त व चैकिंग के दौरान चौटाला रोड की ओर जा रहे थे। इसी दौरान तहसील कार्यालय के पास सामने सडक पर एक युवक बाइक पर बैठा दिखाई दिया। उक्त युवक ने सामने से आ रही पुलिस की गाड़ी को देखकर एकदम से बाइक को लेकर मौके से खिसकने का प्रयास किया। पुलिस टीम ने शक के आधार पर उक्त युवक को काबू कर उसकी तलाशी ली तो उसके कब्जा से 15 ग्राम कोकीन बरामद हुई। आरोपी की पहचान कृष्ण उर्फ किशु पुत्र राजकुमार निवासी एकता नगर वार्ड नंबर 8 मंडी डबवाली के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि आरोपी के खिलाफ थाना शहर में मादक पदार्थ अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर कार्यवाही की गई है।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

बहल, 21 फरवरी। गांव बुढेड़ा में सिकोईडिकोन संस्था लोहारू और एचडीएफसी बैंक के संयुक्त तत्वधान में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विधार्थियो को मातृभाषा के महत्व और स्थानीय भाषा का महत्व बताना था। प्रोजेक्ट कोआर्डिनेटर गौरव मलिक ने विद्यार्थियों को बताया कि हमारी भाषा हमारी पहचान होती है। फील्ड कोआर्डिनेटर हनुमान मीना ने बच्चों को उनके अधिकारो और कानूनों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।कार्यक्रम मे 80 बच्चों और 50 ग्रामवासी सहित कुल 130 लोगो ने भाग लिया। इस अवसर पर संस्था से राजीव कुमार, धर्मवीर, ललिता, मोनिका और ग्राम सरपंच, स्कूल स्टाफ साहित बीडीसी सदस्य और ग्रामवासी मौजुद रहे।

अनाधिकृत कब्जों पर विभाग व प्रशासन की नजर अंदाजी से आहत हाई कोर्ट का रुख करेंगे बहल वासी

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

बहल, 21 फरवरी। कस्बे के मुख्य बाजार व सड़क मार्ग पर बेशुमार अनाधिकृत कब्जों की विभाग व प्रशासन की नजर अंदाजी के चलते क्षेत्र के लोगों की परेशानी को मद्देनजर कस्बे के समाजिक कार्यकर्ता हाई कोर्ट में एक जनहित याचिका डालने का मन बना चुके हैं और इसके लिए इन कार्यकताओं ने राजनैतिक, सामाजिक, प्रशासनिक तथा दूसरे आवश्यक तथ्य को तलाशा गया है ताकि इस सार्वजनिक समस्या से निजात मिल सके और लोक निर्माण विभाग सड़क किनारों के फुटपाथों पर बेहिसाब हो चुके अनाधिकृत कब्जों को हटाने पीछे हट क्यों रहा है और कानूनी तौर पर विभाग को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जा सके। इस 82.6 फीट चौड़ाई के स्टेट हाइवे सड़क मार्ग पर 50 फीट से अधिक किनारों पर अवरोध बने हैं। जिसके चलते यातायात के जाम से लोग जूझ रहे हैं। वहीं फुटपाथ पर चलने को दो पांव रखने को जगह छोड़ी नहीं गई है। बेशक इस हालात में रेहड़ी फड़ी भी इसमें शामिल हैं। लेकिन रेहड़ी फड़ी तो 4 फीट से अधिक जगह घेरती नहीं और चल फीर सकती हैं। दिक्कत तो दुकानदारों ने खड़ी की है। जिन्होंने तमाम कानूनी मानदंडों को ठेंगा दिखाते हुए 15-20 फीट तक स्थाई अनाधिकृत कब्जे बनाकर राहगीरों को पगडंडी एक तरह से खत्म ही कर छोड़ी है। बावजूद विभाग जानबूझ आंखें मूंद यह सब देख रहा है और लोग विभाग की अकर्मण्यता का बेवजह खामियाजा भुगत रहे हैं। वहीं यातायात के जाम से निजात पाने के लिए पिछले 30 वर्षों से बाईपास बनाने की मांग सरकारों से की जाती रही है और समय-समय पर सार्वजनिक मंचों से बाईपास की मांग को पूरा करने की घोषणाएं भी होती रही है। घोषणाएं पुरी न करने के लिए इसके लिए सरकार भी जिम्मेदार बनती है।

श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान अमृत पाठ 27 से

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

बहल, 21 फरवरी। आगामी 27 फरवरी से श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान अमृत पाठ क्षेत्र के सर्वमान्य एवं आस्था की प्रतीक ब्रह्मलीन बाबा रति गिरी महाराज के निर्वाण दिवस की स्मृति फाल्गुन महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित किए जाएंगे। कथा पाठ राष्ट्रीय कथा प्रवक्ता साध्वी गौशिका गिरी के मुखारविंद से श्रवण किए जाएंगे। श्रीमद् भागवत कथा के शुभारंभ से पूर्व महिला नगर कलश यात्रा का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए श्रीअलख आश्रम के महंतश्री बाबा विकास गिरी महाराज ने बताया कि श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञान 5 मार्च तक श्रीअलख आश्रम में सजे पंडाल में बाद दोपहर 2 बजे से 5 बजे तक होगा।

शादी समारोह में गए व्यक्ति की बाइक चोरी

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 21 फरवरी। गांव रोड़ी में स्थित पैलेस में शादी समारोह में शिरकत करने गए मलड़ी निवासी व्यक्ति का बाइक चोरी हो गया।

पुलिस को दी शिकायत में गांव मलड़ी निवासी जगदेव सिंह ने बताया कि बीती 19 फरवरी की रात्रि को वह कालांवाली-रोड़ी रोड पर स्थित पैलेस में शादी समारोह में बाइक लेकर गया था। बाइक बाहर खड़ी कर वह अंदर चला गया। कुछ देर बाद आया तो बाइक गायब मिली। अपने स्तर पर आसपास के लोगों से भी पूछताछ की, लेकिन बाइक का कोई सुराग नहीं लगा। इसके बाद उसने पुलिस को सूचित किया।

फोर्टिस मोहाली में उन्नत रोबोट-एडेड सर्जरी के माध्यम से जटिल यूरोलॉजिकल कैंसर के रोगियों का सफलतापूर्वक इलाज किया गया

सर्जरी कम रक्त हानि, कम दर्द, कम घाव और तेजी से स्वास्थ्य लाभ को सुनिश्चित करती है

हरियाणा वाटिका/विकास कुमार

कैथल, 21 फरवरी। फोर्टिस हॉस्पिटल मोहाली के यूरो-ऑन्कोलॉजी और रोबोटिक सर्जरी विभाग ने दुनिया के सबसे उन्नत चौथी पीढ़ी के रोबोट - दा विंची एक्सआई के माध्यम से जटिल यूरोलॉजिकल कैंसर से पीड़ित कई रोगियों का सफलतापूर्वक इलाज किया है।

फोर्टिस अस्पताल मोहाली में यूरो-ऑन्कोलॉजी और रोबोटिक सर्जरी के कंसल्टेंट डॉ. धर्मेंदर अग्रवाल ने रोबोट एडेड सर्जरी के जरिए ऐसे दो मरीजों का इलाज किया है। एक अन्य मामले में, एक 56 वर्षीय मरीज, जिसने क्रोनिक किडनी रोग के कारण 2018 में रीनल ट्रांसप्लांट कराया था, उनकी ट्रांस्प्लांटेड किडनी में 3-सेमी का ट्यूमर पाया गया। उन्होंने फोर्टिस मोहाली में डॉ. अग्रवाल से संपर्क किया, जहां बाद की जांचों के बाद, डॉ. अग्रवाल ने रोबोट-एड-ेड ट्रांसप्लांट किडनी पार्शियल नेफरेक्टोमी (किसी बीमारी के इलाज के लिए किडनी का हिस्सा निकालना) किया। रोगी की गुर्दे की रक्तवाहिकाओं को डिसेक्ट किया गया और गुर्दे को सुरक्षित रखते हुए ट्यूमर को हटा दिया गया।

सर्जरी के बाद उनका यूरिन आउटपुट अच्छा था और उन्हें ट्रांसफ़्यूजन या डायलिसिस की आवश्यकता नहीं पड़ी। सर्जरी के 10 घंटे बाद मरीज चलना शुरू कर दिया और तीसरे दिन उन्हें हस्पताल से छुट्टी दे दी गई। वह आज पूरी तरह से ठीक हो चुके हैं और सामान्य जीवन जी रहे हैं।

रोबोट-एडेड सर्जरी के दौरान, रोगी के पूरे यूरिनरी ब्लैडर को हटा दिया गया, मूत्रवाहिनी को छोटी आंत के एक खंड से जोड़ दिया गया, और स्टोमा बैग में मूत्र पारित करने के लिए एक नया चैनल बनाया गया।

मरीज को पहले से ही हृदय और गुर्दे की समस्या होने के बावजूद, सर्जरी सफल रही और मरीज ने सर्जरी के 10 घंटे बाद चलना शुरू कर दिया। पांच दिन बाद उन्हें हस्पताल से छुट्टी दे दी गई। वह पूरी तरह से ठीक हो गए हैं और आज कैंसर मुक्त जीवन जी रहे हैं।

दूसरे मामले में, 62 वर्षीय एक मरीज को पिछले 10 दिनों से पेशाब में खून आ रहा था। बाद के मूल्यांकन पर, उनकी दाहिनी किडनी (14 सेमी) में एक बड़ा ट्यूमर पाया गया, साथ ही उनकी गुर्दे की नस में थ्रोम्बस और एक बड़ी रक्त वाहिका इन्फीरियर वेना कावा भी थी।

मरीज ने डॉ. अग्रवाल से संपर्क किया, जहां पीईटी स्कैन और अन्य चिकित्सा जांच के बाद, डॉ. अग्रवाल ने सुझाव दिया कि रोबोट-एडेड सर्जरी रोगी के इलाज का एक तरीका है।

डॉ. अग्रवाल के नेतृत्व में डॉक्टरों की टीम ने बड़े गुर्दे के घाव की आईवीसी थ्रोम्बेक्टोमी के साथ रोबोटिक रेडिकल नेफ्रेक्टोमी की और बड़ी नस में थ्रोम्बस के साथ पूरे ट्यूमर को पूरी तरह से हटाने में सक्षम थे।

मामला जटिल था क्योंकि ट्यूमर में हृदय की ओर जाने वाली एक बड़ी नस शामिल थी, जिससे यह खतरा था कि ट्यूमर थ्रोम्बस उखड़ सकता था और हृदय में जा सकता था, जिससे कार्डियक अरेस्ट हो सकता था।

मामले पर चर्चा करते हुए डॉ. अग्रवाल ने कहा, ह्लऐसी किसी भी समस्या से बचने के लिए पूरे आईवीसी को डीसेक्टेड किया गया और तीन बिंदुओं पर नियंत्रण किया गया। सर्जरी के बाद मरीज की रिकवरी आसानी से हो गई और प्रक्रिया के 8 घंटे के भीतर वह चलने में सक्षम हो गए । उन्हें तीन दिन बाद हॉस्पिटल छुट्टी दे दी गई।ह्व

रोबोट-एडेड सर्जरी के लाभों के बारे में डॉ. अग्रवाल ने कहा किओपन सर्जरी में 8-10 दिनों के सामान्य प्रवास की तुलना में, रोबोट-एडेड सर्जरी से मरीज प्रक्रिया के उसी दिन चलने में सक्षम हो जाता है। पेशाब में खून आना एक अच्छा संकेत नहीं है और अक्सर यह एक गंभीर समस्या की ओर इशारा करता है। नई तकनीकों की मदद से, हम अब सिर्फ. ट्यूमर को हटाने और किडनी को बचाने में सक्षम हैं।

रोबोट-एडेड सर्जरी मिनिमल इनवेसिव सर्जरी का नवीनतम रूप है और मरीज के शरीर में डाले गए एक विशेष कैमरे के माध्यम से ऑपरेटिव क्षेत्र का 3डी दृश्य प्रदान करता है। शरीर के जिन हिस्सों तक इंसानी हाथ से पहुँचना मुश्किल है, वहाँ रोबोट-एडेड उपकरण के माध्यम से पहुँचा जा सकता है जो 360 डिग्री घूम सकता हैं।

डॉ. धर्मेंदर अग्रवाल ने लंदन से जटिल कैंसर सर्जरी और रोबोट एडेड सर्जरी का प्रशिक्षण लिया है और अब तक 550 से अधिक रोबोटिक सर्जरी कर चुके हैं।

युवक 6.89 ग्राम हैरोइन सहित काबू

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 21 फरवरी। सीआईए ऐलनाबाद पुलिस टीम ने गश्त व चैकिंग के दौरान ऐलनाबाद क्षेत्र से एक युवक को 6 ग्राम 89 मिलीग्राम हैरोइन सहित गिरफ्तार किया है।

सीआईए ऐलनाबाद पुलिस टीम के प्रभारी उप निरीक्षक जगदीश चंद्र ने बताया कि सीआईए की एक पुलिस टीम गश्त व चैकिंग के दौरान ऐलनाबाद क्षेत्र में मौजूद थी। इसी दौरान पुलिस पार्टी को सामने से एक युवक आता दिखाई दिया। उक्त युवक सामने पुलिस की गाड़ी को देखकर अचानक घबराकर वापस मुडकर तेज कदमों से चलकर भागने का प्रयास किया। शक के आधार पर पुलिस पार्टी ने उक्त युवक को काबू कर राजपत्रित अधिकारी की मौजूदगी में तलाशी ली तो उसके कब्जा से 6 ग्राम 89 मिलीग्राम हैरोइन बरामद हुई। आरोपी की पहचान भूपेंद्र सिंह पुत्र जोरावर सिंह निवासी गांव चौटाला जिला सिरसा के रुप में हुई है। उन्होंने बताया कि आरोपी के खिलाफ थाना ऐलनाबाद में मादक पदार्थ अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई है।

एसपी ने सहरानीय कार्य के लिए पुलिस प्रवक्ता सहित दो पुलिसकर्मियों को किया सम्मानित

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 21 फरवरी। पुलिस कर्मियों की जहां भी ड्यूटी लगे वहीं पर अपनी बेहतरीन उपस्थिति दर्ज करवाकर सहरानीय कार्य करें ताकि समाज में पुलिस विभाग की बेहतर छवि नजर आए तथा उस क्षेत्र के लोग उक्त पुलिस अधिकारी व कर्मचारी को लंबे समय तक याद रखें।

पुलिस अधीक्षक विक्रांत भूषण ने उक्त विचार पुलिस और मीडिया के बीच लंबे समय से एक सेतू के रुप में सहरानीय कार्य करने वाले पुलिस प्रवक्ता निरीक्षक सुरजीत सिंह तथा आर्थिक अपराध शाखा में तैनात सिपाही कुलदीप सिंह को पुलिस अधीक्षक कार्यालय में प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करने के उपरांत व्यक्त किए। पुलिस अधीक्षक ने सम्मानित होने वाले पुलिस कर्मियों की पीठ थपथपाते हुए कहा कि प्रत्येक पुलिस कर्मचारी को सम्मानित होने वाले पुलिस कर्मचारियों से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि थानों में फरियाद लेकर आने वाले व्यक्तियों की बात को गंभीरता से सुनकर उन्हें शीघ्र अति शीघ्र न्याय दिलाने का प्रयास करें, ताकि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को सुरक्षित महसूस करें और समाज में पुलिस की एक बेहतर छवि नजर आए। उन्होंने कहा कि सहरानीय कार्य करने वाले पुलिस कर्मियों को सम्मानित कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाएगा।

दिल्ली की जनता ने लगाई पीएम के दिल्ली जीतो नारे पर मुहर: रातुसरिया

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 21 फरवरी। दिल्ली में भाजपा की 27 सालों बाद प्रचंड जीत के बाद मुख्यमंत्री बनी रेखा गुप्ता को लेकर प्रतिक्रिया देते हुए वरिष्ठ भाजपा नेता प्रदीप रातुसरिया ने कहा कि पिछले लंबे समय से जंग लग चुके दिल्ली के विकास को अब रफ्तार दी जाएगी।

रातुसरिया ने शुक्रवार को जारी बयान में कहा कि महिला मुख्यमंत्री बनाकर भाजपा ने महिलाओं को राजनीति में अधिक से अधिक भागीदारी व महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के साथ-साथ उन लोगों के मुंह पर ताले लगाने का काम किया है, जो सरकार पर उंगलियां उठा रहे थे। रातुसरिया ने कहा कि रोहिंग्या और बांग्लादेशियों को बसाने वाले और पूर्वांचल के लोगों को बाहरी बताने वालों को दिल्ली की जनता ने सबक सिखाया है। पीएम के कार्यों और नीतियों पर भरोसा कर दिल्ली की जनता ने देश को बचाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि यह न केवल भाजपा, बल्कि भारत की जीत है। डबल इंजन की सरकार अब रूके हुए विकास को तेज गति प्रदान करेगी और दिल्ली की जनता को उसके अधिकार आसानी से मिल पाएंगे।

मॉडर्न शौचालय की समय पर सफाई न किए जाने से शौचालय हुए खस्ताहाल

स्थानीय लोगों ने नगरपालिका के अधिकारियों से भी की थी शिकायत

हरियाणा वाटिका/नीतीश जोगी

रादौर, 21 फरवरी। शहर की नगरपालिका द्वारा लाखों रुपए की लागत से बनवाए गए दो मॉडर्न शौचालय इन दिनों साफ सफाई व रखरखाव न किए जाने के कारण खस्ताहाल में पहुंच गए है। नगरपालिका रादौर के द्वारा सही समय पर सफाई व पानी की व्यवस्था न किए जाने से राहगीरों को भारी दिक्कत का सामना करना पड़ता है। शहर के लोगों ने कई बार नगरपालिका रादौर के अधिकारियों व कर्मचारियों से मामले को लेकर शिकायत भी की। शिकायत करने केबावजूद भी समस्या ह्नयो की त्यो बनी रही। जिससे शहर के लोगों में नपा की कार्यप्रणाली को लेकर भारी रोष है। शहर निवासी मुकेश जोगी, प्रदीप सैनी, राजेश धोबी, नीरज बतरा, कुमार,चेतन , प्रदीप शर्मा,जितेंद्र सैनी, जसविंदर सैनी, महिन्द्र आदि ने बताया कि नपा द्वारा लाखों रुपए की लागत से शहर में 2 शौचालयों का निर्माण करवाया गया था।

शुरू में तो नपा द्वारा शौचालयों की सफाई व्यवस्था को लेकर पूरा ध्यान दिया गया। लेकिन समय के साथ साथ नगरपालिका कर्मचारियों व अधिकारियों ने शौचालयों की साफ सफाई व रखरखाव से अपना मुंह फेर लिया। उन्होंने बताया कि नगरपालिका के शौचालयों में न तो पानी मिलता है, नल टूटे पड़े हुए है, रखरखाव न किए जाने से उपकरण चोरी हो गए है, जिसके बारे में नगरपालिका की ओर से कोई शिकायत नहीं दी गई। वहीं नगरपालिका शौचालयों में साफ सफाई न होने से दुर्गंध के कारण लोगों का पास से गुजरना भी दुर्भर हो गया है। कर्मचारी सुबह शौचालय खोलने व बंद करने ही आते है। सफाई व्यवस्था पर नगरपालिका हर माह लाखों रुपए खर्च करने का काम करती है। परंतु फिर भी शहर में सफाई व्यवस्था चरमरा गई है। उन्होंने नगरपालिका के कर्मचारियों से मांग की कि जल्द से जल्द नपा शौचालयों की सफाई व्यवस्था में सुधार किया जाये।

शहर के सभी मॉडर्न शौचालय की मरम्मत के लिए टैंडर लगाया गया है, जब तक टेंडर अलॉअ नही होता तब तक मॉडर्न शौचालय की प्रोपर सफाई करवा दी जाएगी, राहगीरों को किसी भी प्रकार की कोई भी परेशानी नहीं होगी ।

- गुलशन कुमार, सचिव नपा रादौर

एसडीएम रादौर नरेन्द्र कुमार ने समुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का किया औचक निरीक्षण

हरियाणा वाटिका/नीतीश जोगी

रादौर, 21 फरवरी। उप मंडल अधिकारी रादौर नरेन्द्र कुमार ने शुक्रवार को रादौर शहर के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, आंगनवाड़ी सैंटर का दौरा किया। एसडीएम रादौर नरेन्द्र कुमार ने स्कूल की प्राथमिक कक्षाओं का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने बाल वाटिका के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की और सभी विद्यार्थियों को दिए जाने वाले मिड-डे मील का चेक किया। उन्होंने भविष्य में विद्यालय के बेहतर संचालन के लिए अनेक सुझाव दिए। इस दौरान उन्होंने लाइब्रेरी रजिस्टर, मिड-डे-मील रजिस्टर, हाजिरी रजिस्टर व अन्य सभी रजिस्टर चैक किए। उन्होंने मिड-डे मील के अंतर्गत विद्यार्थियों को दिए जाने वाले खाने की गुणवत्ता की भी जांच की तथा मिड-डे-मील खुद खाकर चैक किया। उन्होंने भविष्य की कार्यप्रणाली को और अधिक बेहतर बनाने का सुझाव दिया। इस अवसर पर स्कूल से सम्बन्धित सभी रिकार्ड व दस्तावेज संतोषजनक पाए गए। एसडीएम ने अध्यापकों को निर्देश दिए कि वे विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की जानकारी भी दे और स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने पर ध्यान दें। यदि वे स्कूल में अच्छी शिक्षा और सुविधाएं मुहैया कराएंगे तो स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या भी बढ़ेगी।

निकाय चुनाव: भाजपा, हलोपा की गलबहिया, बैकफुट पर कांग्रेस की नैया

भाजपा ने जारी की जिला संयोजकों की सूची-नए सियासी समीकरणों का होने लगा आभास

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 21 फरवरी। भारतीय जनता पार्टी ने आसन्न निकाय चुनावों के लिए जिला संयोजक नियुक्त किए हैं। स्थानीय निकाय चुनावों के लिए कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी व गोपाल कांडा को अहम जिम्मेदारी दी गई है। उल्लेखनीय है कि विगत विधानसभा चुनावों में हलोपा प्रत्याशी के समर्थन में भाजपा ने अपने घोषित प्रत्याशी रोहताश जांगड़ा का नामांकन वापिस लेकर नए समीकरणों को जन्म दिया था। इसी प्रकार स्थानीय निकाय चुनावों में हलोपा सुप्रीमो ने अपने सभी प्रत्याशियों को भाजपा के चुनाव चिह्न पर लड? की सहमति देकर भाजपा का अहसान चुका दिया है। अब एक अभूतपूर्व घटनाक्रम में भाजपा ने अपने मंत्री के साथ हलोपा सुप्रीमो को निकाय चुनाव के लिए अपना संयोजक बनाकर सभी को चौकाया है। इससे इन कयासों को बल मिल रहा है कि हलोपा का कभी भी भाजपा में विलय हो सकता है। यहां यह भी अहम है कि हलोपा सुप्रीमो का अनुज गोविंद कांडा भारतीय जनता पार्टी का सदस्य है तथा भाजपा प्रत्याशी के रूप में उसने ऐलनाबाद का उपचुनाव लड़ा था।

गुटबाजी से बैकफुट पर कांग्रेस: भारतीय जनता पार्टी की प्रमुख प्रतिद्वंदी कांग्रेस पार्टी की ओर से विधायक गोकुल सेतिया समर्थित उम्मीदवारों को आजाद उम्मीदवारों के तौर पर उतारा गया है। इन प्रत्याशियों के प्रचार की कमान अकेले गोकुल सेतिया के कंधे पर है। कांग्रेस में गुटबाजी खुलकर सामने आ चुकी है। कांग्रेस पार्टी के स्थानीय नेताओं ने स्वयं को निकाय चुनाव के प्रचार से दूर कर लिया है। ऐसे में एक बार फिर मुख्य रूप से हलोपा, भाजपा गठबंधन का सीधा मुकाबला विधायक गोकुल सेतिया से होना तय है।

संपादक की कलम से

चुनावी हार से बड़ी है एक सपने की मौत

सवाल यह नहीं है कि आम आदमी पार्टी का क्या होगा? या अब केजरीवाल कहां जायेंगे? सवाल है कि वैकल्पिक राजनीति की किसी भी कोशिश का क्या भविष्य है? वैसे तो तीन चुनावों में शानदार प्रदर्शन करने के बाद एक चुनाव में पिछड़ जाना, और वह भी सिर्फ चार प्रतिशत से, कोई ऐसी हार नहीं है, जिसके बाद किसी पार्टी के अस्तित्व पर सवाल उठाये जाएं. पर यह तर्क आप पर लागू नहीं होता. एक आंदोलन से शुरूआत करने वाली यह पार्टी पूरी तरह चुनावी पार्टी बन गयी और जल्द ही संगठन को छोड़ सरकार तक सीमित हो गयी थी. इसलिए चुनावी हार का धक्का भारी पड़ सकता है. शुरू से ही पार्टी की दिल्ली पर निर्भरता बहुत ज्यादा रही है, पंजाब सरकार पर भी दिल्ली दरबार से चलाने के आरोप लगते रहे हैं. इसलिए दिल्ली की हार का असर पूरे देश पर पड़ना स्वाभाविक है.

अरविंद केजरीवाल को पार्टी का पर्याय बनाने का खामियाजा यह है कि उनकी व्यक्तिगत चुनावी हार का वही असर है, जो युद्ध में सेनापति के गिरने का होता है. दिल्ली के बाहर आप के लिए बहुत रास्ते खुले नहीं है. पिछले चुनाव में गोवा, उत्तराखंड और गुजरात में अच्छा वोट मिला था, पर आगामी चुनाव में उसे दोहराना संभव नहीं लगता. हरियाणा में घुसने की कोशिश कामयाब नहीं हुई. ले-देकर सारा दारोमदार पंजाब पर टिका है. वहां सत्ता बचाये रखना टेढ़ी खीर हो सकता है. अगर पंजाब के विधायकों में बगावत की चर्चा को खारिज कर दिया जाए, तो भी 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में आप के सामने अनेक चुनौतियां हैं.

खजाने में पैसे नहीं हैं, सरकार का इकबाल नहीं है, मुख्यमंत्री में समझ नहीं है, पार्टी को दिशाबोध नहीं है. पंजाब के मतदाता में बहुत धीरज नहीं है. और अगर पंजाब की सरकार चली जाती है, तो पार्टी के अस्तित्व का संकट हो सकता है, क्योंकि आप ने उन नेताओं और कार्यकताओं से किनारा कर लिया है, जिनकी निःस्वार्थ मेहनत के दम पर पार्टी खड़ी हुई थी. धीरे-धीरे सब जगह या तो दूसरी पार्टियों से नेताओं को भर लिया गया है, या फिर वे कार्यकर्ता हैं, जिनकी नजर कुर्सी पर लगी है. ऐसे में अगर आप को तोड़ने की कोशिश होती है, तो कितने नेता इस मुश्किल वक्त में पार्टी के साथ खड़े होंगे?

भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से पैदा हुई यह पार्टी राजनीति के स्थापित ढर्रे को बदलने के उद्देश्य से बनी थी. पर पहले तीन साल के भीतर ही राजनीति को बदलने की बजाय पार्टी ने राजनीति के स्थापित कायदे के हिसाब से खुद को बदल लिया. दरअसल दिल्ली में 2015 के चुनाव में मिली अप्रत्याशित सफलता इस पार्टी की बुनियादी विफलता से जुड़ी थी. जल्द से जल्द चुनावी सफलता के लिए पार्टी ने अपने बुनियादी मूल्यों को ताक पर रख दिया था. इससे सरकार तो बन गयी, पर पार्टी टूट गयी. वे सब लोग पार्टी से अलग कर दिये गये, जो कुछ आदर्श को लेकर पार्टी से जुड़े थे.

भ्रष्टाचार विरोधी आदर्शवाद को छोड़ कर पार्टी ने ह्यगुड गवर्नेंसह्न का नारा पकड़ा. दिल्ली सरकार की बड़ी तिजोरी के सहारे मुफ्त बिजली जैसी योजनाएं भी पेश की. सरकारी स्कूलों में सुधार और मोहल्ला क्लिनिक के सहारे ह्यदिल्ली मॉडलह्न की पेशकश की. हालांकि ह्यशिक्षा क्रांतिह्न जैसे दावे अतिशयोक्तिपूर्ण थे, फिर भी बहुत दिन बाद सरकारी स्कूलों की सूरत सुधरी. दिल्ली की झुग्गी-झोपड़ी या अनाधिकृत कॉलोनी में रहने वाले गरीब, आप्रवासी और हाशियाग्रस्त समुदाय को कोई अपनी खैर-खबर लेने वाला मिला. स्थापित राजनैतिक घरानों के बाहर नया नेतृत्व उभरा. केंद्र सरकार और भाजपा के एजेंट की तरह उपराज्यपाल द्वारा तमाम अड़ंगे लगाने के बावजूद दिल्ली की जनता ने 2020 के चुनाव में आप को फिर छप्पर फाड़ कर समर्थन दिया. दिल्ली मॉडल के इसी दावे के सहारे 2022 में पंजाब में भी आप की लहर चली.लेकिन अब तक पार्टी की बुनियादी कमजोरी ऊपर तक दिखने लगी थी. दिल्ली में आप की तीसरी सरकार के पास महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा के अलावा और कुछ देने को बचा नहीं था। पंजाब सरकार की तिजोरी पहले से ही खाली थी, वहां कुछ बड़ा करने की गुंजाइश नहीं थी. उधर अहंकार में लिप्त नेतृत्व ने खुल कर वह सब करना शुरू कर दिया, जो आम जनता में इस पार्टी की छवि को ध्वस्त कर रहा था. पार्टी ने भाजपा की सांप्रदायिक राजनीति का विरोध करने के बजाय हिंदू सांप्रदायिकता में भाजपा से होड़ करनी शुरू कर दी. आदर्शवाद पहले ही छूट चुका था, अब जमीनी पकड़ भी ढीली होने लगी. केजरीवाल सहित जब बड़े नेता जेल में भेजे गये, तो जनता की सहानुभूति उनके साथ नहीं थी. इसकी परिणति दिल्ली के चुनाव परिणाम में हुई।

ब्लड प्रेशर कंट्रोल करने के ये हैं आसान आयुर्वेदिक उपाय, मिलेंगे कई फायदे

आजकल हाई ब्लड प्रेशर (बीपी) बहुत कॉमन हो गया है. भागदौड़ भरी जिंदगी, स्ट्रेस, गलत खानपान और कम एक्सरसाइज की वजह से लोगों का बीपी बढ़ने लगा है. अगर इसे वक्त रहते कंट्रोल न किया जाए, तो दिल की बीमारी, स्ट्रोक और किडनी की परेशानी जैसी दिक्कतें हो सकती हैं, लेकिन घबराने की जरूरत नहीं है. आयुर्वेद में ऐसे कई आसान और नेचुरल उपाय बताए गए हैं, जो बिना किसी साइड इफेक्ट के ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने में मदद कर सकते हैं. चलिए जानते हैं ऐसे 7 असरदार आयुर्वेदिक उपाय, जिससे हम ब्लड प्रेशर को नियंत्रित कर सकते हैं.

अश्वगंधा से टेंशन कम करें

अगर आपका बीपी बढ़ता है, तो सबसे पहले स्ट्रेस को कम करना बहुत जरूरी है. अश्वगंधा एक बेहतरीन जड़ी-बूटी है, जो दिमाग को शांत करती है और स्ट्रेस को कम करती है. इसे आप दूध या गुनगुने पानी के साथ रात को सोने से पहले ले सकते हैं. इससे आपका ब्लड प्रेशर भी कंट्रोल में रहेगा और नींद भी अच्छी आएगी.

अर्जुन की छाल का काढ़ा पिएं

अर्जुन की छाल हार्ट के लिए बहुत फायदेमंद होती है. यह धमनियों को साफ करके ब्लड फ्लो को बेहतर बनाती है, जिससे हाई बीपी कंट्रोल में रहता है. अर्जुन की छाल को पानी में उबालकर इसका काढ़ा बना लें और रोज सुबह इसे पिएं. अगर स्वाद कड़वा लगे, तो शहद मिला सकते हैं.

लहसुन और मेथी का इस्तेमाल करें

लहसुन एक नैचुरल ब्लड प्रेशर कंट्रोलर है. यह धमनियों को रिलैक्स करता है और ब्लड फ्लो को सही रखता है. रोज सुबह खाली पेट 1-2 कच्ची लहसुन की कलियां खाने से बीपी कंट्रोल में रहता है। इसके अलावा, मेथी के बीजों को रातभर भिगोकर सुबह खाली पेट खाने से भी फायदा होता है.

त्रिफला चूर्ण से बॉडी को डिटॉक्स करें

त्रिफला (आंवला, हरड़ और बहेड़ा) का सेवन करने से शरीर के टॉक्सिन्स बाहर निकलते हैं और ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है. रोज रात को सोने से पहले 1 चम्मच त्रिफला चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लें. इससे न केवल बीपी कंट्रोल होगा, बल्कि पेट भी ठीक रहेगा.

तुलसी और आंवला का जूस पिएं

तुलसी और आंवला दोनों ही एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होते हैं. तुलसी हार्ट को हेल्दी रखती है और आंवला शरीर की इम्युनिटी बढ़ाने के साथ-साथ ब्लड प्रेशर को भी कंट्रोल करता है. रोज सुबह 5-6 तुलसी की पत्तियां चबाएं या आंवला जूस पिएं. इससे बीपी धीरे-धीरे नॉर्मल होने लगेगा.

पंचकर्म थेरेपी अपनाएं

अगर आप नैचुरली बीपी कंट्रोल करना चाहते हैं, तो पंचकर्म थेरेपी बहुत फायदेमंद हो सकती है. इसमें शरीर को डीटॉक्स किया जाता है और खासतौर पर ह्यशिरोधाराह्न और ह्यबस्तीह्न थेरेपी हाई बीपी के मरीजों के लिए कारगर होती है. यह बॉडी को रिलैक्स करती है और तनाव कम करके ब्लड प्रेशर को नॉर्मल रखने में मदद करती है.

योग और ध्यान करें

अगर आप हाई बीपी से बचना चाहते हैं, तो योग और ध्यान से बेहतर कोई उपाय नहीं. अनुलोम-विलोम, भ्रामरी और कपालभाति जैसे प्राणायाम करने से ब्लड प्रेशर कंट्रोल में रहता है. इसके अलावा, रोज 10-15 मिनट ध्यान करने से मानसिक शांति मिलती है और स्ट्रेस कम होता है, जिससे बीपी भी कंट्रोल में रहता है.

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बढ़ती दस्तक

प्रभात सिन्हा

विगत 10 और 11 फरवरी को फ्रांस की राजधानी पेरिस में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(एआइ) शिखर सम्मेलन, 2025 का आयोजन किया गया, जिसमें भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने सह-अध्यक्षता की. इस सम्मेलन में दुनिया के प्रमुख नेताओं, नीति-निमार्ताओं, वैज्ञानिकों, टेक उद्योग के दिग्गजों और शोधकताओं ने हिस्सा लिया. सम्मेलन का मुख्य संदर्भ था ह्यसतत भविष्य के लिए जिम्मेदार एआइ.ह्न इसका मुख्य उद्देश्य था एआइ नीति, नैतिकता, नवाचार और नियमन पर एक वैश्विक सहमति बनाने के साथ ही एआइ की पहुंच को समझना. साथ ही यह भी सुनिश्चित करना कि एआइ तकनीक में नवाचार और नैतिकता का समावेश कर इसका मानवता की सेवा में बेहतर इस्तेमाल कैसे किया जाए.

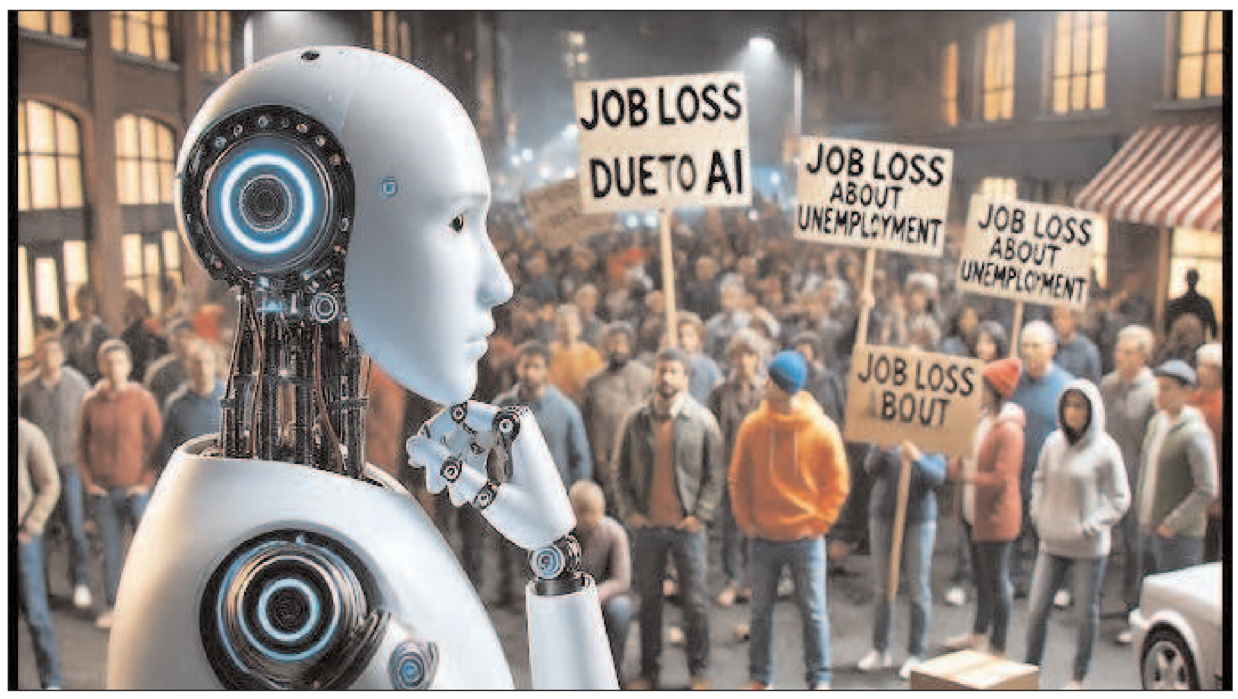

प्रधानमंत्री मोदी ने उद्घाटन भाषण में एआइ के लोकतंत्रीकरण पर जोर दिया और कहा कि एआइ को केवल कुछ विशेष देशों, संस्थाओं या कंपनियों के उपयोग के लिए सीमित करने के बजाय सबके लिए, विशेष रूप से विकासशील और गरीब देशों के लिए उपलब्ध कराना चाहिए. उन्होंने यह भी कहा कि दुनिया एआइ युग की दहलीज पर खड़ी है. यह केवल एक तकनीकी बदलाव नहीं है, एक सभ्यता का पुनर्विकास और पुनर्निर्माण है. प्रधानमंत्री मोदी ने सम्मेलन में ह्यएआइ फॉर ऑलह्न का नारा देते हुए यह भी स्पष्ट किया कि एआइ के उपयोग को सुगम बनाना आवश्यक है, ताकि यह पूरे मानव समाज के लिए उपयोगी हो. उनका ठीक ही यह कहना था कि एआइ का गवर्नेंस केवल जोखिमों को कम करने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह नवाचार को बढ़ावा देने वाला भी होना चाहिए. इसलिए विश्व के जिम्मेदार लोगों को ऐसी नीतियां बनानी होंगी, जो एआइ को नियंत्रित करने के बजाय इसे सही दिशा में आगे बढ़ाएं.

इस सम्मेलन में कई वैश्विक नेताओं ने अपने विचार रखे, जिनमें अमेरिका, यूरोपीय संघ, फ्रांस और गूगल के सीइओ सहित प्रमुख टेक कंपनियों के प्रमुख शामिल थे. विदित हो कि फ्रांस में आयोजित इस एआइ सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण पहलू एआइ की वैश्विक गवर्नेंस को स्थापित करना था. इसके लिए जरूरी है कि एआइ को नैतिक रूप से संचालित करने के तरीके तलाशे जाएं और इसके लिए प्रयास किये जाएं. एआइ के संभावित जोखिमों को कम करने के लिए सामूहिक ढांचा तैयार किया जाए. एआइ एल्गोरिदम को पारदर्शी और जवाबदेह बनाने के लिए सख्त साइबर सुरक्षा मानदंड लागू किये जाने की भी जरूरत है.यहां यह बात भी स्पष्ट हो जानी चाहिए कि एआइ का उपयोग केवल लाभ कमाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि इसे समाज और मानवता की भलाई के लिए विकसित करने पर भी जोर दिया जाना चाहिए. एआइ को नियंत्रित करना और उसे सुरक्षित तरीके से विकसित करना भी जरूरी है और इसके लिए विभिन्न देशों को आपसी सहयोग बढ़ाना होगा और एक प्रभावी तंत्र बनाना होगा. ऐसा करना इसलिए जरूरी है, क्योंकि एआइ के दुरुपयोग का खतरा बड़ा है और यह किसी से छिपा भी नहीं है. अभी एआइ का उपयोग अपने आरंभिक दौर में ही है, परंतु उसके मनमाने तरीके से इस्तेमाल और दुरुपयोग की अनेक घटनाएं सामने आ चुकी हैं, ऐसे में इसके उपयोग के लिए वैश्विक ढांचा बनाना अत्यंत आवश्यक है.अब बात रोजगार पर एआइ के प्रभाव की, जिसे लेकर दुनियाभर में चिंता व्याप्त है. यह सच है कि एआइ के बढ़ते उपयोग से कई पारंपरिक नौकरियों पर असर पड़ेगा, परंतु इसके साथ ही अनेक नयी नौकरियों का सृजन भी होगा. ऑटोमेशन से बेशक कुछ उद्योगों पर प्रभाव पड़ना तय है. जैसे, विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग), बैंकिंग, कस्टमर सर्विस जैसी नौकरियों में एआइ के कारण स्वचालन बढ़ने से जहां कुछ नौकरियां समाप्त हो सकती हैं. वहीं एआइ डेवलपर्स, डेटा साइंटिस्ट, एथिकल एआइ एक्सपर्ट, साइबर सिक्योरिटी प्रोफेशनल्स जैसी नयी भूमिकाओं के उभरने से इन क्षेत्रों में नौकरियां बढ़ेंगी. यहां सरकारों और कंपनियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि श्रमिकों को नयी तकनीकों के अनुरूप प्रशिक्षित किया जाए. पेरिस सम्मेलन के बाद कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाये जाने की भी जरूरत है. जैसे, यूनेस्को, यूएन और अन्य वैश्विक संस्थाएं एआइ को विनियमित करने के लिए नीतिगत दिशानिर्देश तैयार करें. इससे यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि एआइ केवल कुछ विकसित देशों तक सीमित न रहे, बल्कि कम विकसित देशों को भी इस तकनीक का लाभ मिले. यह भी तय है कि एआइ का भविष्य केवल नीतियों और नियमों तक सीमित नहीं रहने वाला. इसके नवाचार और अनुसंधान में भी बड़े बदलाव देखने को मिल सकते हैं. जैसे, एआइ आधारित चिकित्सा क्षेत्र में एआइ की मदद से बीमारियों की जल्दी पहचान, रोबोटिक सर्जरी और व्यक्तिगत उपचार जैसी नयी तकनीकों का विकास हो सकता है. एआइ आधारित ट्यूटरिंग, स्मार्ट क्लासरूम और व्यक्तिगत शिक्षा समाधान भविष्य में शिक्षा क्षेत्र को बदल सकते हैं. एआइ का उपयोग स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन और कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के जरिये जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भी किया जा सकता है.

इस सम्मेलन ने न केवल एआइ के तकनीकी पहलुओं को उजागर किया, बल्कि भारत को वैश्विक एआइ नेतृत्व में मजबूत स्थिति में ला खड़ा किया है. अगला एआइ सम्मेलन भारत में आयोजित होगा, जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भारत इस तकनीकी क्रांति का केंद्र बनने के लिए तैयार है. प्रधानमंत्री मोदी ने सम्मेलन में भारत की डिजिटल क्रांति और एआइ नेतृत्व की ओर बढ़ते कदमों के बारे में बताते हुए कहा कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित कर चुका है, जिससे 1.4 अरब लोगों को डिजिटल सेवाएं प्रदान की जा रही हैं. सम्मेलन में शामिल लगभग 60 देशों ने एक समावेशी और टिकाऊ एआइ विकास के लिए घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किये, परंतु अमेरिका और ब्रिटेन ने इससे दूरी बना ली. यह निर्णय एआइ के वैश्विक नियमन में एकता की कमी दर्शाता है, जो भविष्य में विनियमन एवं सुरक्षा नीतियों में मतभेद पैदा कर सकता है. अमेरिका और ब्रिटेन ने राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक शासन के पर्याप्त प्रावधानों की कमी का हवाला दिया, जिससे संकेत मिलता है कि वे अपनी स्वतंत्र एआइ नीति और गवर्नेंस ढांचे की ओर बढ़ सकते हैं और जो भविष्य की चुनौतियों के बारे में बताता है.

मोदी की अमेरिका यात्रा से उम्मीदें,

अवधेश कुमार

संपूर्ण विश्व की दृष्टि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ बातचीत तथा प्रतिफलों पर लगी है. प्रधानमंत्री मोदी फ्रांस में एआइ शिखर बैठक की सह-अध्यक्षता करने के बाद राष्ट्रपति ट्रंप के आमंत्रण पर अमेरिका गये हैं. अपने दूसरे कार्यकाल में ट्रंप अवैध आप्रवासन, व्यापार घाटा, आतंकवाद, वैश्विक संघर्ष, पश्चिम एशिया, यूएस एड आदि को लेकर जिस आक्रामकता और तीव्र गति से कदम उठा रहे हैं, उसमें यात्रा की गंभीरता काफी बढ़ गयी है. प्रधानमंत्री की यात्रा से पूर्व अमेरिका के सैन्य विमान से हथकड़ी लगाकर वापस किये गये अवैध भारतीय आप्रवासियों का मुद्दा भारत में कितना गर्म हुआ यह बताने की आवश्यकता नहीं है. उम्मीद है कि प्रधानमंत्री की यात्रा में यह विषय उठाया जायेगा.

अवैध प्रवासियों वाले देशों पर ट्रंप ने पहले दिन से निशाना साधा और अपनी घोषणा के अनुरूप उनको पकड़कर कैदियों की तरह विमान से देश में भेजना शुरू किया. व्यापार घाटा भी इसी से जुड़ गया. ट्रंप ने चीन से आने वाली सामग्रियों पर 10 प्रतिशत तथा मेक्सिको और कनाडा पर 25 प्रतिशत आयात शुल्क लगा दिया. हालांकि भारत को लेकर ऐसा कोई कदम नहीं उठाया. हां, आप्रवासियों के मुद्दे पर अवश्य उन्होंने आक्रामकता दिखायी है. तो प्रधानमंत्री के दौरे एवं ट्रंप काल में भारत-अमेरिकी संबंधों पर विचार करते समय इस पहलू का ध्यान रखना होगा. ट्रंप ने ब्राजील के नागरिकों को भी इसी तरह वापस भेजा जिस पर ब्राजील ने विरोध जताया. भारत की ओर से ऐसा नहीं किया गया. यहां तक कि संसद में विदेश मंत्री ने आंकड़े प्रस्तुत किये जिनसे पता चलता है कि हर कार्यकाल में अमेरिका से आप्रवासियों को वापस भेजा गया है. किंतु इस तरह हथकड़ी लगाकर सैन्य विमान से भेजने का पहला मामला है. उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका के समक्ष मामला उठाया गया है. क्या हम विश्व में इस प्रकार से किसी देश में अवैध घुसपैठ को प्रोत्साहित कर सकते हैं? हमारा कोई नागरिक अगर वीजा लेकर उचित रास्ते से अमेरिका या किसी देश में जाए और वहां उसके साथ अमानवीय या किसी तरह के अंतरराष्ट्रीय मानक के विपरीत व्यवहार हो, तो भारत अवश्य सीना ठोक कर खड़ा होगा. भारत अमेरिका से बात कर सकता है कि जो भी अवैध रूप से आये हैं, उन्हें हम वापस लेंगे जिसका तरीका ज्यादा मानवीय और न्यायोचित हो. वास्तव में, अवैध घुसपैठ या आप्रवास हर देश में और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपराध है. कोई देश अपने ऐसे नागरिकों के साथ खड़ा नहीं हो सकता, न इसका समर्थन कर सकता है.

हालांकि, जैसे अवैध रूप से किसी देश में घुसना अस्वीकार्य है, वैसे ही इस तरह का व्यवहार भी. ऐसा लगता है कि ट्रंप इस तरह के अतिवादी कदमों से उन लोगों को भयभीत करना चाहते हैं जो अवैध तरीके से उनके देश में आने या घुसने की सोच रहे होंगे या कोशिश कर रहे होंगे. जिन देशों से ज्यादा अवैध लोग आ रहे हैं, वहां के नेतृत्व पर भी दबाव डालने की रणनीति दिखाई देती है. अमेरिका में एक करोड़ के आसपास आप्रवासी अवैध रूप से हैं. इनको वापस करना आसान नहीं है. सैनिक जहाज या अपने नागरिक विमान से भी वापस करने में बहुत समय लगेगा. सैन्य विमान में वैसे भी जबरदस्त खर्च आता है और स्वयं अमेरिका की वित्तीय स्थिति लंबे समय तक इसे जारी रखने की अनुमति नहीं देती. तो ऐसा सतत होगा यह नहीं माना जा सकता. इसका रास्ता निकालना पड़ेगा.

अमेरिका के साथ व्यापार में सर्वाधिक लाभ को देखते हुए भारत नहीं चाहेगा कि किसी तरह का व्यापारिक तनाव हो और अत्यधिक सीमा शुल्क की व्यवस्था से हमें क्षति पहुंचे. भारत ने अमेरिका के साथ संबंधों की गंभीरता को देखते हुए संयम का परिचय दिया और यह उचित ही है. भारतीय राजनयिक ट्रंप की रणनीति को समझ चुके हैं।

महान साधक थे रामकृष्ण परमहंस

रमेश सर्राफ धमोरा

रामकृष्ण परमहंस भारत के एक महान संत, आध्यात्मिक गुरु एवं विचारक थे। इन्होंने सभी धर्मों की एकता पर जोर दिया। उन्हें बचपन से ही विश्वास था कि ईश्वर के दर्शन हो सकते हैं। अतः ईश्वर की प्राप्ति के लिए उन्होंने कठोर साधना और भक्ति का जीवन बिताया। स्वामी रामकृष्ण मानवता के पुजारी थे। साधना के फलस्वरूप वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि संसार के सभी धर्म सच्चे हैं और उनमें कोई भिन्नता नहीं। वे ईश्वर तक पहुँचने के भिन्न-भिन्न साधन मात्र हैं। 19 वीं शताब्दी में श्री रामकृष्ण परमहंस एक रहस्यमयी और महान योगी पुरुष थे। जिन्होंने काफी सरल शब्दों में अध्यात्मिक बातो को सामान्य लोगो के सामने रखा। जिस समय हिन्दू धर्म बड़े संकट में फंसा हुआ था उस समय श्री रामकृष्ण परमहंस ने हिन्दू धर्म में एक नयी उम्मीद जगाई।

रामकृष्ण के जीवन में अनेक गुरु आये पर अन्तिम गुरुओं का उनके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। एक थी भैरवी जिन्होने उन्हे अपने कापालिक तंत्र की साधना करायी और दूसरे थे श्री तोतापुरी उनके अन्तिम गुरु। गंगा के तट पर दक्षिणेश्वर के प्रसिद्व मंदिर में रहकर रामकृष्ण मां काली की पूजा किया करते थे। गंगा नदी के दूसरे किनारे रहने वाली भैरवी को अनुभूति हुई कि एक महान संस्कारी व्यक्ति रामकृष्ण को उसकी दीक्षा की आवश्यकता हैं। गंगा पार कर वो रामकृष्ण के पास आयी तथा उन्हे कापालिक दीक्षा लेने को कहा। रामकृष्ण ने भैरवी द्वारा बतायी पद्धति से लगातार साधना कर मात्र तीन दिनों में ही सम्पूर्ण क्रिया में निपुण हो गये।

रामकृष्ण के अन्तिम गुरु तोतापुरी थे जो सिद्ध तांत्रिक तथा हठ योगी थे। उन्होने रामकृष्ण को दीक्षा दी। रामकृष्ण को दीक्षा दी गई परमशिव के निराकार रुप के साथ पूर्ण संयोग की। पर आजीवन तो उन्होने मां काली की आराधना की थी। वे जब भी ध्यान करते तो मां काली उनके ध्यान में आ जाती और वे भावविभोर हो जाते। जिससे निराकार का ध्यान उनसे नहीं हो पाता था।

तोतापुरी ध्यान सिद्ध योगी थे। उनको अनुभव हुआ कि रामकृष्ण के ध्यान में मां काली प्रतिष्ठित हैं। उन्होने शक्ति सम्पात के द्वारा रामकृष्ण को निराकार ध्यान में प्रतिष्ठित करने के लिये बगल में पड़े एक शीशे के टुकड़े को उठाया और उसका रामकृष्ण के आज्ञाचक्र पर आघात किया जिससे रामकृष्ण को अनुभव हुआ कि उनके ध्यान की मां काली चूर्ण-विचूर्ण हो गई हैं और वे निराकार परमशिव में पूरी तरह समाहित हो चुके हैं। वे समाधिस्थ हो गये। ये उनकी पहली समाधी थी जो तीन दिन चली। तोतापुरी ने रामकृष्ण की समाधी टूटने पर कहा। मैं पिछले 40 वर्षो से समाधि पर बैठा हूं पर इतनी लम्बी समाधी मुझे कभी नही लगी।

श्री रामकृष्ण परमहंस का जन्म पश्चिम बंगाल के हुगली जिले में कामारपुकुर नामक गांव में 18 फरवरी 1836 को एक निर्धन निष्ठावान ब्राहमण परिवार में हुआ था। इनके जन्म पर ही ज्योतिषियों ने रामकृष्ण के महान भविष्य की घोषणा कर दी थी। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी सुन इनकी माता चन्द्रा देवी तथा पिता खुदिराम अत्यन्त प्रसन्न हुए। इनको बचपन में गदाधर नाम से पुकारा जाता था। पांच वर्ष की उम्र में ही वो अदभुत प्रतिभा और स्मरणशक्ति का परिचय देने लगे। अपने पूर्वजों के नाम व देवी-देवताओं की स्तुतियां, रामायण, महाभारत की कथायें इन्हे कंठस्थ याद हो गई थी।

1843 में इनके पिता का देहांत हो गया तो परिवार का पूरा भार इनके बड़े भाई रामकुमार पर आ पड़ा था। रामकृष्ण जब नौ वर्ष के हुए इनके यज्ञोपवीत संस्कार का समय निकट आया। उस समय एक विचित्र घटना हुई। ब्राह्मण परिवार की परम्परा थी कि नवदिक्षित को इस संस्कार के पश्चात अपने किसी सम्बंधी या किसी ब्राह्मण से पहली शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। एक लुहारिन जिसने रामकृष्ण की जन्म से ही परिचर्या की थी। बहुत पहले ही उनसे प्रार्थना कर रखी थी कि वह अपनी पहली भिक्षा उसके पास से प्राप्त करे। लुहारिन के सच्चे प्रेम से प्रेरित हो बालक रामकृष्ण ने वचन दे दिया था।

अतः यज्ञोपवीत के पश्चात घर वालों के लगातार विरोध के बावजूद इन्होने ब्राह्मण परिवार में प्रचलित प्रथा का उल्लंघन कर अपना वचन पूरा किया और अपनी पहली भिक्षा उस लुहारिन से प्राप्त की। यह घटना सामान्य नही थी। सत्य के प्रति प्रेम तथा इतनी कम उम्र में सामाजिक प्रथा के इस प्रकार उपर उठ जाना रामकृष्ण की आध्यात्मिक क्षमता और दूरदर्शिता को ही प्रकट करता है।

रामकृष्ण का मन पढ़ाई में न लगता देख इनके बड़े भाई इन्हे अपने साथ कलकत्ता ले आये और अपने पास दक्षिणेश्वर में रख लिया। यहां का शांत एवं सुरम्य वातावरण रामकृष्ण को अपने अनुकूल लगा। 1858 में इनका विवाह शारदा देवी नामक पांच वर्षीय कन्या के साथ सम्पन्न हुआ। जब शारदा देवी ने अपने अठारहवें वर्ष मे पदार्पण किया तब श्री रामकृष्ण ने दक्षिणेश्वर के अपने कमरे में उनकी षोड़शी देवी के रुप में आराधना की। यही शारदा देवी रामकृष्ण संघ में माताजी के नाम से परिचित हैं।

रामकृष्ण परमहंस के पास जो कोई भी जाता वह उनकी सरलता, निश्चलता, भोलेपन और त्याग से इतना अभिभूत हो जाता कि अपना सारा पांडित्य भूलकर उनके पैरों पर गिर पड़ता था। गहन से गहन दार्शनिक सवालों के जवाब भी वे अपनी सरल भाषा में इस तरह देते कि सुनने वाला तत्काल ही उनका मुरीद हो जाता। इसलिए दुनियाभर की तमाम आधुनिक विद्या, विज्ञान और दर्शनशास्त्र पढ़े महान लोग भी जब दक्षिणेश्वर के इस निरक्षर परमहंस के पास आते तो अपनी सारी विद्वता भूलकर उसे अपना गुरु मान लेते थे।

इनके प्रमुख शिष्यों में स्वामी विवेकानन्द, दुर्गाचरण नाग, स्वामी अद्भुतानंद, स्वामी ब्रह्मानंदन, स्वामी अद्यतानन्द, स्वामी शिवानन्द, स्वामी प्रेमानन्द, स्वामी योगानन्द थे। श्री रामकृष्ण के जीवन के अन्तिम वर्ष कारुण रस से भरे थे। 15 अगस्त 1886 को अपने भक्तों और स्नेहितों को दुख के सागर में डुबाकर वे इस लोक में महाप्रयाण कर गये।

लोक बोलियां प्रतियोगिता में गुरप्रीत रहा अव्वल

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 21 फरवरी। सीएमके नेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पंजाबी विभाग ने शुक्रवार को सभ्याचार दी तस्वीर व लोक बोलियां विषय पर प्रतियोगिता आयोजित की। प्रतियोगिता में महाविद्यालय के विधार्थियों ने बढ़ चढकर भाग लिया।
प्रतियोगिता का शुभारंभ करते हुए प्राचार्या डॉ. रंजना ग्रोवर ने कहा कि सभ्याचार विरासत, लोकगीत, लोक बोलियां हमारी संस्कृति की झलक व पहचान हैं। हमें इस परम्परागत सांस्कृतिक विरासत पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिए। विभागाध्यक्ष डॉ. नछतर सिंह ने कहा कि सभ्याचार, विरासत, लोकसंगीत, बोलियां आदि समाज की गहराई तक फैले गुणों की समग्रता का नाम है, जो उस समाज की सोच, विचार, कार्य, खान-पान, बोलना, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तुकार आदि में सन्निहित है। इस प्रकार किसी राष्ट्र की संस्कृति और सामाजिक ताने-बाने का पता उस राष्ट्र के लोकगीतों, और लोक बोलियों से चलता है। हमारा व्यवहार, सुख-दुख, पहनावा, खान-पान सब कुछ इन्हीं के माध्यम से व्यक्त होता है। लोक बोलियों में बहुत कुछ है, इन बोलियों में पूरे समुदाय का दिल धडकता है, समाज का चेहरा दिखता है, समय काल दिखता है इनमें प्रेम की भावनाएं मिलन और अलगाव की भावनाएं शामिल हैं। बोलियों में युद्ध और मेल-मिलाप होता है इसमें आंसुओं की वर्षा और हंसी की चमक भी शामिल है, रूठने और मनाना भी शामिल है। इस प्रतियोगिता में गुरप्रीत सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरे स्थान पर मनिंदर सिंह व तृतीय स्थान पर ममता रानी व प्रियंका रानी रही। इस अवसर पर काजल व हरमीत सिंह मौजूद थे।

युवती संदिग्ध परिस्थितियों में लापता

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 21 फरवरी। गांव रामनगरिया से एक युवती संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई।
पुलिस को दी शिकायत में परिजनों ने बताया कि बीती 14 फरवरी को उनकी बेटी किसी काम से बाहर गई थी, लेकिन उसके बाद से वापस नहीं लौटी। अपने स्तर पर आस पड़ोस व रिश्तेदारी में काफी तलाश की, लेकिन बेटी का कोई सुराग नहीं लगा। जिसके बाद उन्होंने पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्जकर आगामी कार्रवाई शुरू की है।

चोरीशुदा स्कूटी सहित आरोपी काबू

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 21 फरवरी। शांति नगर सिरसा क्षेत्र स्थित एक मकान के सामने से इलेक्ट्रिक स्कूटी चोरी की वारदात को सुलझाते हुए शहर थाना पुलिस ने जांच के दौरान शहर सिरसा क्षेत्र से एक आरोपी को काबू कर लिया है।
शहर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर सत्यवान ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान सुरजीत सिंह उर्फ बब्लू पुत्र लखविंद्र सिंह निवासी आलूपुर मानसा पंजाब के रुप में हुई है। उन्होंने बताया कि शांति नगर निवासी दीपक कुमार पुत्र सुहारा राम ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि बीती 3 फरवरी की रात को घर के सामने इलेक्ट्रिक स्कूटी खड़ी की थी। अगले दिन स्कूटी को चैक किया तो कोई अज्ञात व्यक्ति स्कूटी चोरी करके ले गया। पीड़ित की शिकायत के आधार पर अज्ञात के खिलाफ स्कूटी चोरी का केस दर्ज कर जांच शुरू की गई थी। उन्होंने बताया कि शहर थाना की एक पुलिस टीम ने जांच के दौरान महत्वपूर्ण सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए आरोपी सुरजीत सिंह उर्फ बब्लू को चोरीशुदा इलेक्ट्रिक स्कूटी के साथ काबू कर लिया। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार किए गए युवक को अदालत में पेश कर न्यायिक हिरासत में जेल भेजा गया है।

मोबाइल छीना-झपटी मामले का आरोपी काबू

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार
सिरसा, 21 फरवरी। शहर थाना की कीर्ति नगर पुलिस चौकी ने महत्वपूर्ण सूराग जुटाते हुए प्रीत नगर सिरसा क्षेत्र में एक व्यक्ति से हुई मोबाइल छीना झपटी की घटना को सुलझाते हुए घटना के एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।
शहर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर सत्यवान ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान राजू पुत्र साधू सिंह निवासी राम नगरिया सिरसा के रुप में हुई है। उन्होंने बताया कि अजय कुमार पुत्र जुगल किशोर निवासी गली नंबर 1 कीर्ती नगर ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि करीब 20 दिन पहले रात के समय सांगवान चौक सिरसा से पैदल अपने घर प्रीत नगर की ओर जा रहा था। इसी दौरान जब वह नजदीक प्रीत नगर पंहचा तो सामने से बाइक सवार दो अज्ञात युवक आए और मेरे हाथ से मोबाइल फोन छीन कर फरार हो गए है। उन्होंने बताया कि शिकायत के आधार पर अज्ञात युवकों के खिलाफ थाना शहर सिरसा छीना-झपटी का केस दर्ज कर जांच शुरू की गई थी। उन्होंने बताया कि कीर्ती नगर पुलिस चौकी की एक टीम ने जांच के दौरान महत्वपूर्ण सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए मोबाइल छीना झपटी की वारदात में शामिल एक युवक को काबू कर लिया है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार किए गए युवक से पूछताछ कर उसके एक अन्य साथी की भी पहचान कर ली गई है, जिसे गिरफ्तार करने के लिए पुलिस की टीमें लगातार दबिश दे रही है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार किए गए युवक की निशानदेही पर छीना गया मोबाइल तथा वारदात में प्रयुक्त बाइक भी बरामद कर लिया है। उन्होंने बताया कि काबू किए गए आरोपी से पूछताछ की जा रही है और पूछताछ के दौरान अन्य वारदातों का खुलासा होने की संभावना से भी इंकार नही किया जा सकता। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी को अदालत में पेश कर न्यायिक हिरासत में जेल भेजा गया है।

चोरों ने तोशाम में एक दुकान के ताले तोड़कर, हजारों रुपए कीमत की बैटरी की चोरी

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
तोशाम, 21 फरवरी। तोशाम स्थित सुरेन्द्र चौक के पास अग्रसेन स्कूल के नजदीक ए वन हीरो होंडा आल सर्विस नामक दुकान से शुक्रवार सुबह अज्ञात चोर चोरी कर ले गए। चोरी की पूरी वारदात सीसीटीवी फुटेज में कैद हो गई। चोर इस वारदात को अंजाम देने कार गाड़ी में आए और सीसीटीवी फुटेज के अनुसार चोरों ने इस चोरी की घटना को सुबह करीबन 4:32 पर अंजाम दिया।
दुकान मालिक सरल निवासी बलजीत सिंह ने बताया कि शुक्रवार सुबह करीब साढ़े चार बजे अज्ञात चोरों ने ताला तोडकर दुकान से लीवफास्ट बैटरी सहित कुल सात बैटरियां चोरी कर लीं जिससे उसे हजारों रुपए का नुकसान हुआ है। बलजीत सिंह ने बताया कि चोर एक गाड़ी में आए थे और बैटरी चोरी कर ले गए। बलजीत सिंह ने चोरी हुई बैटरियों को बरामद कराने व कानूनी कार्रवाई की मांग की है। पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है ताकि आरोपियों की पहचान की जा सके। पुलिस ने मामला दर्ज कर चोरों की तलाश शुरू कर दी है। सूचना पर फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट टीम भी मौके पर पहुंची।

केयू यूआईईटी संस्थान के विद्यार्थी भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड में चयनित, मिलेगा 11.5 लाख का पैकेज

कुवि कुलपति प्रो सोमनाथ सचदेवा ने दी बधाई

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 21 फरवरी। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के यूआईईटी संस्थान के 4 विद्यार्थियों का रक्षा तकनीकी क्षेत्र की प्रतिष्ठित नवरत्न कंपनी भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड में चयन हुआ। इन चारों विद्यार्थियों का चयन 11 लाख 50 हजार रुपये के पैकेज पर हुआ है। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा ने चयनित विद्यार्थियों एवं संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील ढींगरा को बधाई देते हुए कहा कि यह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के लिए बडे.गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि यूआईईटी के तकनीकी विद्यार्थी विकसित भारत में अहम योगदान देंगे। कुवि कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि केयू का यूआईईटी संस्थान ट्रेनिंग और प्लेसमेंट के क्षेत्र में निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है जिससे विद्यार्थियों को भविष्य में रोजगार के अवसर मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा और अन्य गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध एवं निरंतर प्रयासरत है। जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय के तकनीकी विद्यार्थी अपनी तकनीकी कौशल को निरंतर निखारकर अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

नगर निकाय चुनावों को गंभीरता से लेकर एक्शन मोड़ में रहे अधिकारी : प्रदीप कुमार

40 से ज्यादा अति संवेदनशील और संवेदनशील बूथों पर रखनी होगी पैनी निगाह

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 21 फरवरी। नगर निकाय चुनाव के सामान्य आब्जर्वर आईएएस प्रदीप कुमार ने कहा कि नगर निकाय चुनावों को सभी अधिकारी लोकसभा और विधानसभा की तरह गंभीरता से लेंगे। इन चुनावों में अधिकारियों को हमेशा एक्शन मोड में रहना होगा। इन चुनावों में शराब, पैसा या अन्य किसी भी तरह के प्रलोभन की शिकायत मिलने पर सम्बन्धित क्षेत्र के अधिकारी को तुरंत एक्शन लेना होगा। अहम पहलू यह है कि इन नगर निकाय चुनावों में आदर्श आचार संहिता की उल्लंघना किसी भी कीमत पर सहन नहीं की जाएगी। सामान्य आब्जर्वर प्रदीप कुमार शुक्रवार को लघु सचिवालय के सभागार में नगर निकाय चुनावों को लेकर आरओ, एआरओ व नोडल अधिकारियों की एक बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। इससे पहले उपायुक्त नेहा सिंह ने थानेसर नगर परिषद के सामान्य चुनाव के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि थानेसर नगर परिषद में पार्षद पद के लिए 32 वार्डो में से 30 वार्डों में चुनाव होने है, यहां पर 2 वार्डों में सर्वसम्मति बनी है। इसी तरह लाडवा के वार्ड नंबर 11 में पार्षद पद के लिए भी सर्व सम्मति बनी है और इस्माईलाबाद नगर पालिका में प्रधान पद के लिए उपचुनाव होने है और यहां पर 13 वार्ड बनाए गए है। इन चुनावों को सफल और शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न करवाने के लिए डीएमसी सतेन्द्र सिवाच को आरओ, इस्माईलाबाद उप चुनाव के लिए एमडी शुगर मिल विरेन्द्र चौधरी को आरओ नियुक्त किया गया है।
सामान्य पर्यवेक्षक प्रदीप कुमार ने कहा कि नगर निकाय चुनावों को आपसी तालमेल के साथ शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न करवाना है, इसके लिए अधिकारियों को किसी भी स्तर पर मिलने वाली शिकायत पर तुरंत कार्रवाई अमल में लानी है और शिकायतकर्ता को संतुष्ट करना है। सभी अधिकारियों को हमेशा एक्टिव मोड में रहकर अपनी डयूटी का निर्वहन करना होगा। इन चुनावों की नियमित रूप से रिपोर्ट आरओ और आला अधिकारियों को भिजवानी होगी। इन चुनावों के लिए नियुक्त किए गए डयूटी मजिस्ट्रेट व अन्य अधिकारी निरंतर फील्ड में रह कर नजर रखेंगे। जहां कहीं भी एमसीसी के आदेशों की अवहेलना नजर आए उसी समय नियमानुसार कार्रवाई अमल में लानी है।

30 से ज्यादा जगहों पर पुलिस ने की नाकाबंदी
उन्होंने कहा कि पुलिस प्रशासन की तरफ से शहर में 30 से ज्यादा जगहों पर नाकाबंदी की गई है। इन जगहों पर पुलिस प्रशासन को मुस्तैदी के साथ अपनी ड्यूटी का निर्वहन करना होगा और हर वाहन को चैक करना होगा, लेकिन पुलिस प्रशासन को यह भी ध्यान में रखना होगा कि आम नागरिक को किसी प्रकार की कोई परेशानी ना आए। उपायुक्त ने कहा कि पुलिस अधिकारियों को विशेष ध्यान रखना होगा कि रिटर्निंग अधिकारी के आदेशों के बिना कोई भी कार्रवाई अमल में नहीं लानी, पुलिस को किसी भी तरह कोई कार्रवाई करने से पहले सम्बन्धित क्षेत्र के आरओ को कांफिडेंस में लेना होगा।

नाकों पर पुलिस अधिकारी व कर्मचारी मुस्तैदी के साथ देंगे ड्यूटी : भारती डबास
पुलिस पर्यवेक्षक आईपीएस भारती डबास ने कहा कि नगर निकाय चुनावों को लेकर रात्रि के समय चैकिंग अभियान को तेजी के साथ चलाया जाएगा और 30 से ज्यादा जगहों पर नाकाबंदी की गई है। अगर जरूरत पड़ी तो रात्रि के समय नाकाबंदी की संख्या में इजाफा किया जाएगा। सभी पुलिस अधिकारी कर्मचारी नाकाबंदी के दौरान पूरी मुस्तैदी के साथ ड्यूटी देंगे। अगर चेकिंग के दौरान ड्यूटी में लापरवाही नजर आई तो नियमानुसार कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

40 से ज्यादा संवेदनशील व अतिसंवेदनशील बूथों पर रहेगी पैनी निगाहें
उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि नगर परिषद थानेसर में 40 से ज्यादा बूथ संवेदनशील और अतिसंवेदनशील श्रेणी में आए है। इन बूथों पर पर्याप्त संख्या में पुलिस बल की ड्यूटी लगाई जाएगी और डयूटी मजिस्ट्रेट भी इन बूथों पर निरंतर पैनी निगाहें रखेंगे और इन बूथों पर आला अधिकारी भी नियमित रूप से गश्त करेंगे। किसी भी व्यक्ति को कानून व्यवस्था को खराब नहीं करने दिया जाएगा।

नगर परिषद थानेसर व इस्माईलाबाद चुनावों के लिए बीयू व सीयू का हुआ रेंडमाइजेशन

30 वार्डों के 101 बूथों पर होगा चुनाव

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 21 फरवरी। उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि नगर परिषद थानेसर के आम चुनाव में चेयर पर्सन व पार्षदों तथा इस्माईलाबाद में प्रधान पद के उप चुनाव को लेकर बीयू और सीयू मशीनों का रेंडमाइजेशन का कार्य पूरा कर लिया गया है। यह रेंडमाइजेशन का कार्य नगर निकाय चुनावों के सामान्य आर्ब्जवर प्रदीप कुमार की देखरेख में किया गया। उपायुक्त नेहा सिंह शुक्रवार को लघु सचिवालय के सभागार में नप व नपा चुनावों को लेकर रेंडमाइजेशन कार्यक्रम के दौरान बोल रही थी। इससे पहले नगर निकाय के चुनावों के सामान्य आब्जर्वर प्रदीप कुमार व पुलिस आब्जर्वर आईपीएस भारती डबास, उपायुक्त नेहा सिंह, नगर परिषद थानेसर के रिटर्निंग अधिकारी एवं डीएमसी सतेन्द्र सिवाच, इस्माइलाबाद उप चुनाव के रिटर्निंग अधिकारी एवं एमडी शुगर मिल विरेन्द्र चौधरी, एसडीएम थानेसर अमन कुमार, नगराधीश डा. रमन गुप्ता के साथ-साथ विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों और चेयरमैन व प्रधान पद तथा पार्षद पद के प्रत्याशियों के समक्ष नगर निकाय चुनावों के लिए बूथों के अनुसार बीयू और सीयू ईवीएम मशीनों का रेंडमाइजेशन किया गया और सभी की सहमति से अंतिम रिपोर्ट तैयार की गई। उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि नगर परिषद थानेसर में 7 वार्ड और 32 वार्ड में सर्व सम्मति बनी है, इसलिए इन दोनों वार्डों के 7 बूथों पर मतदान नहीं होगा। इसलिए 30 वार्डों के 101 बूथों पर चुनाव होगा। इन बूथों पर 121 ईवीएम मशीनों का रेंडमाइजेशन किया गया है। इसी तरह नगर परिषद थानेसर के चेयरपर्सन पद के लिए 32 वार्डों के 108 बूथों के लिए ईवीएम मशीनों का रेंडमाइजेशन किया गया है। इन बूथों पर 130 मशीनों जिनमें 22 मशीनें रिजर्व में है, इन मशीनों का भी रेंडमाइजेशन किया गया है और बूथ के अनुसार मशीन आबंटित कर दी गई है। इसी तरह इस्माईलाबाद में 13 बूथों के लिए ईवीएम मशीनों का रेंडमाइजेशन किया गया है। इस प्रक्रिया को पूरी पारदर्शिता के साथ किया गया है और रिपोर्ट पर सभी प्रत्याशियों ने अपने हस्ताक्षर भी किए है। इस मौके पर एनआईसी अधिकारी विनोद सिंगला, चुनाव तहसीलदार संदीप कुमार आदि उपस्थित थे।

सीवन में अबकी बार होगी बदलाव की बयार, अब नहीं रहेगी प्रतिनिधि प्रथा: शैली मुंजाल

सीवन का विकास पूरी पारदर्शिता व निष्पक्ष तरीके से होगा : शैली मुंजाल

हरियाणा वाटिका/राहुल
सीवन, 21 फरवरी। सीवन नगर पालिका चुनाव में भाजपा की चेयरपर्सन पद की उम्मीदवार शैली मुंजाल ने अपना जनसंपर्क अभियान जोरों से चलाया हुआ है। शैली ने जनता से अपील की है कि वे इस बार परिवर्तन के लिए मतदान करें। उनका कहना है कि सीवन के नागरिकों का अपार समर्थन उन्हें मिल रहा है और वे नगर के संपूर्ण विकास के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। वे जनता से किए गए हर वायदे को पूरा करने के लिए अपनी पूरी ईमानदारी और मेहनत से कार्य करेंगी। शैली मुंजाल ने कहा कि नगर पालिका व पंचायत चुनावों में अक्सर यह देखने को मिलता है कि निर्वाचित प्रतिनिधि स्वयं जनता के बीच नहीं आते, बल्कि कुछ खास लोगों को अपने प्रतिनिधि बनाकर उनके माध्यम से कार्य करवाते हैं। इस ह्यप्रतिनिधि प्रथाह्न के कारण वास्तविक जरूरतमंदों तक योजनाओं का लाभ सही तरीके से नहीं पहुंच पाता और विकास कार्यों में देरी होती है। यह व्यवस्था जनता और प्रशासन के बीच दूरी बढ़ाती है, जिससे पारदर्शिता पर भी असर पड़ता है।
शैली मुंजाल ने स्पष्ट रूप से कहा है कि वे जनता के सहयोग से चेयरपर्सन बनी तो इस पुरानी और अव्यवहारिक प्रणाली को पूरी तरह खत्म करेंगी। वे हर निर्णय और योजना की स्वयं निगरानी करेंगी और यह सुनिश्चित करेंगी कि किसी भी नागरिक को किसी मध्यस्थ के माध्यम से प्रशासन तक अपनी बात न पहुंचानी पड़े। उनका कहना है कि नगर के विकास और जनता की सेवा के लिए प्रत्यक्ष रूप से कार्य करना उनका पहला संकल्प है। वे व्यक्तिगत रूप से हर वार्ड का निरीक्षण करेंगी, जनता की समस्याओं को सुनेंगी और उसी के अनुसार समाधान निकालेंगी। उनकी सोच स्पष्ट है- जनता ने अगर मुझे अपना नेता चुना , तो कार्य भी मैं ही करूंगी, किसी और के माध्यम से नहीं।

ईमानदारी और पारदर्शिता से होगा नगर का विकास : शैली मुंजाल

शैली मुंजाल का दूसरा प्रमुख वायदा पारदर्शी प्रशासन देना है। उनका मानना है कि वे अगर चेयरपर्सन बनी तो नगर में सफाई व्यवस्था, जल निकासी, सडक सुधार और अन्य बुनियादी सुविधाओं की स्थिति सुधारने के लिए सबसे पहले भ्रष्टाचार और लापरवाही को खत्म करना जरूरी है। वे सुनिश्चित करेंगी कि सरकारी योजनाओं का लाभ सही पात्रों को मिले और किसी भी नागरिक को बिचौलियों के चक्कर में न पड ?ा पड़े। उनका यह भी कहना है कि नगर पालिका कार्यालय जनता के लिए हमेशा खुला रहेगा, ताकि कोई भी नागरिक अपनी समस्या या सुझाव सीधे उनके सामने रख सके। शैली मुंजाल ने सीवन की जनता से अपील करते हुए कहा कि यदि वे उन्हें भारी मतों से विजयी बनाते हैं, तो वे नगर को एक आदर्श नगर पालिका में बदलने का संकल्प पूरा करेंगी। वे आश्वासन देती हैं कि किसी भी समस्या को अनदेखा नहीं किया जाएगा और हर कार्य पूर्ण ईमानदारी और मेहनत से किया जाएगा।

सीवन के मतदाताओं से अपील
शैली मुंजाल ने कहा कि इस बार सीवन की जनता एक नई शुरूआत करे। उनकी प्राथमिकता नगर का विकास और जनता की भलाई है, और इसके लिए वे किसी भी चुनौती से पीछे नहीं हटेंगी। वे जनता के साथ मिलकर सीवन को एक स्वच्छ, सुंदर और सुव्यवस्थित नगर बनाने का सपना साकार करेंगी
। उन्होंने कहा कि प्रतिनिधि प्रथा का अंत अब निश्चित है! अब आपकी बात सीधे चेयरपर्सन तक पहुंचेगी! उन्होंने कहा कि जनता का मिल रहा अपार समर्थन दशार्ता है कि वे यह सीट जीतकर भाजपा को और अधिक मजबूत करेंगी। उन्होंने जनता से अपील की कि वे 2 मार्च को कमल का बटन दबाएं और शैली मुंजाल को भारी मतों से जीत दर्ज करवाएं!

वरिष्ठ भाजपा नेता व पूर्व सरपंच सतीश मुंजाल ने कहा कि प्रतिनिधि प्रथा से कैसे होता है नुक्सान ?
जनता और प्रशासन के बीच दूरी बढ़ जाती है। निर्णय लेने की प्रक्रिया में देरी होती है। जनता की समस्याएं सीधे प्रशासन तक नहीं पहुंच पातीं। भ्रष्टाचार और पक्षपात को बढ़ावा मिलता है। नगर की योजनाएं कागजों तक सीमित रह जाती हैं।
पूर्व सरपंच सतीश मुंजाल ने कहा कि अब समय आ गया है इस पुरानी व्यवस्था को समाप्त करने का। उन्होंने दावे से कहा कि इस पुरानी प्रथा को खत्म सिर्फ शैली मुंजाल ही कर सकती हैं। उन्होंने जनता से अपील की कि वे शैली मुंजाल को अधिक से अधिक वोट देकर सेवा का मौका जरूर दें। इस अवसर पर उनके साथ भाजपा महिला मोर्चा मंडल सीवन की अध्यक्ष कृष्णा देवी, अंकुर मुंजाल, ओमप्रकाश मुटरेजा सहित भाजपा कार्यकर्ता, नेता व सैकड़ो की संख्या में उनके समर्थक उपस्थित थे।

एसडीएम ने किया खनन क्षेत्र का औचक निरीक्षण

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
नांगल चौधरी, 21 फरवरी। एसडीएम मनोज कुमार ने आज विभिन्न विभागों के अधिकारियों को साथ लेकर जैनपुर खनन क्षेत्र का औचक निरीक्षण किया।
एसडीएम खनन विभाग व वन विभाग के अधिकारी व कर्मचारियों को साथ लेकर इस क्षेत्र का कई घंटों तक दौरा किया। इस दौरान कहीं भी अवैध खनन का मामला नहीं पाया गया।
उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि माइनिंग एरिया के ऐसे रास्तों को पूरी तरह से बंद रखा जाए जहां से अवैध खनन होने की आशंका रहती है। उन्होंने वन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे यहां पर और अधिक गस्त बढ़ाएं। उन्होंने कहा कि उपायुक्त के निर्देश पर जिला प्रशासन द्वारा खनन क्षेत्र में कड़ी निगरानी की जा रही है। जिला में किसी भी हालत में अवैध खनन नहीं होने दिया जाएगा। प्रशासन पूरी तरह से अलर्ट है। अगर कोई नागरिक इस मामले में संलिप्त पाया जाएगा तो उसके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। इसके अलावा अगर कोई वाहन इसमें प्रयोग किया जाता है तो उस वाहन को भी जप्त किया जाएगा।

नागरिकों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर दूर किया जाए : एसडीएम अनील कुमार यादव

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
महेंद्रगढ़, 21 फरवरी। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के निदेर्शानुसार एसडीएम अनील कुमार यादव के मार्गदर्शन में महेंद्रगढ़ में समाधान शिविर के माध्यम से जन सुनवाई करते हुए जरूरतमंद लोगों की सार्वजनिक व व्यक्तिगत शिकायतों का प्राथमिकता से निदान किया जा रहा है। जिला मुख्यालय व उपमंडल स्तर पर प्रतिदिन कार्य दिवस पर सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक लगाए जा रहे समाधान शिविर में लोगों की शिकायतों का समाधान किया जा रहा है। समाधान शिविर में आज एसडीएम अनील कुमार यादव ने नागरिकों की समस्याओं पर सुनवाई करते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों को तत्काल कार्रवाई करने के निर्देश दिए।
एसडीएम अनील कुमार यादव ने समाधान शिविर में आई शिकायतों का नियमानुसार कार्रवाई करने के निर्देश सम्बंधित अधिकारी को दिए गए। समाधान शिविर में प्रमुख तौर पर प्रॉपर्टी आईडी, परिवार पहचान पत्र, जमीन का पंजीकरण, लोकल बॉडी का नो ड्यूज सर्टिफिकेट, म्युनिसिपल कमेटी से नक्शा अनुमोदन, बिजली-सिंचाई-सार्वजनिक स्वास्थ्य, समाज कल्याण पेंशन तथा अपराध की शिकायतें और राशन कार्ड को शामिल किया गया है।

अनाज मंडी सरसों की आवक शुरू, सरकारी खरीद शुरू न होने से किसान मायूस

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
इस्माईलाबाद, 21 फरवरी। अनाज मंडी सरसों की आवक शुरू हो चुकी है। लेकिन सरसों की सरकारी खरीद शुरू न होने से किसानों में मायूसी छाई हुई है। हालांकि अनाज मंडी प्राइवेट खरीददार सरसों की खरीद कर रहे है। लेकिन किसानों को उनकी फसल की पूरे दाम न मिलने से किसान सरकारी खरीद शुरू करने की मांग कर रहे है। किसान सोहन लाल, प्रदीप, मनदीप, संजीव, तरसेम, राजेश, सौरव आदि बताया कि उन्होंने फसल चक्र अपनाते हुए सरसों की फसल का उत्पादन किया था। उन्होंने बताया कि मौसम में अधिक गर्मी के चलते इस वर्ष सरसों की फसल फरवरी माह के अंत में पक कर तैयार हो गई है। मौसम खराब के चलते किसान लंबे समय तक पक्की फसल को खेत में नहीं रख सकते। ऐसे में उन्हें फसल अनाज मंडी में बिकवाली के लिए लाना पड़ रहा है। लेकिन सरकार खरीद का कार्य मार्च माह के दूसरे सप्ताह में शुरू करती है। जिसके चलते किसानों को अपनी फसल औने पौने दामों पर बेचने को मजबूर होना पड़ रहा है। इस समय अनाज मंडी में सरसों 5200 से 5400 रुपये प्रति क्विंटल के भाव से बि रही है। जबकि सरकारी समर्थन मूल्य 5950 रुपये तय किया हुआ है। इस तरह किसानों को 400 से 500 रुपये का आर्थिक नुकसान प्रति क्विंटल के हिसाब से हो रहा है। किसानों ने सरकार से मांग रखी है कि सरसों की सरकारी खरीद का कार्य जल्द से जल्द शुरू किया जाएग।

क्या कहते है मार्केट कमेटी सचिव
जब इस बारे में मार्केट कमेटी सचिव अंकुर ठकराल ने बताया कि सरसों की खरीद को लेकर सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है। उन्होंने कहा कि सरकारी आदेश आते ही सरसों की खरीद का कार्य शुरू कर दिया जाएगा। सरकार ने 15 मार्च से सरसों की खरीद के आदेश जारी किए है। जिन किसानों ने फसल का पंजीकरण करवाया हुआ है और सरसों सरकारी मापदंडों के अनुसार सही है। उनकी सरसों की खरीद का कार्य तय समय से शुरू कर दिया जाएगा।

मातृभाषा हमारी पहचान और संस्कृति की धरोहर-कुलदीप कुमार

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
इस्माईलाबाद, 21 फरवरी। राजकीय महाविद्यालय चम्मू कलां में हिंदी विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हिंदी विभाग के अध्यक्ष कुलदीप कुमार ने मातृभाषा के महत्व पर व्याख्यान दिया और इसके समाज एवं शिक्षा में योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मातृभाषा हमारी पहचान और संस्कृति की धरोहर है। यह न केवल हमारे विचारों और अभिव्यक्ति का माध्यम होती है, बल्कि हमारी सोच और संवेदनाओं को भी प्रभावित करती है। उन्होंने छात्रों को अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व महसूस करने और इसके प्रचार-प्रसार में योगदान देने की प्रेरणा दी। इस मौके पर समस्त कॉलेज स्टाफ मौजूद रहा।

महम में चलाया प्रॉपर्टी टैक्स बकायेदारों के खिलाफ अभियान, एक लाख से ज्यादा वालों को दी चेतावनी

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
महम, 21 फरवरी। स्थानीय नगर पालिका प्रशासन ने प्रॉपर्टी टैक्स अदा न करने वाले लोगों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी गई है। शुक्रवार को उन बकाएदारों के खिलाफ कार्रवाई की गई जिससे लाखों रुपए टैक्स बकाया था। नपा सचिव नवीन नांदल के नेतृत्व में चलाए गए अभियान में 178682 रुपए की रिकवरी की गई। सचिव ने बताया कि इसके अलावा 4 बकायेदारों को सोमवार तक का समय दिया गया है। अगर इस अवधी में वे टैक्स अदा नहीं करते हैं तो प्रॉपर्टी सील की जाएंगी। नपा एमई अशोक हुड्डा ने बताया कि ऐसी काफी प्रॉपर्टी मालिकों की पहचान की गई है। जिसकी तरफ लाखों रुपए बकाया हैं। काफी मालिकों द्वारा समय मांगा गया है। समय की अवधि पूरी होने के बाद कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। अधिकारियों ने बकायेदारों से अति शीघ्र टैक्स अदा करने की अपील करते हुए कहा कि सीलिंग कार्रवाई से बचने के लिए जल्दी ही टैक्स अदा करें। इस अवसर पर टैक्स लिपिक तीर्थ राम,आशिष,सूरज, संजय आदि मौजूद रहे। नपा सचिव ने बताया कि अभियान के पहले दिन किसी भी प्रॉपर्टी को सील नहीं किया गया है। जिन लोगों के एक लाख से अधिक टैक्स बकाया है उनको चेतावनी दी गई है। सोमवार को ऐसे काफी लोग टैक्स जमा करा सकते हैं।

लोगों को सिरदर्द दे रहे लाउड स्पीकर

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
महम, 21 फरवरी। शहर में रेहड़ी, फड़ी लगाने वाले,कुछ वाहन चालकों व दुकानदारों द्वारा सामान बेचने के लिए लाउड स्पीकरों का प्रयोग किया जा रहा है। जिसके कारण आम लोगों व दूसरे दुकानदार परेशान हो रहे हैं। लेकिन प्रशासन इस बारे में बेखबर है। शहरवासियों का कहना है कि कोई भी व्यक्ति इस तरह लाउड स्पीकर का प्रयोग नहीं कर सकता। यह सरासर नियमों का उल्लंघन है इस पर प्रशासन ने कार्रवाई करनी चाहिए। इसके कारण शहर में शोर प्रदूषण चरम पर है। लोग बहरेपन का शिकार हो रहे हैं। नियमों की जानकारी रखने वाले लोगों का कहना है कि लाउड स्पीकर किसी विशेष कार्यक्रम पर एसडीएम कार्यालय से ली गई अनुमति के बाद ही निश्चित समय व सीमित आवाज में बजाया जा सकता है। इसको बजाने की अनुमति लेने के लिए ठोस कारण होना आवश्यक है। अनुमति सिर्फ कुछ ही घंटों के लिए मिल सकती है। अनुमति की अवधि समाप्त होते ही बंद करना आवश्यक है। अन्यथा बिना किसी इजाजत के लाउडस्पीकर का प्रयोग करना अपराध की श्रेणी में आता है। शहरवासियों ने नगर पालिका प्रशासन से इन पर तुरंत रोक लगाने की गुहार लगाई है। इस बारे में नपा सचिव नवीन नांदल का कहना है कि सोमवार से ऐसे लोगों के खिलाफ अभियान चलाकर लाउडस्पीकर जब्त कर उनके खिलाफ कार्रवाई अमल में लाया जाएगा।

74वीं वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का भव्य शुभारंभ

हरियाणा वाटिका/प्रवीण वालिया
करनाल, 21 फरवरी। आज दयाल सिंह कॉलेज, करनाल में दो दिवसीय 74वीं वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ कॉलेज के पूर्व छात्र एवं करनाल के विधायक श्री जगमोहन आनंद के कर कमलों से हुआ। अपनी दैनिक व्यस्तताओं के बीच से मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे श्री जगमोहन आनंद का कॉलेज की प्राचार्या डॉ. आशिमा गक्खड़ और खेलकूद समिति के सदस्यों ने पुष्पमाला पहनाकर और स्मृति चिह्न भेंट कर भव्य स्वागत किया। माननीय मुख्य अतिथि द्वारा ध्वजारोहण के बाद एनसीसी कैडेट्स और एनएसएस स्वयंसेवकों ने मार्च पास्ट किया, जिसका नेतृत्व बीसीए अंतिम वर्ष के एनसीसी आर्मी विंग के सीनियर अंडर ऑफिसर प्रिंस ने किया। बीए छठे सेमेस्टर के होनहार छात्र निखिल के नेतृत्व में खिलाड़ियों ने खेल भावना को बनाए रखने और ईमानदारी से प्रतिस्पर्धा करने की शपथ भी ली।
प्राचार्या डॉ. आशिमा गक्खड़ ने अपने स्वागत भाषण में मुख्य अतिथि व अन्य गणमान्यों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि खेल किसी भी शिक्षण संस्थान का अभिन्न अंग होते हैं। उन्होंने खेलों के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि ये हमारे समग्र विकास और स्वस्थ जीवनशैली को सुनिश्चित करने में मदद करते हैं। साथ ही, ये हमें अनुशासन और सामूहिक भावना से परिपूर्ण भी करते हैं।

भाजपा नेता ने सीसर खास गांव में खुला दरबार लगा सुनी समस्याएं

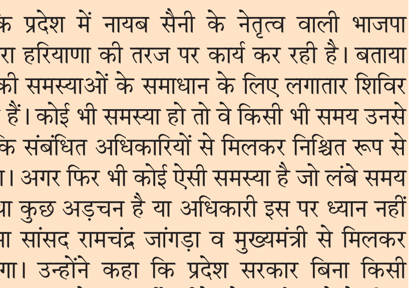

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
महम, 21 फरवरी। स्थानीय भाजपा नेता एवं उत्तरे रेलवे बोर्ड के सदस्य अजीत अहलावत खंड के गांव सीसर खास में ग्रामीणों की समस्याएं सुनने के लिए खुले दरबार का आयोजन किया गया। अजीत अहलावत ने कहा कि प्रदेश में नायब सैनी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार नॉन स्टॉप म्हारा हरियाणा की तरज पर कार्य कर रही है। बताया कि क्षेत्र में हर प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए लगातार शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। कोई भी समस्या हो तो वे किसी भी समय उनसे मिल सकते हैं। कहा कि संबंधित अधिकारियों से मिलकर निश्चित रूप से समाधान कराया जाएगा। अगर फिर भी कोई ऐसी समस्या है जो लंबे समय से चली आ रही है तथा कुछ अड़चन है या अधिकारी इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं तो राज्य सभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा व मुख्यमंत्री से मिलकर समाधान कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार बिना किसी भेदभाव , बिना किसी भ्रष्टाचार के पारदर्शी तरीके से कार्य करने के लिए कृतसंकल्प है। कार्यक्रम में लोगों ने गलियों आदि की समस्या उनके सामने रखी जिसका मौके पर ही अधिकारियों से बात कर समाधान कराया गया। इस अवसर पर रविंद्र भराण,राकेश कुमार, पवन फौजी,मंदीप सिंह,राधे श्याम, अशोक गुप्ता आदि अनेक गणमान्य मौजूद रहे।

राब, नकदी, पेड व फेक न्यूज आदि पर प्रशासन की रहेगी कड़ी नजर

चुनाव खर्च सीमा 30 लाख व 7.5 लाख रुपए निर्धारित

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
हिसार, 21 फरवरी। नगर निगम हिसार व नगर पालिका नारनौंद में 2 मार्च को होने वाले चुनावों को लेकर चुनावी खर्च पर्यवेक्षक पुनीत शर्मा ने अधिकारियों की बैठक ली। इस मौके पर डीईटीसी तरुणा लाम्बा, एओ अशोक कुमार नेहरा एवं जगबीर सिंह मौजूद रहे।
चुनावी खर्च पर्यवेक्षक पुनीत शर्मा ने बताया कि नगर निकाय चुनाव शांतिपूर्ण तथा निष्पक्ष तरीके से करवाने के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैद है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि नगर निगम हिसार व नगर पालिका नारनौंद में चुनाव आयोग के निदेर्शों की पूरी तरह से पालना की जाए। उन्होंने बताया कि नगर निगम मेयर के लिए चुनाव खर्च सीमा 30 लाख रुपए तथा पार्षद के लिए 7.5 लाख रुपए निर्धारित की गई है। उन्होंने कहा कि आयोग की हिदायतों अनुसार नगर निगम के मेयर व पार्षदों के प्रत्याशियों के चुनाव खर्च का मिलान किया जाएगा। चुनावी खर्च पर्यवेक्षक पुनीत शर्मा ने कहा कि सभी चुनाव उम्मीदवार अपने किए गए खर्च का ब्यौरा बैंकिंग सिस्टम के तहत ही दर्शाएगें। सभी चुनाव लड? वाले उम्मीदवारों को चुनाव खर्च का पूरा ब्यौरा चुनाव परिणाम घोषित होने के 30 दिन के अंदर-अंदर देना होगा। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान अधिकारी हर प्रकार की गतिविधि पर पैनी नजर रखेंगे। अगर कहीं भी शराब व पैसे वितरण की शिकायत मिले तो तुरंत कार्रवाई की जाए।
चुनावी खर्च पर्यवेक्षक पुनीत शर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि चुनाव के दौरान पेड न्यूज तथा फेक न्यूज पर भी कड़ी निगरानी रखी जाए। इसके अलावा स्टेटिक सर्विलांस टीम भी हर चीज पर कड़ी नजर रखे। सभी वार्डों के हिसाब से अलग-अलग चुनावी खर्च निगरानी एवं अकाउंटिंग टीमों का गठन किया गया है। सभी चुनाव उम्मीदवार अपने-अपने चुनाव खर्च का सही ब्यौरा नोटिफाइड लिस्ट के तहत सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने बताया कि इसी क्रम में 24, 26 व 28 फरवरी को अगली बैठकों का आयोजन किया जाएगा।

बिजली चोरी पकड़ने गई बिजली निगम की टीम पर हमला, बंधक बनाया

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
बहल, 21 फरवरी। बिजली चोरी पकड़ने को गई बिजली निगम की टीम को गांव सलेमपुर में एक ही परिवार के लोगों ने हमला किया और बंधक भी बनाया गया है और आरोपितों के खिलाफ बिजली निगम के सहायक महाप्रबंधक की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। खंड के गांव सलेमपुर में वकील के घर पर बिजली चोरी छापा मारने बिजली निगम की गई टीम पर घरवालों ने हमला बोल दिया और टीम के साथ हाथापाई की गई न केवल बंधक बना कर रखा गया बल्कि टीम के सदस्यों को आरोपित लोगों ने जान से मारने की धमकी दी व सरकारी काम में बाधा डाली गई। पुलिस सहायता के लिए 112 डायल कर मौके पर बुलाकर बिजली निगम की टीम ने जान बचाई। मामले का संज्ञान में लेते हुए विद्युत निगम के सहायक महाप्रबंधक नारायण प्रसाद की शिकायत पर बहल थाना पुलिस में आरोपित एक ही परिवार के 4 लोगों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की आधा दर्जन विभिन्न धारा में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस को दी गई शिकायत में सहायक महाप्रबंधक नारायण प्रकाश ने बताया है कि शुक्रवार को बिजली कर्मियों की एक टीम का गठन कर गांव सलेमपुर में बिजली चोरी पकड़ने का अभियान चलाया गया था। जब बिजली कर्मी आरोपित वकील, ओमप्रकाश, रामा व रुपेन्द्र सभी पुत्र चेतराम वासी सलेमपुर के घर पर छापामारी की तो इन लोगों ने पहले बिजली निगम की टीम के साथ हाथापाई की, गाली गलोच किया, धक्का मुक्की की, वीडियो बनाने पर रोका गया, आधा पौने घंटा से अधिक तक घर में बंधक बनाकर रखा गया, टीम को जान से मारने की धमकी, नौकरी छुड़वाने, झूठे केस मे फंसाने की धमकियां दी गई। यही नहीं आरोपित लोगों ने सरकारी कार्य में पूरी तरह से बाधा डाली और टीम के सदस्यों को चोटें भी लगी हैं। एसडीओ ने शिकायत में यह भी बताया है कि पुलिस डायल 112 के सामने भी विद्युत निगम की टीम के साथ अभद्र व्यवहार किया। एसडीओ नारायण प्रकाश ने बताया कि विद्युत निगम की टीम में अकबर कनिष्ठ अभियंता, रोहित कनिष्ठ अभियंता,, सुनिल लाइनमैन, सत्यपाल लाइनमैन, प्रदीप सहायक लाइनमैन सब डिविजन ढिगावा आदि थे। जो विभागीय आदेश व निदेर्शानुसार निष्ठा पूर्वक अपनी ड्यूटी का निर्वहन कर रहे थे। विद्युत निगम अधिकारी ने पुलिस को कानूनी कार्रवाई करने को शिकायत दी थी। जिस पर पुलिस ने विभिन्न धाराओं में आरोपितों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है और और जांच पड़ताल में लगे हैं ।

सिवानी में चेयरपर्सन के लिए 8 उम्मीदवार आमने सामने, 15355 वोटर करेंगे फैसला

हरियाणा वाटिका/सीमा भट्ट
सिवानीमंडी, 21 फरवरी। नगर पालिका चुनाव को लेकर चेयरपर्सन पद के लिए आठ उम्मीदवार अब चुनाव मैदान में रह गए हैं जिन्होंने चुनाव निशान मिलने के बाद अपना चुनाव प्रचार प्रसार भी जोर-शोर से शुरू कर दिया और पूरा शहर चुनावी माहौल में डूबता नजर आ रहा है, क्योंकि हर गली मोहल्ले में एक नहीं अनेक ऑटो रिक्शा चुनाव प्रचार प्रसार कर लोगों के कान बहरे कर रहे हैं, हालांकि कान बहरे करने वाले सभी माइक ने अपनी अनुमति ले रखी है लेकिन जिस प्रकार से चुनाव 2 मार्च नजदीक आ रहे थे और शोरगुल और तेज होता जा रहा है। गुरुवार के दिन चुनाव लड़ने वाले लोग अपने चुनावी व्हीकल व अन्य गाड़ियों की परमिशन लेते नजर आए ऐसे में नगर पालिका और तहसील परिसर के बार-बार चक्कर लगाने पड़ रहे थे। नगर पालिका चेयरपर्सन के आठ उम्मीदवार है वही 16 वार्डों में 15 वार्ड में 49 उम्मीदवार चुनाव मैदान में ताल ठोक रहे हैं । वार्ड 9 से दीचचन्द निर्विरोध चुने जा चुके हैं। नगर पालिका सिवानी के तहत 15355 मतदाता आते हैं जिसमें 8075 पुरुष है वही 7280 महिला मतदाता शामिल हैं।

किसकी क्या है योग्यता-

पूजा रानी योग्यताः	बीए एमडीयू रोहतक
अनु लोहिया योग्यताः	12 वीं हरियाणा बोर्ड,भिवानी
वंदना केडिया योग्यताः	एमए इक्रोमिक्स, पंजाब विश्वविद्यालय
तरनुम योग्यताः	मास्टर ऑफ मेनेजमेंट, पंजाब विश्वविद्यालय
गोलूरानी योग्यताः	मास्टर इन आटर्स
रमा देवी योग्यताः	10 वीं हरियाणा बोर्ड
मणी देवी योग्यताः	12वीं हरियाणा बोर्ड

किसकों क्या मिला है निशान
वंदना देवी को जहां घड़ी का निशान मिला है वही गोलू रानी को टार्च का निशान मिला है । पूजा रानी को कुर्सी का निशान, अनु अमित लोहिया को बस का निशान मिला है। आम आदमी पार्टी को पार्टी के अनुसार झाड़ू का निशान मिला है विधा कोठारी को फावड़ा यानी कस्सी का निशान मिला है । रमा देवी को रोड रोलर व तरन्नुम अग्रवाल को मटका मिला हैं।
वार्ड नंबर 1 से सुनील कुमार जाजुदा छाता
मांगे राम ने साइकिल इस वार्ड में वोट 1001 मेल 516 फिमेल 485 सामान्य वर्ग,
वार्ड-2 से दीपक थापन कार ,प्रणव गोयल शंख, मोहित कुमार फावडा बेलचा , लीलावती छाता मिला वही वोट 1237 मेल 556 फिमेल 581 सामान्य वर्ग,
वार्ड-3 में नरेश कुमार आटो रिक्शा, संजय कुमार छाता, सन्ता सिंह उगता सूरज, सुरेन्द्र सिंह साइकिल मिला वही वोट 933 मेल 489 फिमेल 444 एससी वर्ग
वार्ड-4 से प्रीती साइकिल, बिन्दू तीर कमान, सुनीता कुमारी छाता निशान मिला वही वोट 984 मेल 520 फिमेल 464 एससी महिला वर्ग
वार्ड-5 से ज्योति बादल साइकिल, नीलम छत का पंखा, मीना देवी तराजू, राम भतेरी छाता मिला वही वोट 965 मेल 510 फिमेल 455 एससी महिला वर्ग,
वार्ड -6 में अनिल कुमार साइकिल, ईश्वर छाता वही वोट 581 मेल 303 फिमेल 278 एससी वर्ग हैं। वार्ड नंबर 7 ममता साइकिल, सपना छाता, सुष्मा देवी दीवार घडी का निशान मिला वही वोट 1024 मेल 541 फिमेल 483 सामान्य वर्ग महिला
वार्ड-8 आनन्द जांगडा साइकिल, नरसी प्रजापत छाता, मोहन लाल उगता सूरज, राजेश जांगडा टेबल लैंप मिला वही वोट 734 मेल 375 फिमेल 359 बीसी वर्ग
वार्ड 9 से दीपक वशिष्ठ निरविरोध चुने गए वही वोट 792 मेल 414 फिमेल 378 सामान्य वर्ग, वार्ड 10 से अंकित कुमार ग्रोवर दो पतिया, भीम सिंह साइकिल राहूल खटक जीप का निशाल मिला वही वोट 779 मेल 411 फिमेल 368 सामान्य वर्ग है। वार्ड 11 से पुरूषोतम साइकिल, मनीष कुमार तीर कमान रामबिलास छाता वोट 959 मेल 485 फिमेल 474 एससी वर्ग के लिए है। वार्ड 12 में कान्ता छत का पंखा, निशा रानी सिलाई मशीन, प्रियंका ताला चाबी वही वोट 1119 मेल 580 फिमेल 539 बीसी महिला वर्ग है वही वार्ड 13 कमलेश कार ,मामो देवी साइकिल, सरोज दलाल रेल का इंजन सिलोचना सिलोई मशीन मिला वही वोट 729 मेल 389 फिमेल 340 सामान्य वर्ग महिला है। वार्ड 14 से देवेन्द्र कुमार जीप,नरेन्द्र कुमार उगता सूरज,प्रताप सिंह फावडा वेलचा, प्रमोद कुमार आटो रिक्शा, महेन्द्र कुमार ढांडा छाता व सुभाष बिश्नोई साइकिल मिला वही वोट 1320 मेल 726 फिमेल 594 सामान्य वर्ग है। वार्ड 15 से सुमन सोनी उगता सूरज हेमलता साइकिल वोट 965 मेल 510 फिमेल 455 सामान्य वर्ग महिला है वही वार्ड 16 कुलदीप देहडू जग जगदीश भांभू साइकिल वोट 921 मेल 483 फिमेल 438 सामान्य वर्ग है।

सरकार ने नहीं बदला रवैया तो किसान एक दिन सरकार ही बदल देगा : विक्रम कसाना

कहा : किसान पहले भी आंदोलनरत था और आज भी आंदोलनरत

हरियाणा वाटिका/विकास कुमार
कैथल, 21 फरवरी। युवा भाकियू चढूनी हरियाणा प्रदेशाध्यक्ष अधिवक्ता विक्रम कसाना आरोप लगाते हुए कहा कि किसान पहले भी आंदोलनरत था और आज भी आंदोलनरत है पर भाजपा सरकार अपने वायदों पर खरी नहीं उतरी है, सच तो ये है कि भाजपा सरकार में सबसे ज्यादा किसान उपेक्षा का शिकार है। उन्होंने कहा कि किसान आज भी खाद-बीज और अन्य सुविधाओं के लिए लाइनों में लगा हुआ है और रही सही कसर किसानों को अपनी फसलें बेचने के लिए सडकों पर उतरना पड़ रहा है, लेकिन सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंग रही है। सरकार किसानों को विश्वास में लेकर बातचीत के माध्यम से उनकी समस्याओं का समाधान करे। कस्बे में बस स्टैंड के पास स्थित भाकियू कार्यालय में बातचीत करते हुए किसान नेता विक्रम कसाना ने हरियाणा-पंजाब के खनौरी बॉर्डर पर किसान अपनी मांगों को लेकर आज भी आंदोलनरत है।

अगर सरकार ने अपना रवैया न बदला तो एक दिन देश का किसान सरकार ही बदलकर रख देगा। अगर भाजपा सरकार अपने ही आंकड़ों को देखकर उसे दोगुना करने की बात कर रही है तो क्या किसानों के साथ अन्याय और धोखा नहीं है? हालात ये है कि किसान के लिए एक महीना गुजारना मुश्किल है, उसे नहीं पता अगले महीने या फिर पांच महीने बाद वो क्या करेगा। विक्रम कसाना ने कहा कि किसान जानता है कि भाजपा सरकार एक जुमलेबाज सरकार है। केंद्र सरकार की तानाशाही के चलते अन्नदाता किसान चौतरफा संकटों से घिरा हुआ है। यह सरकार किसानों की समस्याओं के प्रति पूरी तरह उदासीन है। किसानों को लेकर हमेशा इस सरकार का रवैया उपेक्षापूर्ण रहा है। भाजपा सरकार की नीतियां किसान विरोधी और शोषणकारी है। उन्होंने कहा कि किसानों का हर स्तर पर शोषण हो रहा है। पूरे देश का किसान भाजपा के झूठ और लूट को समझ चुका है। अब किसान इस सरकार को बर्दास्त नहीं करेगा। एक ओर किसान धरना प्रदर्शन कर अपनी बात सरकार तक पहुंचाना चाहता है तो दूसरी ओर आवाज उठाने पर किसानों को गिरफ्तारी कर उन्हें जेल में डाला जाता है या लाठियां भांजकर उनकी आवाज दबाई जाती है। जिस कारण किसानों में सरकार के प्रति भारी आक्रोश है। किसान नेता विक्रम कसाना ने मांग करते हुए कहा कि सरकार बिना देरी किए किसानों की मांगों को पूरा करें, नहीं तो किसान सरकार के खिलाफ आर-पार की लड़ाई का बिगुल बजा देंगे।

पंचायत में नहीं हो पाया रास्ते के विवाद का समाधान, अब बाढड़ा में बुलाई जाएगी पंचायत

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
बहल, 21 फरवरी। ब्राह्मण सभा सिंदोलिया खाप चौरासी की पंचायत प्रधान पंडित मा.अमरचंद शर्मा चैहड़कलां की अध्यक्षता में गांव बेरला में संपन्न हुई और बैठक में रास्ते के विवाद के निपटारे को लेकर आयोजित की गई थी। जिसमें रास्ते का विवाद हल नहीं हो पाया, तो इसके लिए सभा ने जल्द ही बाढड़ा ब्राह्मण सभा की बाढड़ा धर्मशाला में बैठक बुलाकर समाधान करेगी। सिंदोलिया खाप चौरासी महासचिव मा. अतरसिंह भांडवा ने बताया कि गांव बेरला में सभा अध्यक्ष मा. अमर चन्द शर्मा की अध्यक्षता में डा. विनोद शर्मा के आवास पर आयोजित पंचायत में बेरला गांव के रास्ते की समस्या को लेकर विचार विमर्श किया गया। यह पंचायत दोनों पक्षों की सहमति लेकर रखी गई लेकिन किसी कारणवश एक पक्ष से डा. महेश कुमार उपस्थित नहीं हुए जिसके बाद एक ही पक्ष की बातें सुनी गई। दूसरे पक्ष को अपनी बातें रखने के लिए तीन व्यक्तियों को जिम्मेवारी सौंपी गई जो बेरला कन्नी के उपाध्यक्ष हैं। दोनों पक्षों से मिलकर सुविधानुसार आगामी पंचायत ब्राह्मण भवन बाढड़ा में होगी जिसमें सर्व समाज के पदाधिकारियों से सांझा मशवरा कर रास्ते की समस्या का फैसला हो सके। पंचायत की कार्यवाही का संचालन महासचिव अत्तर सिंह भांडवा ने किया। पंचायत में रामेश्वर बेरला, सरपंच सीताराम शर्मा, छात्र नेता विजय मोटू, लक्ष्मीनारायण, पारस, विजय, अरुण शर्मा, चंद्रभान सिंह, अमित कुमार, नेकीराम रामप्रताप, कपूर सिंह, प्रताप, महावीर सिंह, सीताराम सरपंच, रामनाथ, पवन रमेश, सत्यव्रत, तरसेम, जयप्रकाश, देवेन्द्र, वेदप्रकाश सुरेन्द्र, जयवीर, राकेश इत्यादि मौजूद रहे।

गुजवि शोधार्थी नविता को मिला राष्ट्रीय गौरव सम्मान

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
हिसार, 21 फरवरी। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की पीएचडी शोधार्थी नविता को राष्ट्रीय गौरव सम्मान 2025 से नवाजा गया है। विलक्षणा फाउंडेशन के सातवें वार्षिक उत्सव में यह सम्मान राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा, हरियाणवी अभिनेत्री सुमन सेन और हरियाणवी फिल्म निमार्ता, निर्देशक हरविंद्र मलिक द्वारा दिया गया।
विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने शोधार्थी नविता एवं हिंदी विभाग को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा है कि यह उपलब्धि नविता तथा विभाग के लिए एक गौरवपूर्ण उपलब्धि है। इससे प्रेरणा लेकर नविता को इस क्षेत्र में और अधिक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। कुलसचिव डॉ. विजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय के लिए यह एक बहुत ही गौरवपूर्ण उपलब्धि है। विश्वविद्यालय के अन्य शोधार्थियों को भी इस उपलब्धि से प्रेरणा मिलती है। हिन्दी विभगाध्यक्ष प्रो. एन.के. बिश्नोई, प्रभारी डॉ. गीतू धवन, सहायक प्राध्यापिका डॉ. शर्मिला, डॉ. कल्पना और शोधार्थियों ने भी शोधार्थी नविता को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी। फाउंडेशन की ओर से दो महीने पहले देश भर से आवेदन मांगे गए थे, जिसमें हरियाणा से शिक्षा, साहित्य में शोध के लिए नविता का चयन किया गया। यह सम्मान शोधार्थी नविता को शिक्षा, शोध एवं साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय एवं अद्वितीय योगदान के लिए दिया गया। उनके सांस्कृतिक चेतना पर किए गए कार्यों ने समाज को एक नई दिशा दी है और समाज को हरियाणवी संस्कृति के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया है। शोधार्थी नविता ने अपनी इस उपलब्धि का श्रेय अपने गुरुजनों को दिया। शोधार्थी नविता पंडित लखमीचंद और पंडित जगन्नाथ के लोक साहित्य पर अपना शोध कार्य कर रही हैं। शोधार्थी नविता ने बताया कि उनके जीवन का लक्ष्य हरियाणवी संस्कृति के प्रति लोगों को जागृत करना और हरियाणा की संस्कृति एवं मूल्यों का प्रचार एवं प्रसार पूरी दुनिया में करना है।
चित्र परिचय : गुजवि में शोधार्थी नविता व विभाग के शिक्षक पुरस्कार के साथ कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई से मिले। 21 हिसार 06

संयम गुप्ता की जीत सुनिश्चित, जनता का विश्वास अटूट : नरेश सिंगला

हरियाणा वाटिका/राहुल
सीवन, 21 फरवरी। प्रमुख समाजसेवी नरेश सिंगला ने कहा कि सीवन की जनता जिस प्रकार नगर पालिका चेयरपर्सन पद की उम्मीदवार संयम गुप्ता के समर्थन में उत्साह दिखा रही है, वह यह स्पष्ट करता है कि उनकी जीत अब केवल औपचारिकता भर रह गई है। उन्होंने कहा कि संयम गुप्ता केवल एक प्रत्याशी नहीं, बल्कि जनता की उम्मीदों का चेहरा हैं, जिनकी प्राथमिकता नगर का चहुंमुखी विकास है। वे हर वर्ग और हर क्षेत्र के उत्थान के लिए पूरी तरह समर्पित हैं। जनता जिस तरह से उन्हें अपना समर्थन दे रही है वह दशार्ता है कि बदलाव का समय आ गया है। नरेश सिंगला ने कहा कि सीवन को अब एक ऐसे नेतृत्व की जरूरत है, जो न केवल वायदे करे, बल्कि उन्हें पूरी ईमानदारी से पूरा भी करे। संयम गुप्ता की कार्यशैली पारदर्शिता और जवाबदेही पर आधारित होगी। वे हर नागरिक की समस्याओं को गंभीरता से लेंगी और त्वरित समाधान निकालेंगी। उनकी योजनाओं में स्वच्छता, सडक निर्माण, जलापूर्ति, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का व्यापक सुधार शामिल है। उन्होंने कहा कि जनता को अब ऐसे नेता की आवश्यकता है, जो हर वर्ग को साथ लेकर चले और भेदभाव रहित विकास करे। संयम गुप्ता की सोच यही है कि सीवन को प्रदेश के अग्रणी नगरों में शामिल किया जाए। उनकी योजनाएं वास्तविक और धरातल पर लागू होने योग्य हैं, जिससे जनता को जल्द ही सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेगा। नरेश सिंगला ने कहा कि इस बार का चुनाव केवल एक पद के लिए नहीं, बल्कि पूरे नगर के उज्जवल भविष्य के लिए लड़ा जा रहा है, और जनता का समर्थन यह साबित करता है कि लोग संयम गुप्ता को अपनी सेवा का अवसर देना चाहते हैं। सीवन नगरपालिका चेयरपर्सन पद की उम्मीदवार व प्रमुख समाज सेविका संयम गुप्ता ने कहा कि राजनीति में आने का मेरा मकसद सिर्फ और सिर्फ जनता की सेवा करना है। मेरा उद्देश्य सीवन को एक ऐसा नगर बनाना है, जहां हर व्यक्ति को बेहतर जीवन मिले। मैं किसी पद के लिए नहीं, बल्कि समाज को आगे बढ़ाने के लिए चुनाव लड़ रही हूं। मैं चाहती हूं कि हर नागरिक को मूलभूत सुविधाएं मिलें और कोई भी विकास से वंचित न रहे। मेरा संकल्प है कि नगर में हर गली और हर मोहल्ले तक स्वच्छ जल, अच्छी सडकें और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचे। उन्होंने आगे कहा कि सीवन को एक विकसित और आत्मनिर्भर नगर बनाना मेरी प्राथमिकता होगी। मैं जनता की राय लेकर योजनाएं तैयार करूंगी, जिससे हर व्यक्ति की आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जा सके। मेरा प्रयास रहेगा कि नगर में सफाई व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त हो, यातायात की स्थिति बेहतर बने और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ें। पारदर्शिता और जवाबदेही मेरी कार्यशैली का मुख्य आधार होंगे, जिससे जनता को हर कार्य की पूरी जानकारी मिले। संयम गुप्ता ने यह भी कहा कि नगर के विकास के लिए मैं दिन-रात काम करने के लिए तैयार हूं। जनता का जो समर्थन मुझे मिल रहा है, वह मेरी ताकत है और मैं इसे सीवन के भविष्य को संवारने में लगाऊंगी। मेरा मकसद सिर्फ चुनाव जीतना नहीं, बल्कि जनता की उम्मीदों पर खरा उतरना है। अगर मुझे सेवा का मौका मिलता है, तो मैं हर नागरिक की समस्याओं को प्राथमिकता से हल करूंगी और सीवन को एक आदर्श नगर बनाऊंगी, जिस पर हर निवासी को गर्व हो। इस अवसर पर उनके साथ सैकड़ो की संख्या में उनके समर्थक उपस्थित रहे।

इंटर कॉलेज यूथ फेस्टिवल में अग्रोहा मेडिकल ने सात पदक कब्जाए

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
हिसार, 21 फरवरी। श्री गुरु गोबिंद सिंह त्रिशताब्दी विश्वविद्यालय गुरूग्राम द्वारा आयोजित युवा महोत्सव जेनेसिस में शानदार प्रदर्शन करते हुए महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज अग्रोहा के विद्यार्थियों ने सात पदक अपने नाम किए।

प्रशासनिक निदेशक डॉक्टर आशुतोष शर्मा ने बताया कि महाविद्यालय से विभिन्न प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने भाग लिया था जिसमें हमारी सभी टीमें विजयी होकर वापस लौटी हैं जो हम सबके लिए गर्व का विषय है। डॉ आशुतोष शर्मा ने सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए इसी प्रकार आगे बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित किया। इस मौके पर पूर्व सांसद जनरल डीपी वत्स ने कहा कि अग्रोहा मेडिकल के युवा अनंत संभावनाओं से भरे हुए हैं और पढ़ाई के साथ साथ खेलों व अन्य प्रतियोगिताओं में पदक जीतकर उन्होंने अपने अनुशासन, बेहतरीन टीम नेतृत्व और एकजुटता का परिचय दिया है इसके लिए ये सभी बधाई के पात्र हैं। महाविद्यालय निदेशक डॉक्टर अलका छाबड़ा ने सभी विजेताओं को बधाई दी है। एसजीटी यूनिवर्सिटी गुरुग्राम में 18–20 फरवरी तक आयोजित जेनेसिस युवा महोत्सव में अग्रोहा मेडिकल कॉलेज से सात प्रतियोगिताओं में भाग लिया गया था, जिसमें मनोरोग विभाग से पीजी डॉ अभिषेक ने शतरंज में तो वहीं एमबीबीएस की छात्रा जाह्नवी सिंह ने काव्य पाठ व डिबेट में जाह्नवी व सुमित ने संयुक्तरूप से स्वर्ण पदक प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम चमकाया। वहीं फुटबाल, बास्केटबॉल और बैडमिंटन की टीमों ने भी स्वर्ण पदक और वॉलीबॉल की टीम ने रजत पदक अपने नाम कर ट्रॉफी पर कब्जा जमाया।

अवैध कनेक्शन को लेकर जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग आया एक्शन मोड में,काटे अवैध कनेक्शन

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर
रतिया, 21 फरवरी। शहर भर में अवैध कनेक्शन को लेकर जन स्वास्थ्य विभाग अभियांत्रिकी विभाग एक्शन मोड में आ गया है जिसको लेकर आज रतिया के टिब्बा कॉलोनी व ग्राम पंचायत खुम्बर में खाली प्लाटो सब्जी बीजने के लिए लगाए गए अवैध कनेक्शन को काटा जा रहा है।

जानकारी देते हुए जिला सलाहकार शर्मा चंद् लाली ने बताया कि अवैध कनेक्शन को लेकर जन स्वास्थ्य विभाग समय–समय पर अभियान चलता रहता है जिसको लेकर आज रतिया की टिब्बा कॉलोनी में खाली प्लाटो में सब्जी बीज रहे अवैध कनेक्शन को काटा गया है उन्होंने कहा कि पीने योग्य पानी को सब्जी या किसी अन्य फसल में बर्बाद नहीं होने दिया जाएगा उन्होंने बताया कि शहर भर में यह अभियान लगातार जारी रहेगा और खाली प्लाटों में अवैध कनेक्शन कर जो लोग सब्जियां भेज रहे हैं उनके कनेक्शन जल्द से जल्द काटे जाएंगे। उन्होंने बताया कि पहले भी अमृत तू के तहत रतिया शहर में जल चौपाल लगाकर लोगों को पानी बचाने व अवैध कनेक्शन न लगाने को लेकर जागरूक किया गया था जिसके अंतर्गत अब जन स्वास्थ्य विभाग खाली प्लाटों में पीने योग्य पानी सब्जियों व अन्य फसल में लगा रहे हैं उनके सभी अवैध कनेक्शन को काटा जाएगा।

23 फरवरी को अटल पार्क में स्प्रिंग फेस्टिवल का आयोजन: धर्मवीर

हरियाणा वाटिका/ प्रवीण वालिया
करनाल, 21 फरवरी। हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण की ओर से 23 फरवरी, रविवार को राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर– 44 पर स्थित अटल पार्क में 21वें स्प्रिंग फेस्टिवल–2025 का आयोजन किया जाएगा। इसमें अतिरिक्त उपायुक्त यश जालुका बतौर मुख्य अतिथि प्रातः 10.30 बजे स्प्रिंग फेस्टिवल का उद्घाटन करेंगे। इसी दिन सांय 04.30 बजे नगर निगम करनाल के संयुक्त निदेशक देवेंद्र शर्मा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित करेंगे।

यह जानकारी हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के अधीक्षक अभियंता धर्मवीर ने दी। उन्होंने बताया कि हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण द्वारा फूलों की खेती के प्रति आम जनता में जागरूकता लाने के उद्देश्य से बसंत महोत्सव 2025 का आयोजन किया जा रहा है जिसमें विभिन्न किस्मों के फूलों को लेकर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा और विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा। इसके अलावा रंगोली, मेंहदी, पेंटिंग प्रतियोगिताएं भी आयोजित करवाई जाएंगी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। इन प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए मोबाईल नंबर 8059575762 व 7206777997 पर संपर्क करें।

महाशिवरात्रि पर प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा स्वास्थ्य शिविर व सर्वधर्म सम्मेलन होगा आयोजित

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
तोशाम, 21 फरवरी। प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय शाखा तोशाम द्वारा महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में स्वास्थ्य शिविर व सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए शाखा प्रभारी बी के मंजू ने बताया कि 22 व 23 फरवरी को स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया जाएगा जिसका समय सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक रहेगा तो शाम को 5 बजे से 7 बजे तक रहेगा। उन्होंने बताया कि 26 फरवरी को शाम 4 बजे से 6 बजे तक स्थानीय पंजाबी धर्मशाला में सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। उनका कहना था कि इन कार्यक्रमों के लिए खास तौर पर संस्था के मुख्यालय माउंट आबू से ब्रह्मकुमारी जमीला बहन तोशाम की पावन धरा पर पहुंच रही हैं। जोकि एक विख्यात प्राकृतिक चिकित्सक और मशहूर वक्ता तथा वैज्ञानिक हैं। वहीं संस्थान के राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के मेडिकल विंग के द्वारा चलाए गए मेरा भारत स्वस्थ भारत अभियान के मुख्य वक्ताओं में से यह एक हैं।

पीसी एंड पीएनडीटी एक्ट के अन्तर्गत वर्कशॉप का आयोजन

हरियाणा वाटिका/प्रवीण वालिया
करनाल, 21 फरवरी। जिला समुचित प्राधिकरण के चेयरपर्सन एवं सिविल सर्जन डॉ लोकवीर की अध्यक्षता में पीसी एण्ड पीएनडीटी एक्ट के अन्तर्गत एक वर्कशॉप का आयोजन कर्ण लेक करनाल के कॉन्फ्रेंस हॉल में किया गया। वर्कशॉप में सीएम सेल हरियाणा से जी.एल.सिंघल ने मुख्य अतिथि के तौर पर भाग लिया तथा जिला में पीसी एण्ड पीएनडीटी एक्ट के अन्तर्गत रजिस्टर्ड अल्ट्रासाउंड केंद्रों के ओनर व ऑपरेटर शामिल हुए। इसके अतिरिक्त जिला न्यायवादी डा0 पंकज भी इस वर्कशॉप में उपस्थित रहे। सिविल सर्जन डॉ लोकवीर ने बताया कि इस वर्कशॉप का मुख्य उद्देश्य पीसी एंड पीएनडीटी एक्ट के अन्तर्गत सभी रजिस्टर्ड केन्द्रों द्वारा पीएनडीटी एक्ट की पालना जैसे फॉर्म एफ को सही प्रकार से भरना, अपने केंद्र के रिकॉर्ड का सही रखरखाव, प्रत्येक माह की 5 तारीख तक अपने केंद्र की रिपोर्ट कार्यालय में भिजवाना इत्यादि रहे। इस वर्कशॉप में जी.एल. सिंघल द्वारा प्रेजेंटेशन के माध्यम से पीएनडीटी एक्ट के बारे में विस्तार से बताया गया तथा पीएनडीटी एक्ट के अंतर्गत होने वाले कोर्ट केसिज के बारे में भी चर्चा की गई। सिविल सर्जन करनाल तथा नोडल अधिकारी पीएनडीटी डा शीनू चौधरी द्वारा सभी केन्द्रों के ओनर व ऑपरेटरों को पीएनडीटी एक्ट व एमटीपी एक्ट की पालना करने तथा जिला के लिंगानुपात में सुधार करने हेतु अपना सहयोग देने बारे भी कहा गया। नोडल अधिकारी पीएनडीटी द्वारा बताया गया कि जिला करनाल में सबसे पहले गर्भवती महिलाओं के अल्ट्रासाउंड/एमटीपी के दौरान एमसीटीएस नम्बर लेना अनिवार्य किया गया था ताकि जिला में अवैध रूप से होने वाले गर्भपात अथवा अवैध लिंग जांच पर काबू पाया जा सके। उन्होंने बताया कि जिला में एमसीटीएस नम्बर लेना अनिवार्य करने के परिणामस्वरूप जिला का वर्ष 2024 का लिंगानुपात 926 होने पर जिला करनाल हरियाणा राज्य में तीसरे स्थान पर रहा है जोकि एक सराहनीय कदम है।

हकृवि का ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव पर कार्यक्रम संपन्न

कुलपति बोले, उद्यमिता से ग्रामीण महिलाएं अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर सकती हैं

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
हिसार, 21 फरवरी। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा गांव सरसौद में ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्य अतिथि रहे जबकि महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव स्नातक पाठ्यक्रम की एक उत्कृष्ट पहल है, जो छात्राओं को ग्रामीण समुदाय के साथ जोड? और ग्रामीण परिवेश में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का एक अनोखा अवसर प्रदान करता है। उन्होंने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सिलाई एवं कढ़ाई का अनुभव बहुत जरूरी है। उद्यमिता के माध्यम से ग्रामीण महिलाएं अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था एवं पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए महिलाओं को जागरूक किया जा रहा है। ऐसे कार्यक्रम ग्रामीण महिलाओं के ज्ञान, कौशल,

जागरूकता, निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास में परिवर्तन लाने के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। हकृवि इस दिशा में अहम भूमिका निभाते हुए महिलाओं के लिए विभिन्न तरह के प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें स्वरोजगार स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। यहां से प्रशिक्षण हासिल कर महिलाएं उस क्षेत्र में अपना व्यवसाय स्थापित कर आगे बढ़ रही हैं। अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए बताया कि महाविद्यालय के अंतिम वर्ष की छात्राओं द्वारा रावे कार्यक्रम के तहत पौष्टिक व्यंजन एवं हस्तशिल्प की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनमें महिलाओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। महिलाओं को मासिक धर्म, स्वच्छता, सिलाई-कढ़ाई, मशरूम की खेती, पोषण, वस्त्र विज्ञान, घरेलू कार्यों सहित विभिन्न विषयों के बारे जानकारी दी गई। समापन अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम के दौरान प्रदर्शनी भी लगाई गई। कृषि कार्य अनुभव कार्यक्रम के दौरान उपरोक्त महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ. वंदना वर्मा, डॉ. कविता दुआ, डॉ. इला रानी, डॉ. प्रोमिला चहल, डॉ. नेहा, डॉ. रजनी, डॉ. अन्नु, डॉ. रीना, डॉ. शालिनी रूखाया व राजकीय कन्या उच्च विद्यालय के प्राचार्य रामदास शास्त्री, गांव सरसौद की सरपंच सुनीता व समाजसेवी प्रदीप भ्याण का महत्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम में डॉ. सरोज यादव ने सभी गणमान्य नागरिकों का धन्यवाद किया।

गुजवि में 10 मार्च को होगा छठा दीक्षांत समारोह

-भारत की राष्ट्रपति माननीय द्रौपदी मुर्मू होंगी मुख्यातिथि

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
हिसार, 21 फरवरी। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार में छठा दीक्षांत समारोह 10 मार्च को होगा। विश्वविद्यालय ही नहीं समूचे प्रदेश के लिए गौरव की बात है कि भारत की राष्ट्रपति माननीय द्रौपदी मुर्मू इस दीक्षांत समारोह की मुख्यातिथि होंगी।

हरियाणा के राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय बंडारू दत्तात्रेय व हरियाणा के मुख्यमंत्री माननीय डा. नायब सिंह सैनी सहित प्रदेश के वरिष्ठ मंत्रीगण भी इस अवसर पर उपस्थित रहेंगे। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि राष्ट्रपति कार्यालय से इस संबंध में स्वीकृति

प्राप्त हो चुकी है। विश्वविद्यालय माननीय राष्ट्रपति के आगमन को लेकर उत्साहित है। दीक्षांत समारोह किसी भी विश्वविद्यालय के लिए सबसे महत्वपूर्ण व गौरवपूर्ण आयोजन होता है। देश के सर्वोच्च नागरिक से उपाधि प्रात होना विद्यार्थियों व शोधार्थियों के लिए भी गौरव व गर्व की अनुभूति होगी।

दीक्षांत समारोह की तैयारियां आरंभ कर दी गई हैं। उच्च अधिकारियों की बैठक की जा चुकी है तथा संबंधित कार्यों के लिए कमेटियां बना दी गई हैं। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि दीक्षांत समारोह का आयोजन विश्वविद्यालय के चौधरी रणबीर सिंह सभागार के मुख्य हॉल में होगा। दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय द्वारा पीएचडी, पोस्ट ग्रेजुएट व अंडर ग्रेजुएट की डिग्रियों के अतिरिक्त मेडल भी प्रदान किए जाएंगे। दीक्षांत समारोह का ओवरऑल संयोजन परीक्षा नियंत्रक कार्यालय द्वारा किया जाएगा।

परीक्षा नियंत्रक प्रो. यशपाल सिंगला ने बताया कि दीक्षांत समारोह में 09 मार्च 2018 से 31 दिसम्बर 2024 तक अवार्ड की गई 561 पीएचडी की डिग्रियां संबंधित शोधार्थियों को प्रदान की जाएंगी। यूटीडी तथा पुराने इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट महाविद्यालयों के 326 विद्यार्थियों को मेडल्स प्रदान किए जाएंगे, जबकि 2017 से 2023 तक के पासआउट सम्बद्ध डिग्री, लॉ व शिक्षा कॉलेजों के 149 विद्यार्थियों को यूनिवर्सिटी मेडल्स प्रदान किए जाएंगे। दूरस्थ शिक्षा माध्यम से 2018 से 2023 के बीच पासआउट 89 विद्यार्थियों को दूरस्थ शिक्षा कोर्स मेडल प्रदान किए जाएंगे। यूटीडी के केवल मई 2024 पासआउट 1529 विद्यार्थियों को डिग्री प्रदान की जाएगी।

सड़क तो बना दी, बरम बनाने मे आना-कानी कर रहा विभाग

शिकायत के बाद भी नही हुई कार्रवाई : सुभाष

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 21 फरवरी। ढांड रोड़ से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र व गांव बारना को जोड़ने वाली सड़क पीडब्ल्यूडी विभाग द्वारा बना दी गई है, लेकिन ग्रामीणों का आरोप है कि सड़क के दोनो तरफ तीन-तीन फुट बरम ठेकेदार द्वारा नही बनाई जा रही है, जिससे सड़क के दोनों किनारे क्षतिग्रस्त होने का अंदेशा बना हुआ है।

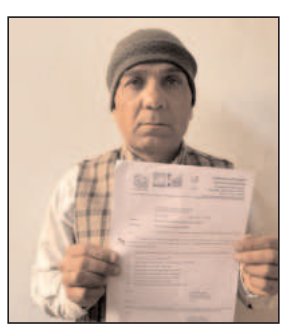

ग्राम पंचायत बारना के पंच सुभाष चंद ने कहा कि इसको लेकर समाधान शिविर में कई बार शिकायत दर्ज करवाई जा चुकी है, लेकिन अधिकारियों द्वारा इस ओर कोई ध्यान नही दिया जा रहा। जिससे सड़क के दोनो तरफ खेत गहरे होने के कारण सड़क गिरने का खतरा बना रहता है। उन्होंने कहा कि समाधान शिविर के माध्यम से वे कई बार यह शिकायत दर्ज करवा चुके हैं, लेकिन हर बार टरका दिया जाता है। उन्होने कहा कि यह सड़क लगभग एक करोड़ 26 लाख रुपए खर्च कर बनाई गई है। उन्होंने कहा कि इस बारे में वे सीएम विंडो पर भी शिकायत दर्ज करवा चुके हैं। उन्होने मांग करते हुए कहा कि सड़क के दोनों तरफ बरम बनाई जाए, ताकि सड़क ढहने से बच सके।

वैदिक मंत्रोच्चार व पूजन के साथ श्री खाटू श्याम मंदिर के निर्माण कार्य का शुभारंभ

प्रमुख समाजसेवी प्रवीण गर्ग की माता सुमनलता गर्ग ने रखी पहली ईंट

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर
रतिया, 21 फरवरी। श्री खाटू श्याम मंदिर ट्रस्ट द्वारा समस्त संत व ब्राह्मण समाज के आशीर्वाद से श्री गौशाला एक्सचेंज रोड स्थित प्रस्तावित श्री श्याम मंदिर पावन स्थल पर शुक्रवार को श्री श्याम मंदिर शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य यजमान प्रमुख समाजसेवी प्रवीण गर्ग,रतिया सेवा समिति धर्मशाला सालासर के प्रधान हरिकेश मंगला,अग्रवाल सभा के प्रधान प्रमोद बांसल,पंजाबी सभा के प्रधान सतीश हांडा,अशोका पट्रोलियम के मालिक विपिन बांसल व गर्ग पट्रोलियम के मालिक वरुण गर्ग ने संयुक्त रूप से सभी पुजारियों के सानिध्य में सुबह 9:15 बजे के

शुभ मुहूर्त में पूजा अर्चना व बाबा श्याम के जयकारों की गूंज के साथ भूमि पूजन कर श्री श्याम मंदिर निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। श्री श्याम मंदिर निर्माण का शुभारंभ होने पर काफी दिनों से उक्त प्रस्तावित पावन स्थल पर श्री श्याम मंदिर निर्माण की बाट जोह रहे श्याम प्रेमियों में काफी उमंग एवं उत्साह देखा गया।

सर्वप्रथम रतिया व आसपास की जगहों से आए हुए हजारों की संख्या में श्याम प्रेमियों ने एक दूसरे को गले लगाकर व नाच गा कर शिलान्यास समारोह की बधाई दी। भूमि पूजन के दौरान वैदिक मंत्रोच्चार से आसपास का क्षेत्र भक्तिमय हो उठा। ट्रस्ट के प्रधान राज कुमार सिंगला(राजू करण्डी) ने कहा कि रतिया में खाटू श्याम जी का मंदिर नहीं था। अब इस पावन स्थल पर सभी के जन सहयोग से जल्द ही बाबा श्याम का भव्य मंदिर बनकर तैयार होगा। अंत में ट्रस्ट प्रधान राजकुमार सिंगला ने उपस्थित श्याम प्रेमियों का अपने-अपने क्षेत्र में अतुलनीय सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हुए स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया और आगे भी पहले से ज्यादा सहयोग की उम्मीद जताई। उन्होंने शाम को होने वाले भव्य जागरण में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचने का निमंत्रण दिया।इस अवसर पर श्री लखदातार श्याम प्रचार सोसायटी,श्री श्याम युवा मित्र मंडल, सभी महिला मंडल व सभी धार्मिक व धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि व सदस्य मौजूद थे।

जरूरतमंद परिवारों के बच्चों को दी स्वच्छता से संबंधित दी जानकारी

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 21 फरवरी। सेवा ट्रस्ट यूके भारत द्वारा कुरुक्षेत्र के सेक्टर 2 में सुन्दरपुर, देवीदासपुरा, रतगल व आसपास झुग्गी झोपडी में रहने वाले जरूरतमंद बच्चों को स्वच्छता से संबंधित सामान वितरित किया गया। कार्यक्रम में सेवा ट्रस्ट यूके भारत के जिला कोआर्डिनेटर पवन मित्तल ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रमुख समाजसेवी अमित कालडा ने की। पवन मित्तल द्वारा वहां उपस्थित सभी बच्चो को स्वस्थ रहने के टिप्स दिए। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर मे ही भगवान का वास होता है, इसलिए हम सभी स्वच्छता को अपना कर खुद भी स्वस्थ रह सकते है और समाज को भी स्वस्थ रख सकते है हमे हर रोज

स्नान करना चाहिए, हर रोज सुबह दांत साफ करने चाहिए, अपने आसपास सफाई रखनी चाहिए। इस अवसर पर करीब 100 जरूरतमंद बच्चों अपनी को स्पॉन्सर डाबर के सहयोग से स्वच्छता से सम्बन्धित उनकी जरूरत का सामान जैसे नहाने की साबुन, टूथपेस्ट, नारियल पानी वितरित किए गए। समाजसेवी मास्टर अमित कालडा ने कहा कि जरूरतमंदों की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म का कार्य है। इस अवसर पर कला रागिनी ट्रस्ट से रजनी मधाडिया ने कहा कि इन बच्चों के साथ खुशियां बांटने में सेवा ट्रस्ट संस्था हमेशा आगे रहती है स्वच्छता से सम्बन्धित आज जो समान इन बच्चो को उपलब्ध करवाया है उसके लिए सभी बच्चो की तरफ से सेवा ट्रस्ट का धन्यवाद करती हूं। बच्चों ने भाषण, रंगोली, व सुंदर चित्र बनाकर इस कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। सेवा ट्रस्ट के जिला मीडिया प्रभारी विजय पंघाल व सिटी प्रधान योगेश शर्मा ने कहा कि भविष्य में भी सेवा ट्रस्ट इसी प्रकार इन जरूरतमंद बच्चों की सहायता करती रहेगी और हर समय एन बच्चों की सहायता के लिए तैयार है वह स्वच्छता से सम्बन्धित समान उपलब्ध करवाती रहेगी। इस मौके पर पूर्व प्रधानाचार्य नरेश मित्तल, तेजस मित्तल व सभी बच्चे मौजूद रहे।

प्रभु श्रीकृष्ण जग पालक व सृष्टि के नियामक तत्व : सौम्या भारती

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 21 फरवरी। दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान द्वारा प्रोफेसर कॉलोनी नरकातारी रोड़, थानेसर में सात दिवसीय श्रीकृष्ण कथा का भव्य आयोजन किया गया। तृतीय दिवस के अंतर्गत दिव्य गुरु श्रीआशुतोष

महाराज की शिष्या भारत विख्यात भागवत भास्कर साध्वी सुश्री सौम्या भारती ने समस्त धार्मिक ग्रन्थों के समन्वय से युक्त इस भव्य आयोजन में प्रभु के जन्म एवं उनके जीवन की लीलाओं के भीतर छिपे हुए आध्यात्मिक रहस्यों को उजागर किया। जो केवल मात्र प्रभु की जीवन गाथा का वर्णन नहीं, अपितु एक विश्लेषणात्मक आध्यात्मिक अंतर दृष्टि से परिपूर्ण प्रभु के अवतरण व प्राकट्य के दिव्य रहस्यों को परिलक्षित करता प्रसंग है। सौम्या भारती ने बताया कि प्रभु का अवतरण धर्म संस्थापना के जिस संदेश को धारण किए हुए हैं, वह हर युग, काल व देश की सीमाओं से परे हैं व वर्तमान युग की समस्त समस्याओं का निवारण प्रस्तुत करता है। संसार में नाना प्रकार के रोग, शोक, जन्म, मृत्यु इत्यादि में पड़े काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार में अन्धे हो चुके मानव को सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रभु अवतीर्ण होते हैं। उपद्रव को शान्त करने हेतु नित्यधाम से अनुरूप हो कार्य को सम्पादित करने हेतु जन्म लेते हैं। उन्होंने प्रभु के अवतरण के संबंध में बताते हुए कहा कि प्रभु श्री कृष्ण जग पालक व सृष्टि के नियामक तत्व हैं, जो साकार रुप धारण कर अवतरित होते हैं। उन्होनें बताया कि माता देवकी जी ने अपने घट में जिस प्रकार प्रभु के चतुर्भुज रूप में दर्शन किए। ठीक इसी प्रकार हम भी अपने भीतर ऐसा अनुभव पूर्ण सतगुरु की कृपा से कर सकते हैं।

बुनियाद लेवल–3 की परीक्षा के लिए 283 विद्यार्थी चयनित

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 21 फरवरी। मिशन बुनियाद के अंतर्गत बुनियाद लेवल–3 की परीक्षा के लिए 283 विद्यार्थियों को चयनित किया है। जानकारी के अनुसार कुरुक्षेत्र जिला से बुनियाद लेवल–2 की परीक्षा में 1031 विद्यार्थियों ने भाग लिया था, जिसमें से 283 विद्यार्थियों को बुनियाद लेवल–3 की परीक्षा एवं ओरिएंटेशन कार्यक्रम के लिए चयनित किया है। बुनियाद लेवल–2 की परीक्षा में राजकीय माध्यमिक विद्यालय समसीपुर के छात्र पूर्व ने 151 अंक प्राप्त कर कुरुक्षेत्र में प्रथम स्थान प्राप्त किया। राजकीय माध्यमिक विद्यालय झिंझरपुर की छात्रा स्नेहा ने 89 अंक प्राप्त कर कुरुक्षेत्र में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। राजकीय माध्यमिक विद्यालय जलालुदीन माजरा की छात्रा नवजोत कौर ने 80 अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। जिला कुरुक्षेत्र में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ज्योतिसर के सर्वाधिक 9 विद्यार्थियों का चयन बुनियाद लेवल 3 की परीक्षा के लिए हुआ है। राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय प्रतापगढ़, राजकीय माध्यमिक विद्यालय आलमपुर तथा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भटेरी के 6–6 विद्यार्थियों का चयन बुनियाद लेवल 3 परीक्षा के लिए हुआ तथा इन विद्यालयों ने कुरुक्षेत्र जिला में संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान प्राप्त किया। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मिजार्पुर, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय थानेसर तथा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ढोल के 5–5 विद्यार्थियों का चयन बुनियाद लेवल 3 परीक्षा के लिए हुआ तथा इन विद्यालयों ने कुरुक्षेत्र जिला में संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। जिला शिक्षा अधिकारी संतोष शर्मा ने इसकी पुष्टि करते हुए सभी चयनित विद्यार्थियों को बुनियाद लेवल 3 की परीक्षा के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए कहा कि मिशन बुनियाद शिक्षा विभाग की महत्वाकांक्षी योजना है जिसके अंतर्गत राजकीय विद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों को कक्षा 9वीं से ही आईआईटी, नीट, एनडीए इत्यादि परीक्षाओं की तैयारी निशुल्क करवाई जाती है।

हृदय में प्रेम भाव की है मुख्य भूमिका : सिद्धार्थ औलिया

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 21 फरवरी। समर्थगुरु मैत्री संघ हिमाचल प्रदेश के स्टेट कोआर्डिनेटर आचार्य कुंजबिहारी ने जानकारी देते हुए बताया कि 17–19 फरवरी सुरति योग और हंस प्रज्ञा कार्यक्रम आयोजित हुआ। 20–22 फरवरी निरति योग और मैत्री प्रज्ञा कार्यक्रम हुआ। 17 से 22 फरवरी, समर्थगुरू जी के सान्निध्य में माधोपुर महोत्सव में होने वाले कार्यक्रम में हिमाचल साधकों के साथ और भारत के विभिन्न राज्यों के 120 से ज्यादा साधकों ने परिवार और मित्रों सहित उत्साह पूर्वक भाग लिया। उत्सव उपनिषद् के सूत्रों को अपने जीवन में अपनाया। समर्थगुरू धाम के संस्थापक समर्थगुरु सिद्धार्थ औलिया द्वारा उत्सव उपनिषद की रचना विश्व कल्याण हेतु हुई। संसार में दु:ख है। दुख से मुक्त होकर सुखी हुआ जा सकता है फिर उत्सव में हम सभी रह सकते है। हृदय में प्रेम भाव की मुख्य भूमिका है। बिना किसी कामना के दूसरे को देने का भाव प्रेम है। परमात्मा प्रेम है और प्रेम ही परमात्मा है। समर्थगुरू संघ हिमाचल के जोनल कोआर्डिनेटर आचार्य डॉ.सुरेश मिश्रा ने बताया कि परमात्मा की कृपा से ही सच्चे और प्यासे साधक के जीवन में ही पूर्ण सदगुरू आते है और साधना करवाते है। साधना में साधक को अनुभव होता है। सद्गुरु और भगवान से निरन्तर प्रेम बढ़ता है।

विद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 21 फरवरी। गीता निकेतन विद्या मंदिर सेक्टर 3 विद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों ने विभिन्न गतिविधियों की। मुख्य रूप से अपनी मातृभाषा में निबंध लेखन। मातृभाषा के महत्व को लेकर चर्चा। मातृभाषा का सम्मान करने और अपने दिनचर्या में शामिल करने का संकल्प लेना रहा। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भाषाई विविधता को संरक्षित करना और बढ़ावा देना। छात्रों को अपनी मातृभाषा को अपनाने एवं उसे पर गर्व करने के लिए प्रोत्साहित करना रहा। विद्यालय प्रधानाचार्य सुमित कुमार ने कहा कि मातृभाषा हमारी संस्कृति और पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हमें अपने मातृभाषा को सुरक्षित रखना चाहिए।

बाल गीत :

बच्चों को जब गुस्सा आया

जाड़ा आया, जाड़ा आया
शीतल पवन साथ में लाया।
गद्दा उठा अभी बिस्तर से,
फिर रजाई से हाथ मिलाया।
चाय पिलाई अदरक वाली,
केसर वाला दूध पिलाया।
छुपा रखा था पेटी भीतर,
निकला स्वेटर बाहर आया।
धोकर और सुखाकर मां ने,
छुन्नू-मुन्नू को पहनाया।
शीत लहर जब चली भयानक,
पापा ने हीटर जलवाया।
सी-सी करते दादाजी ने,
दादी से टोपा मंगवाया।
इस पर घर के सब बच्चों को,
बड़ों-बड़ों पर गुस्सा आया।
डांट-डांट कर सभी बड़ों को,
बिस्तर के भीतर घुसवाया।

-प्रभुदयाल श्रीवास्तव

युवाओं के करियर में पेरेंट्स की भूमिका

आज के युवा अपने निर्णय खुद लेने में विश्वास करते हैं। अक्सर वे अपने निर्णयों में माता-पिता को शामिल नहीं करते। घूमने के लिए बाहर जाने से लेकर बात चाहे करियर की क्यों न हो।

अक्सर यह देखा जाता है कि किसी छात्र ने अगर 10वीं पास की है। उसे 11वीं में किसी विषय का चयन करना है। वह अपने माता-पिता या बड़े भाई या बहन से सलाह लेना उचित नहीं समझता, बल्कि वह बाहरी माहौल से प्रभावित होकर अपने निर्णय खुद ही लेता है।

अगर किसी विषय में उसकी रुचि हो भी जिसमें वह करियर बनाना चाहता हो तो उस विषय में क्या करियर संभावनाएं हैं, इसकी तलाश उसे करनी चाहिए। साथ ही अपने माता-पिता या बड़े भाई-बहन से भी उस पर सलाह लेना जरूरी है। सलाह में फायदे हैं, इसलिए बाद में अपने निर्णय पर पछताना से अच्छा है कि पहले ही अपने घर के वरिष्ठ लोगों से सलाह-मशविरा कर लें।

कॉम्पिटिशन से युवाओं पर भी अपेक्षाओं का बोझ बढ़ा है। बात करियर बनाने की क्यों न हो। आज भले ही संचार माध्यमों में वृद्धि हो गई। इंटरनेट से कोई भी जानकारी का आसानी से जुटाई जा सकती है। युवाओं को यह नहीं भूलना चाहिए कि अनुभव सबसे बड़ी चीज है। अनुभव कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है।

माता-पिता या परिजनों से ही हमें जीवन के सही मायने समझ में आएंगे। वे जो भी रास्ता दिखाएंगे वह सही होगा। कभी-कभी माता-पिता की अपेक्षाएं भी बच्चों से बढ़ जाती हैं। इन अपेक्षाओं के बोझ तले युवा दब जाते हैं। इससे उनकी जिंदगी निराशा की ओर मुड़ जाती है।

माता-पिता या परिजन भी यह ध्यान रखें कि वे अपने निर्णय युवाओं पर थोप कर उन पर अनावश्यक दबाव न बनाएं। अपने बच्चों की रुचि पहचानकर ही उन्हें भविष्य के लिए कोई सलाह दें और सही करियर चुनने में उनका मार्गदर्शन करें। सही मार्गदर्शन, सही विषय को चुनने के बाद अगर युवा उस पर मेहनत और लगन से पढ़ाई करेंगे तो सफलता मिलेगी।

विक्की की ईमानदारी

विक्की अपने स्कूल में होने वाले स्वतंत्रता दिवस समारोह को ले कर बहुत उत्साहित था। वह भी परेड़ में हिस्सा ले रहा था।

दूसरे दिन वह एकदम सुबह जग गया लेकिन घर में अजीब सी शांति थी। वह दादी के कमरे में गया, लेकिन वह दिखाई नहीं पड़ी।

'माँ, दादीजी कहाँ हैं?' उसने पूछा।

'रात को वह बहुत बीमार हो गई थीं। तुम्हारे पिताजी उन्हें अस्पताल ले गए थे, वह अभी वहीं हैं उनकी हालत काफी खराब है।'

विक्की एकाएक उदास हो गया। उसकी माँ ने पूछा, 'क्या तुम मेरे साथ दादी जी को देखने चलोगे? चार बजे मैं अस्पताल जा रही हूँ।'

विक्की अपनी दादी को बहुत प्यार करता था। उसने तुरंत कहा, 'हाँ, मैं आप के साथ चलूँगा।'

वह स्कूल और स्वतंत्रता दिवस के समारोह के बारे में सब कुछ भूल गया। स्कूल में स्वतंत्रता दिवस समारोह बहुत अच्छी तरह संपन्न हो गया। लेकिन प्राचार्य खुश नहीं थे। उन्होंने ध्यान दिया कि बहुत से छात्र आज अनुपस्थित हैं।

उन्होंने दूसरे दिन सभी अध्यापकों को बुलाया और कहा, 'मुझे उन विद्यार्थियों के नामों की सूची चाहिए जो समारोह के दिन अनुपस्थित थे।' आधे घंटे के अंदर सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों की सूची उन की मेज पर थी। कक्षा छे की सूची बहुत लंबी थी। अतः वह पहले उसी तरफ मुड़े।

जैसे ही उन्होंने कक्षा छे में कदम रखे, वहाँ चुप्पी सी छा गई। उन्होंने कठोरतापूर्वक कहा, 'मैंने परसों क्या कहा था?'

'यही कि हम सब को स्वतंत्रता दिवस समारोह में उपस्थित होना चाहिए,' गोलमटोल उषा ने जवाब दिया। 'तब बहुत सारे बच्चे अनुपस्थित क्यों थे?' उन्होंने नामों की सूची हवा में हिलाते हुए पूछा।

फिर उन्होंने अनुपस्थित हुए विद्यार्थियों के नाम पुकारे, उन्हें डाँटा और अपने डंडे से उनकी हथेलियों पर मार लगाई।

'अगर तुम लोग राष्ट्रीय समारोह के प्रति इतने लापरवाह हो तो इसका मतलब यही है कि तुम लोगों को अपनी मातृभूमि से प्यार नहीं है। अगली बार अगर ऐसा हुआ तो मैं तुम सबके नाम स्कूल के रजिस्टर से काट दूँगा।' इतना कह कर वह जाने के लिए मुड़े तभी विक्की आ कर उन के सामने खड़ा हो गया।

'क्या बात है?'

'महोदय, विक्की भयभीत पर दृढ़ था, मैं भी स्वतंत्रता दिवस समारोह में अनुपस्थित था, पर आप ने मेरा नाम नहीं पुकारा।' कहते हुए विक्की ने अपनी हथेलियाँ प्राचार्य महोदय के सामने फैला दी। सारी कक्षा साँस रोक कर उसे देख रही थी।

प्राचार्य कई क्षणों तक उसे देखते रहे। उनका कठोर चेहरा नर्म हो गया और उन के स्वर में क्रोध गायब हो गया।

'तुम सजा के हकदार नहीं हो, क्योंकि तुम में सच्चाई कहने की हिम्मत है। मैं तुम से कारण नहीं पूछूँगा, लेकिन तुम्हें वचन देना होगा कि अगली बार राष्ट्रीय समारोह को नहीं भूलोगे। अब तुम अपनी सीट पर जाओ।'

विक्की ने जो कुछ किया, इसकी उसे बहुत खुशी थी।

इन पांच तरीकों से होगा बच्चों का दिमाग तेज

केवल परीक्षा के समय ही नहीं बल्कि दिमाग का हर समय सक्रिय होना जरूरी है। इसके लिए आप खानपान से लेकर अन्य कई तरीके भी आजमाते हैं ताकि बच्चों का दिमाग तेज हो और वे हर परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करें। जानिए 5 आसान और प्रभावकारी तरीके, जो दिमाग तेज करने में मदद करते हैं –

1 दिमागी कसरत

दिमाग तेज करने का सबसे प्रभावकारी तरीका है, दिमागी कसरत। इसके लिए आप बच्चों के साथ कोई दिमागी खेल जैसे-प्रश्नोत्तरी, शब्दकोश भरना या सही विकल्प चुनो खेल सकते हैं। दोस्तों की मदद से इस तरह के खेल खेले जा सकते हैं। यह बच्चे की याददाश्त को बढ़ाने के साथ ही याद रखने की इच्छा भी बनाए रखेगा।

2 नई भाषा

बच्चों को कम उम्र में भी अन्य भाषाओं का ज्ञान होने से उनका दिमाग ऐसे बच्चों की तुलना में तेज चलता है, जो केवल एक ही भाषा जानते हैं। इस तरह से बच्चे में और भी योग्यताएं विकसित होती हैं।

3 खेलकूद

बच्चे खेलकूद में जितने फुर्तीले होते हैं, उनका दिमाग उतना ही तेज और सक्रिय होता है। इस तरह से बच्चों के दिमाग में ऑक्सीजन का प्रवाह भी सही होता है, जो उनके दिमाग के लिए बहुत अच्छा होता है।

4 कलात्मकता

बच्चों का कला के प्रति रूझान दिमाग को विकसित करता है और नई चीजों के सीखने में मदद करता है। इस प्रकार बच्चों की कल्पनाशीलता में भी वृद्धि होती है, और वे बहुआयामी सोच रखते हैं।

5 गणित

जी हां, बचपन से ही बच्चे को गणित का अच्छा अभ्यास होना उसके दिमाग को तेज करने में मदद करता है। यही कारण है कि जिन लोगों की गणित में अधिक रूची होती है, वे अन्य लोगों की तुलना में ज्यादा बुद्धिमान होते हैं।

ई-बुक नहीं बुक पढ़ें

आधुनिक तकनीक ने जहां एक ओर हमारे जीवन को आसान बना दिया है, वहीं दूसरी ओर इसकी वजह से कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं भी पैदा हो रही हैं। रात में आईपैड, लैपटॉप या ई-रीडर पर किताबें पढने से नींद की गुणवत्ता कम हो जाती है। इससे सोने के लिए तैयार होने में लगने वाले वक्त और नींद के कुल समय पर नकारात्मक असर पडता है। हाल ही में अमेरिका में हुए इस शोध की प्रमुख एक यूनिवर्सिटी में असिस्टेंट प्रोफेसर एना मारिया का कहना है कि इस शोध के लिए कुछ लोगों पर कई हफ्ते तक नजर रखी गई। इसमें से आधे लोगों को रात में सोने से पहले ई-बुक और आधे लोगों को सामान्य किताब पढने के लिए कहा गया।

इसके बाद इन लोगों में नींद वाले हॉर्मोन मेलाटोनिन के स्तर, नींद की गहराई और अगली सुबह उनकी सजगता के स्तर की जांच की गई। शोध में पाया गया कि जो लोग रोज ई-बुक पढ़ते हैं, वे कई घंटे कम सोते हैं और उनमें रैपिड आई मूवमेंट स्लीप का समय भी कम हो जाता है। गौरतलब है कि नींद की इसी अवस्था में यादें संरक्षित होती हैं। इसलिए ज्यादा समय तक ई-बुक पढने से स्मरणशक्ति कमजोर होती है और डिमेंशिया का भी खतरा बढ़ जाता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर आप पढने की शौकीन हैं तो ई-बुक के बजाय किताबों के साथ वक्त बिताएं। अगर किसी वजह से ई-बुक पढना जरूरी हो तो भी रात में सोने से पहले ई-बुक पढने से बचें।

बच्चों की परवरिश में ध्यान रखनी चाहिए ये बातें

बेटे-बेटी के लालन-पालन में भेद नहीं होना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार तो यह पाप है। इस संसार की जो पहली पांच संतानें हुई थीं, उनमें से तीन बेटियां थीं। मनु-शतरूपा हिंदू संस्कृति के अनुसार मनुष्यों के पहले माता-पिता थे और उनसे जो मैथुनि सृष्टि निर्मित हुई उसमें दो पुत्र- उत्तानपाद और प्रियव्रत तथा तीन बेटियां -आकुति, देवहुति और प्रसूति ने जन्म लिया था। समझदार माता-पिता अब दोनों को एक जैसा पाल रहे हैं, लेकिन इसी के साथ एक जागरूकता और आनी चाहिए। लालन-पालन में भेद न करें, लेकिन दोनों के सामने जो भविष्य में चुनौतियां आने वाली हैं, उस फर्क को उन्हें जरूर समझाएं। बेटियों को एक दिन बहू बनना है, जो सबसे बड़ी चुनौती है।

इस समय की पढ़ी-लिखी बच्चियां अपने वैवाहिक जीवन के बाद के भविष्य को लेकर थोड़ी चिंतित तो हैं पर फिर भी एक बेफिक्री है कि संबंध नहीं जमा तो तोड़ लेंगे। किंतु उनके मां-बाप के लिए तो यह जीवन-मरण का प्रश्न है, इसलिए बच्चों के लालन-पालन में बेटे-बेटी को यह एहसास जरूर कराया जाए कि स्त्री के लिए क्या मायने हैं ससुराल के। पहला तो बदलाव, दूसरा अपेक्षा और तीसरा अपने ससुराल में आत्मनिर्भर होकर बिना कलह के मार्ग ढूंढ़ना। ये तीन बड़ी चुनौतियां स्त्री के सामने आती हैं। स्त्री जब बहू बनती है तो उसे नए घर में दो बातें नहीं भूलनी चाहिए। योजनाबद्ध तरीके से विनम्रता के साथ सबको जीता जाए। पेट की भूख सही ढंग से यदि मिटा दी जाए, तो दिल जीता जा सकता है, इसलिए अन्न पर माता-बहनों का नियंत्रण किसी भी घर में समाप्त नहीं होना चाहिए। जिस घर में माता-बहनों के हाथ से अन्न का नियंत्रण निकलेगा, उस घर में शांति संदेहास्पद हो जाएगी। इस चुनौती को इसी तरह से समझाया जाए।

बच्चों की परीक्षा के समय ध्यान रखें ये बातें

कई बार परीक्षा में पेपर देखते ही हम ब्लैंक हो जाते थे। कई शोधों में ये बात सामने आई है कि इसकी वजह अत्यधिक तनाव बढ़ता है। अक्सर टीनएजर्स इस तनाव से गुजरते हैं। वे इसे अपने दोस्तों, माता-पिता और शिक्षकों के सामने मान-प्रतिष्ठा से जोड़कर देखते हैं। परीक्षा के समय में बच्चों से जुड़ी इन बातों का ध्यान रखना चाहिए...

1. व्यवस्थित बनाएं

उसकी जरूरत की चीजों को उसके पास रखें। सारी चीजें का ढेर न लगा दें। अगर बच्चें की अंग्रेजी की परीक्षा है तो ध्यान रहे उस वक्त व गणित की किताबें न पलटें। टाइमटेबल बनाने में उसकी मदद करें। मैक्स हेल्थकेयर गुड़गांव की क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट एनी सिमि जॉन कहती हैं उसे एक बार में एक ही काम करने को कहें।

2. ब्रेक लेने के लिए कहें

शोध बताते हैं कि ज्यादा वक्त तक बैठना उपयोगी नहीं होता। लगातार 50 से 90 मिनट तक बैठना सही माना जाता है। अपने बच्चे को हर चार घंटे बाद करीब 15 मिनट का ब्रेक लेने को कहें। यह दिमाग को सूचनाएं याद रखने में मदद करता है। उसे बाहर वॉक करने के लिए कहें। ऑक्सीजन रक्त संचार को बढ़ाता है। फिजिकल एक्टिविटी भी तनाव कम करती है।

3. पावर फूड दें

पढ़ाई के दौरान दिमाग सारे ग्लुकोज का उपभोग कर लेता है। कोलकाता की न्युट्रिशनिस्ट हीना नफीस कहती हैं बच्चे को पढ़ाई के दौरान शरीर को फिर से फ्यूल देना पढ़ता है। उसे ओमेगा थ्री और मेग्नीशियम और आयरन की ज्यादा मात्रा वाला भोजन दें। उसे नट्स, किडनी बीन्स और ताजे फल खाने को दें।

4. समय पर सोने को कहें

जर्मनी में यूनिवर्सिटी ऑफ ल्युबैक की एक रिसर्च के मुताबिक दिमाग नींद के दौरान नई चीजों को स्टोर करता है। इसके लिए 8 घंटे की नींद जरूरी है।

सम्पादक, स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक नेहा वालिया द्वारा साईं प्रिंटिंग प्रैस, बी-868, न्यू अशोक नगर, दिल्ली-110096 से मुद्रित एवं वालिया सदन वार्ड संख्या 10, लोहारू, भिवानी (हरियाणा) 127201 से प्रकाशित। समाचार पत्र में प्रकाशित सभी समाचारों के लिए पीआरबी एट के तहत उत्तरदायी। फोन:01252-259260, 9255149495,
ईमेलः haryanavatika@gmail.com हरियाणा वाटिकाः- प्रेरणास्त्रोत- स्व. डॉ. एल सी वालिया, समूह संपादक एवं संरक्षक- श्रीमति सरला वालिया, संपादक- श्रीमति नेहा वालिया, कार्यकारी संपादक- श्रीमति रितू वालिया। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लोहारू (भिवानी) होगा।